किस्सा कहानी

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स के समर्थक संस्थाओं के युवा कार्यकर्ताओं द्वारा बनाया कहानियों का टूलकिट

GIRLS NOT BRIDES
The Global Partnership to End Child Marriage

PROJECT KHEL
WE SPEAK PLAY!

इस टूलकिट का स्वतंत्र रूप से उपयोग, उद्धृत, पुनरुत्पादन, या अनुवाद, भागों में या पूर्ण रूप से किया जा सकता है, बशर्ते स्रोत को विधिवत स्वीकार किया गया हो। कॉपीराइट धारक से पूर्व लिखित मंजूरी के बिना दस्तावेज़ को व्यावसायिक उद्देश्यों के साथ बेचा या उपयोग नहीं किया जाना है।

श्रेय और संदर्भ: गर्ल्स नॉट ब्राइड्स - बाल विवाह समाप्त करने के लिए वैश्विक भागीदारी और प्रोजेक्ट खेल।

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स और प्रोजेक्ट खेल के लिए सर्वाधिकार सुरक्षित।

२०२२ में पहली बार प्रकाशित हुआ।

टूलकिट के बारे में

किस्सा कहानी कहानियों के माध्यम से उन अंतर्निहित अवधारणाओं और संरचनाओं को समझने की कोशिश करता है जो बाल विवाह की ओर ले जाती हैं और साथ ही उन सामाजिक धारणाओं और लोकप्रिय प्रभावों को भी नष्ट करने का प्रयास करती है जो हमारे समाज में सभी लिंगों के व्यक्तियों को प्रभावित करने में सक्षम है। पाठ्यक्रम को मूल रूप से अगस्त २०२० में जीएनबी और यूनिसेफ राज्य कार्यालय राजस्थान के साथ डिजाइन किया गया था और फिर झारखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल तीन और पुनरावृत्तियों से गुजर के इस अंतिम संस्करण तक पहुंचा।

कार्यशाला के परिणाम के रूप में, राजस्थान, झारखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के १००+ युवा कार्यकर्ताओं को अपने किशोरों और युवा समूहों में अधिक आकर्षक तरीके से और सार्थक बातचीत करने के लिए कहानियों को बनाने और उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। कार्यशालाओं के दौरान, सभी प्रतिभागियों को अपने स्थानीय संदर्भों में उनके काम पर आधारित एक कहानी बनानी और जमा करनी थी। इन्हीं कहानियों में से, हमने इस टूलकिट में प्रदर्शित करने के लिए ३५ कहानियों का चयन किया।

हर कहानी एक युवा कार्यकर्ता द्वारा लिखी गई है और फिर इस परियोजना की मास्टर ट्रेनर, अंगना प्रसाद द्वारा संपादित की गई है, जो उत्तर प्रदेश में लगभग एक दशक से कहानियों को बदलाव लाने के साधन के रूप में रचनात्मक रूप से उपयोग कर रही हैं।

टूलकिट का इस्तेमाल कैसे करें

- सभी कहानियों को उनके प्रतिभागियों के राज्यों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। हालांकि, आप टूलकिट से कुछ कहानियों को किसी विशेष राज्य से दूसरे के पूरक के रूप में पा सकते हैं। इसलिए, बेझिझक उस क्रम को चुनें जिसमें आप कहानियों का उपयोग करना चाहते हैं।
- प्रत्येक कहानी के अंत चिंतनशील प्रश्नों की एक श्रृंखला के साथ किया जाता है। कहानियों का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए, यह अनिवार्य है कि आप चर्चा करें। बेझिझक प्रश्नों की सूची को सुझावों के रूप में उपयोग करें और यदि आवश्यक हो तो अपने स्वयं के प्रश्नों को भी शामिल करें।
- ब्रैकेट में और बिना बोल्ड किये वाक्य फैसिलिटेटर के ध्यान में रखने के लिए हैं जिसे वे अपने समूहों में चर्चा के दौरान शामिल कर सकें।
- यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कुछ कहानियाँ प्रतिभागियों को कुछ गहरे व्यक्तिगत क्षणों में ले जा सकती हैं और उन्हें भावुक बना सकती हैं या दूसरों को सुनने और समझने को कठिन बना सकती हैं। इनमें से किसी से भी प्रभावी ढंग से निपटने के लिए, प्रत्येक सत्र में एक सुरक्षित स्थान बनाना महत्वपूर्ण है। सुरक्षित स्थान बनाने के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं:

१.सभी के नाम जानने का प्रयास करें और उन्हें इससे संबोधित करें।
२.पूछे गए प्रत्येक प्रश्न को स्वीकार करें। यदि आप उनका उत्तर दे सकते हैं, तो उनका उत्तर दें और यदि आप नहीं दे सकते हैं, तो समूह को बताएँ कि क्यों नहीं।
३.यदि कोई ऐसा प्रश्न पूछता है जिसका उत्तर आपके पास नहीं है, तो आप उसका उत्तर पता करने के बाद अगली बैठक में दे सकते हैं।
४.आपके प्रश्न सरल से जटिल तक होने चाहिए ताकि विभिन्न बौद्धिक क्षमता वाले प्रतिभागी आपके साथ जुड़ सकें।
५ .उन सभी की सराहना करें जो आपके प्रश्नों का उत्तर देते हैं या उत्तर देने का प्रयास करते हैं।
६.यदि कोई गलत उत्तर देता है, तो हँसने या उन्हें गलत कहने के बजाय, यह महत्वपूर्ण है कि आप उनके प्रयास को स्वीकार करें और चालाकी से उन्हें सही उत्तर के लिए निर्देशित करें।
७.उन व्यक्तियों को स्वीकार करें जो एक अवधारणा को समझ सकते हैं लेकिन समूह के साथ साझा नहीं करना चाहते हैं।

राजस्थान की कहानियाँ

१. भाई नंबर १ - सुश्री मनोज कँवर

२. जीवनसाथी - सुश्री जमना चौहान

३. काला और कला - सुश्री कविता धवलेशा

४. समाज की साइकिल - सुश्री कामिनी कुमारी

५. शिक्षा का धन - श्री हेमंत शर्मा

६. क्या करे माही? - सुश्री नीलम गाँधी

७. कौन बड़ा कौन छोटा? - सुश्री अनीता सेन

८. क्यों बनें आत्मनिर्भर? - श्री मुनव्वर अब्दुल्लाह

९. तू मेरा बेटा नहीं मेरी बेटी है - श्री दीपक कुमार शर्मा

भाई नंबर १

- सुश्री मनोज कँवर

आलू और मिर्ची दोनों बहन भाई थे। उनका पूरा परिवार उनसे बहुत प्रेम करता था। एक दिन मिर्ची दौड़ी-दौड़ी अपनी मम्मी के पास आई और बोली, “मम्मी मम्मी आपको पता है? मेरा सलेक्शन हॉकी की टीम में हुआ है।” मम्मी बोली, “अरे बेटा, ये तो बहुत खुशी की बात है!“ तभी दादा जी आए “अहम्म, कौन सी खुशी की बात हो रही है, ज़रा हमें भी बताए कोई।“

मिर्ची बोली, “दादाजी आपको पता है? मेरा सलेक्शन हॉकी की टीम में हुआ है।“ दादाजी ने कहा, “हाँ, ये तो फिर खुशी की बात है।“

“पर मुझे खेलने के लिए बाहर जाना होगा।“

“कहाँ बाहर? घर से बाहर तो तुम जाती ही हो।”

“इस टूर्नामेंट के लिए मुझे गाँव के बाहर जाना पड़ेगा। कहाँ जाना होगा ये अभी नहीं बताया गया है।“

“गाँव से बाहर? हमारे घर की लड़कियाँ गाँव के बाहर नहीं जाती हैं, और खेलने के लिए तो बिल्कुल नहीं।”

तब मिर्ची बोली, “जब भैया का सलेक्शन हुआ था तब आप सब परिवार वाले उन्हें बस स्टॉप तक छोड़ने उनके साथ गए थे, और जब मेरा सलेक्शन हुआ है तो आप ये क्यों कह रहे हैं?”

अपना आपा खोते हुए दादाजी बोले, “वो लड़का है, वो कुछ भी कर सकता है, वो अकेला जा सकता है, अकेला रह सकता है। तुम लड़की हो, हमारे घर के लड़कियाँ ऐसे बाहर नहीं घूमती हैं। कल को तुम्हें शादी कर के दूसरे घर जाना है, तुम्हारे ससुराल वाले जब तुम्हें देखने आएंगे तो कहेंगे कि हम उस घर में रिश्ता नहीं करेंगे जिस घर की लड़की में संस्कार ही नहीं हैं। जब देखो घूमती फिरती हैं। तो फिर तुम्हारे साथ कोई रिश्ता नहीं करेगा, हमारी समाज में नाक कट जाएगी। मैं तुम्हें बाहर नहीं जाने दूंगा खेलने के लिए।“

अब तक सारी बातों को सुनती, मिर्ची की माँ कहती हैं, “देखिए पिताजी, आज समाज बदल चुका है.. “

इस पर और गुस्सा होते हुए दादाजी बोलते हैं, “अरे, तुम्हें किसने कहा बीच में बोलने के लिए, तुम एक औरत हो, और तुम्हें समाज के बारे में क्या पता? तुम्हारा काम है रसोई संभालना, जाओ रसोई संभालो।“

मिर्ची की माँ अपमानित महसूस करते हुए वापस रसोई में चली गई। मिर्ची जानती थी कि वह सही है लेकिन वो यह भी जानती थी कि अगर उसने और कुछ भी कहा तो दादाजी का गुस्सा मम्मी पर ही निकलेगा इसलिए मिर्ची ने अपने गुस्से पर काबू किया और अपने कमरे में चली गई।

उसी समय, मिर्ची का भाई, आलू कमरे में जाता है और उसे रोते हुए देखता है और पूछता है, “अरे, तीखी मिर्ची, रोजाना तो इतना बड़बड़ करती रहती है, आज रो कैसे रही है? दूसरों को रुलाने वाली खुद कैसे रो रही है?”

उनकी माँ मिर्ची के लिए पानी का गिलास लेकर कमरे में जाती हैं और कहती हैं, “अरे, इसका सलेक्शन हॉकी की टीम में हुआ है।“

“और इस बात से इसे रोना आ रहा है? क्या ये खुशी मनाने वाली बात नहीं है?“

मिर्ची सुबह से हुई सारी बातें उसे बताती है और उसका भाई उसकी मदद करने का फैसला करता है।

वो दादाजी के पास जाता है, “प्रणाम दादाजी।“

दादाजी बोले, “अरे, अरे, आओ मेरे घर के चिराग, मेरे बेटे, मेरे वंश, कहाँ था तू? तुझे देख के तो मेरा दिल खुश हो जाता है।“
तभी आलू बोलता है, “दादाजी, आपने सुना हमारी मिर्ची का सलेक्शन हॉकी की टीम में हुआ है?“

“हाँ, हाँ, कह तो रही थी।“

“आपके पोता-पोती दोनों जिला-स्तर पर खेलेंगे, कितनी अच्छी बात है न?

“हम्म.. “

“हम्म? क्या आप नहीं चाहते की मिर्ची खेले?”

“अरे नहीं, मैंने कब मना किया है उसे खेलने से? खेले, घर में खेले, स्कूल में खेले, लेकिन वो तो बाहर जाना चाहती है। गाँव से बाहर, लोगों के बीच में। हमारे घर की लड़कियाँ नहीं जाती हैं खेलने के लिए बाहर। नहीं, मैं उसे बाहर खेलने के लिए नहीं जाने दे सकता।”

तभी आलू बोलता है, “दादाजी, हमारी मिर्ची ने कितनी लड़कियों को पीछे छोड़ के अपना सलेक्शन हॉकी की टीम में करवाया है, और आप हैं जो उसे खेलने देना नहीं चाहते।“

दादाजी बोलते, “रहने दे, रहने दे। मुझे समाज की समझ तुझसे ज्यादा है?”

आलू बोलता है, “दादाजी, मैं मानता हूँ की आपको समाज की समझ मुझसे ज्यादा है, लेकिन आप ही तो कहते हो कि निरंतर आगे बढ़ते रहो। हमारे कई पड़ोसी और रिश्तेदार अपनी बेटियों को खेलने से रोकते हैं लेकिन आपने खेलने दिया और आज जब मिर्ची को कुछ कर दिखाने का मौका मिला है तो आज आप ही उसे रोक रहे हैं। आप सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, पी. टी. उषा का उदाहरण देते हैं लेकिन सोचिए अगर उनके परिवार वालों ने उस समय उन्हें रोका होता तो क्या वो इस विख्यात उपलब्धि को प्राप्त कर पाती? वो भी लड़कियाँ हैं लेकिन आप ही बताइए, आज कौन सी ऐसी जगह है जहाँ वो नहीं जा सकतीं? क्या नहीं कर सकतीं? “

अपनी ही दी हुई सीख का इस्तेमाल अपने पोते द्वारा किया जाना दादाजी के लिए एक गर्व का लम्हा था लेकिन साथ ही उन्हें आईना दिखाते हुए शर्मसार करने वाला भी। दादाजी बोलते हैं, “हाँ, तुम कह तो सही रहे हो, परंतु बेटा वो एक लड़की है। कहीं कुछ ऊंच-नीच हो गयी तो हम समाज में क्या मुँह दिखाएंगे?“

भले ही आलू सिर्फ एक बालक था, उसे यह समझ आ गया था की दादा जी उससे प्यार करते थे और वह इसी पद का फ़ायदा उठा कर यह सुनिश्चित कर सकता है की उसकी बहन को अपने कमाए हुए अवसरों में मौका मिल सके। तभी आलू बोला, "अरे दादाजी, लड़कियाँ आज अंतरिक्ष पे जा रही हैं, और आप हैं जो उसे दूसरे शहर में नहीं भेजना चाहते, आज लड़कियों को भी शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर दिए जाए, तो वो अपनी मेहनत और लगन से क्या नहीं कर सकती? वो सब कुछ कर सकती हैं। और दादाजी अगर मिर्ची का बाहर जा के खेलना सही नहीं है तो मेरे लिए भी सही नहीं है, मैं भी हॉकी छोड़ दूंगा।" इसी तरह आलू ने अपने लाडले होने का पूरा फायदा उठाया अपने दादा जी से अपनी बात मनवाने के लिए।

दादाजी को पता था आलू को हॉकी खेलना बहुत पसंद है, और उन्हें अच्छा नहीं लगा की उनकी एक पाबंदी की वजह से आलू हॉकी खेलना बंद कर देगा।

दादाजी ने कहा, "हाँ, ठीक है, तुम बुला के लाओ मिर्ची को मैं उससे बात करता हूँ।"

तभी आलू मिर्ची के पास जाता है, "अरे पगली, तेरा काम हो गया।"

तो मिर्ची दादाजी के पास भागी भागी जाती है, , "दादाजी, दादाजी, आपने मुझे बुलाया?"

दादाजी ने कहा, "हाँ, बुलाया तो है। तुम बाहर शहर में जाना चाहती हो खेलने के लिए?"

मिर्ची बोली, "हाँ, दादाजी।"

"तो एक शर्त पे तुम्हें जाने दूंगा बाहर खेलने के लिए।"

मिर्ची बोली, "हाँ, हाँ, दादाजी आप बताइए, मैं आपकी हर शर्त मानूँगी।"

"तुम पूरे मन से, सबसे अच्छे से खेलोगी, तभी तुम्हें बाहर जाने दूंगा।"

तो मिर्ची बोली, "हाँ, हाँ, दादाजी, पक्का। मैं बहुत ही अच्छे से खेल के आऊँगी और आगे इस क्षेत्र में कुछ कर के दिखाऊँगी।"

चर्चा के बिंदु:

- **मिर्ची खुश क्यों थी?**
- **ये खबर सुनकर उसकी माँ की क्या प्रतिक्रिया रही?**
- **दादा जी की ख़ुशी प्रोत्साहन से शुरू हो कर पाबन्दी पर क्यों खत्म हुई? उनको किस चीज़ का डर था?**
- **आलू को मिर्ची के बारे में पता चलने पर उसकी प्रतिक्रिया क्या रही? इससे उन दोनों के रिश्ते के बारे में क्या पता चलता है?**
- **आलू ने अपने लाडले होने का फायदा कैसे उठाया?**
- **आम तौर पर लोग अपने लाडले होने का फायदा खुद के बारे में सोच कर उठाते हैं, लेकिन आलू ने मिर्ची को आगे बढ़ाने के लिए उठाया। असल ज़िन्दगी में क्या आपने ऐसा कुछ देखा है? विस्तार में बताएँ।**
- **हम आम तौर पर घर में लिंग आधारित भेदभाव के बारे में बोलते हैं, लेकिन उस महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार नहीं करते हैं जो घर का लाडला बेटा निभा सकता है। घर में लिंग भेद को मिटाने में एक लाडला भाई क्या क्या कर सकता है, एक सूची बनाईए।**

जीवनसाथी

- सुश्री जमना चौहान

एक गाँव में राधा नाम की एक लड़की रहती थी और वह बहुत गरीब परिवार से थी। वो ५ भाई-बहन थे और जब वह २ साल की थी तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। खर्चा बचाने के लिए, राधा और उसकी बड़ी बहन की शादी एक साथ ही करवा दी गयी। जब उसकी शादी हुई थी तब वो ५ साल की थी, इसलिए फिलहाल के लिए राधा अपने मायके में रहे, इस बात पर दोनों परिवार रज़ामंद थे। लेकिन जैसे ही वो १३ साल की हुई, उसके ससुराल वाले बार-बार आते, और उसे ससुराल भेजने के लिए उसकी माँ को परेशान करते। आखिरकार, उसकी माँ ने हार कर उसे ससुराल वालों के साथ भेज दिया।

जब राधा ससुराल गई तो उसे घर के कामों की एक लंबी सूची दे दी गई जिसे उसको करना पड़ता था। घर में काम करने के बाद उसको खेती का काम भी करना पड़ता था। उसका पूरा दिन अंदर और बाहर के काम करने में ही गुज़रता। पुरे दिन काम करने के बाद भी उसको उसका खुद का बनाया हुआ खाना खाने के लिए समय नहीं मिलता था। इन सारी चीजों का असर जल्द ही उस पर दिखने लगा। उसका वजन बहुत कम हो गया, और हालाँकि वह एक युवा लड़की थी, फिर भी उसकी आँखें काले घेरों में धँसी-सी दिखने लगी।

एक दिन उसकी माँ उससे मिलने आयी और बस उसे देखकर ही उन्हें पता चल गया कि चीजें यहाँ ठीक नहीं हैं। राधा की सास पूरे समय उनके आस-पास मंडराती रहीं, उन्हें एक मिनट भी अकेला नहीं छोड़ा। जब एक पड़ोसी किसी काम के लिए उनके घर आया तब सास को माँ-बेटी की जोड़ी को अकेला छोड़ना पड़ा। राधा ने यहाँ अपना अवसर पाते हुए माँ को बताया कि कैसे उसे पूरा दिन काम करना पड़ता था और खाना भी कम खा पाती थी और ससुराल वाले उसके साथ बुरा बर्ताव करते थे। माँ को पता था की राधा के ससुराल वाले उसे सीधे-सीधे अपने मायके जाने नहीं देंगे और वो ये भी जानती थी की राधा की सास बहुत धार्मिक हैं, इसलिए माँ ने सास से कहा की उनके घर में पूजा है जिसमें राधा का होना भी जरूरी है, और राधा को वहाँ से अपने साथ ले गयी।

अपनी माँ के घर पर, राधा अभी भी सभी कामों में मदद कर रही थी, लेकिन कम से कम वह खुश थी और उसके साथ अच्छा व्यवहार होता था। उसकी सेहत भी अब बेहतर हो गई थी। राधा के ससुराल वाले तब भी उसे वापस ले जाने के लिए माँ के पीछे पड़े हुए थे, लेकिन उसकी माँ ने उनका विरोध किया और कहा की जब तक राधा १८ साल की नहीं हो जाती तब तक वो उसे नहीं भेजेगी, और पुलिस से शिकायत करने की भी धमकी दी। बेमन ससुराल वालों को बात माननी पड़ी।

जब राधा १८ साल की हुई तब उसकी माँ के पास उसे रोकने के कारण न होने की वजह से उसे ससुराल भेजना पड़ा। वापस जा कर राधा ने देखा की उसका पति अब शराब पीने लग गया है। शराब के नशे में राधा को खूब मारा करता था और उसके घरवाले उसे रोकने भी नहीं आते थे। राधा हफ्ते भर में ही वापस अपनी माँ के पास चली आयी। माँ ने उसे रख तो लिया लेकिन उसके ससुराल वाले फिर परेशान करने लगे उसे वापस ले जाने के लिए और इस बार धमकी भी दी, की उनके समाज के तौर पर जो पैसे बनते हैं, वो राधा की माँ दे दे तो वो लोग चले जायेंगे। दोनों परिवारों के बीच की बात को ख़त्म करने के लिए राधा के परिवार को उसके ससुराल वालों को ५ लाख रुपये देने थे, जो की बहुत ही ज़्यादा बड़ी रकम थी। पैसे मांगने के लिए उसके ससुराल वाले हर दूसरे दिन ग्राम पंचों को ले कर उसके घर आ जाया करते थे और कहते थे कि "पैसे दे दो या फिर लड़की को भेजो।"

राधा के जान पहचान में एक महिला थीं जो महिला मंच में काम करती थीं। उन्होंने बताया था की महिला मंच भी ऐसे पीड़ित महिलाओं के लिए काम करता है। राधा उनसे मिली, जो फिर उसे अपने ऑफिस ले गयी। महिला मंच के ऑफिस में उसे बताया गया की अब वो १८ साल की हो गयी है और कानून ने भी बाल विवाह शून्यकरण का नियम लागू कर दिया है, तो राधा भी अपनी शादी खारिज करवा सकती है। राधा को ये बात ठीक लगी और उसने अपनी शादी के शून्यकरण के लिए एप्लीकेशन भरा। उसने महिला मंच के सहयोग से विधिक न्यायालय में अपनी एप्लीकेशन दी। इन सब के बारे में सुन के फिर से राधा के ससुराल वाले अपनी जाति पंचों के साथ आए और राधा और उसकी माँ से लड़ने लगे। उस समय उनके घर में महिला मंच से कुछ औरतें थी जिन्होंने तेज़ आवाज़ से पहले तो सब कुछ रोका , फिर उन्हें समझाया की राधा का बाल विवाह हुआ था और अगर उसके ससुराल वाले ऐसे ही परेशान करते रहे तो ये लोग थाने में एक रिपोर्ट लिखवाएंगे और उसके ससुराल के सब लोगों को जेल हो जाएगी। राधा के ससुराल वाले घबरा गए और दोबारा उसे परेशान नहीं किया।

अंततः राधा की शादी रद्द हुई और आगे चल कर राधा उसी महिला मंच के साथ जुड़ी और अपनी ही तरह और भी पीड़ित महिलाओं की मदद के काम में लग गयी। उसने दोबारा से अपनी पढ़ाई शुरू की और अब वो महिला मंच में एक ऊंचे पद पर काम करती है। उसके काम के चर्चे आसपास के गाँव में प्रसिद्ध है और सरकार की तरफ से उसे कई पुरस्कार भी मिले हैं। **कई लोगों को उम्मीद थी की राधा दोबारा शादी करेगी, लेकिन उसने अपनी पहचान इतनी ठोस बना ली थी की एक जीवनसाथी उसने एक पति में न ढूंढ कर, अपने काम में पाया।**

चर्चा के बिंदु:

- **राधा की शादी इतनी कम उम्र में क्यों करा दी गयी?**
- **शादी के बाद भी क्या राधा की माँ ने उसका साथ छोड़ा?**
- **अगर माँ राधा के लिए इतनी ही चिंतित थी, तो बचपन में शादी ही क्यों की?**
- **राधा के ससुराल वाले कैसे थे?**
- **ससुराल वाले राधा से प्यार तो नहीं करते थे, फिर भी हर बारे उसे लेने क्यों आ जाते थे?**
- **महिला मंच से राधा को क्या मदद मिली?**
- **क्या हुआ होता अगर राधा की माँ उसका समर्थन नहीं करती?**
- **शादी करने के लिए हम पर इतना दबाव क्यों बनाया जाता है?**
- **राधा ने आगे जाकर, अपने काम को ही अपना जीवनसाथी बनाया, शादी नहीं की। इस पर आपके क्या विचार है?**

काला और कला

- सुश्री कविता धवलेशा

ये कहानी है दो बहनों की- नीलम और श्यामा। नीलम बड़ी है और श्यामा घर में छोटी है। नीलम सुन्दर है और गोरे रंग की है और सब की चहेती है, श्यामा भी सुन्दर है, लेकिन रंग से काली है तो किसी को न तो उसकी मन की सुंदरता दिखती है न शक्ल की। बाहरवालों के अलावा, घरवाले भी नीलम को ही ज़्यादा मानते थे। कहीं जाना होता था तो नीलम को ले के जाया जाता था और कुछ लाया जाता था तो भी नीलम के लिए ही लाया जाता था। श्यामा को बाहर ले जाने में हिचकते थे उसके घरवाले। उसको बदसूरत मान कर, उसे अपने कमरे में ही रहने को कहते थे, तो कई बार अगर घर में कोई सामान आता था तो नीलम के लिए, श्यामा सामने होती नहीं थी तो किसी को उसकी याद रहती भी नहीं थी! दादा-दादी तो ख़ास ही नफरत करते थे। दादी दुर्गा माँ को पूजती थी लेकिन काली पोती को अपशकुनी मानती थी। दादा तो कहते थे उनकी सिर्फ एक पोती है, नीलम।

उस समय तो ये बच्चियाँ बहुत छोटी थीं तो उन्हें कुछ समझ में नहीं आता था। नीलम श्यामा से प्यार करती थी लेकिन उसको भी समझ आ गया था की श्यामा से बात करना किसी को पसंद नहीं तो उसकी भलाई इसी में थी की वो भी श्यामा से दूर रहे ताकि सब उसको प्यार करते रहें। इसलिए नीलम भी दूर दूर ही रहती थी श्यामा से।

घर की तरह, स्कूल में भी वही चीज़ होती थी। नीलम श्यामा से एक साल बड़ी थी, तो एक कक्षा आगे पढ़ती थी। पूरा स्कूल और स्कूल के शिक्षक/शिक्षिकाएँ श्यामा को देखते ही बोलते थे "तुम नीलम की बहन हो? लेकिन नीलम तो इतनी गोरी और सुन्दर सी है और तुम!!" अपनी क्लास में नीलम को आगे बिठाया जाता था और श्यामा को पीछे। स्कूल के कार्यक्रमों में श्यामा अगर किसी चीज़ में भाग लेना भी चाहती थी तो उसे मना कर दिया जाता था और नीलम अगर भाग ना भी लेना चाहे तब भी उसे ज़बरदस्ती आगे बढ़ाया जाता था। स्कूल के बच्चें नीलम के साथ बैठना पसंद करते थे, उसके साथ टिफ़िन खाना चाहते थे, उसके साथ खेलते थे लेकिन श्यामा के साथ ना कोई बैठता था , न खेलता था और न ही खाना खता था। इन्हीं सब की वजह से श्यामा बहुत सहमी और डरी हुई रहती थी। वो सोचती थी की क्यों सब नीलम को प्यार करते है, मुझसे ना कोई बात करता है, ना खेलता है। कोई ठोस कारण ना पा कर, उसने मान लिया की ज़रूर उसी में कोई कमी होगी।

दोनों बहनों के बड़े होने तक ऐसा ही चलता रहा। नीलम सबकी आँखों का तारा थी और श्यामा सबको खलती थी। जब उनकी शादी की उम्र हुई, नीलम के लिए बहुत रिश्ते आते थे। उनके माँ-बाप के लिए मुश्किल हो गया था सबसे अच्छे लड़के को चुन पाना। कुछ महीनों में नीलम की एक बड़े घर में रहने वाले एक सरकारी अफसर से धूम धाम से शादी हुई। उनके माँ-बाप तो चाहते थे की दोनों बहनों की शादी एक ही बार में निपटा ले लेकिन श्यामा के लिए कोई रिश्ता मिल ही नहीं रहा था, इसलिए जैसे ही नीलम के लिए अच्छा लड़का मिला उन्होंने जल्दी से उसकी शादी करा दी।

लड़का ढूंढने के चक्कर में कुछ साल और बीत गए लेकिन श्यामा का रिश्ता लग ही नहीं रहा था। उसके घरवाले उससे और ज़्यादा चिढ़ने लगे थे। हर लड़के को गोरी लड़की चाहिए थी, खुद चाहे कैसे भी दीखते हो लेकिन बीवी सुन्दर चाहिए थी। उम्र में दुगुने लड़के भी श्यामा से शादी करने से मना कर रहे थे। लड़के के माँ बाप भी ये बोलते है की "हमें गोरी और सुन्दर बहू चाहिए ताकि जो बच्चे हो वो भी सुन्दर और गोरे हो। काली बहू आएगी तो बच्चे भी बदसूरत होंगे"। श्यामा भी अब तक मान चुकी थी की वो काली और बदसूरत है और अपने जीवन में कोई ख़ुशी या प्यार पाने के योग्य नहीं है।

अपने दुखों को दूर करने के लिए श्यामा ने अपना पूरा ध्यान अपने कॉलेज की लाइब्रेरी की किताबें पढ़ने में लगा दिया। कालेपन के कारण कोई वैसे भी उससे शादी नहीं करने वाला था और बचपन से ही देखती आयी है की परिवार और दोस्त भी उससे कम ही प्यार करते थे, तो उसने किताबों की दुनिया में अपना नया घर बना लिया। फिर, एक बार उसने अपने स्मार्टफोन में देखा कि टीवी के एक सीरियल में एक ऑनलाइन चैलेंज हो रहा है, जिसका सही जवाब ५ सेकंड के अंदर देने पर १५००० रुपये का इनाम मिलेगा। स्कूल में उसके रंग के वजह से उसे ज़्यादातर कार्यक्रमों में भाग नहीं लेने दिया जाता था, लेकिन "ये तो ऑनलाइन है, यहाँ कौन रोकेगा?" ये सोचकर श्यामा ने सवाल पे क्लिक किया और तुरंत सही जवाब दे कर उसने १५००० रुपये जीत लिए। इसकी खबर उसने घरवालों को दिया और सब अचंभित रह गए, क्योंकि श्यामा से कुछ अच्छा करने की उम्मीदें किसी ने रखी ही नहीं थी!

ये ऑनलाइन चैलेंज जीतने के बाद श्यामा में आत्म-विश्वास जागा। पहले जो लड़की रोती रहती थी, खुद को कोसती थी और हमेशा सोचती थी की ऐसा क्या करूँ की घरवाले मुझे भी प्यार करने लगे, अब उसे इन बातों की चिंता नहीं रही। जीवन में पहली बार श्यामा को खुद पर प्यार आया।

अपने १५००० रुपये से, सबसे पहले उसने अपने लिए एक नया स्मार्टफोन खरीदा और बाकी के पैसे उसने अपनी मम्मी को दे दिया। मम्मी ने तब भी पलट कर ताना ही मारा, लेकिन श्यामा पर अब उनकी बात का कोई असर नहीं हुआ, श्यामा को बस आगे बढ़ना था। वो अपने नए फ़ोन से ऑनलाइन काम करने के तरीके की जानकारी लेने लगी। पढ़ाई तो वो पहले से ही बहुत करती थी, उसने अब एक ऑनलाइन ट्यूशन पढ़ाने वाले कोचिंग सेंटर का नंबर ढूंढा और वहाँ पर इंटरव्यू के लिए अप्लाई किया और उसे वो नौकरी मिल भी गयी। यहाँ वो स्कूल जाने वाले बच्चों को अलग अलग विषय पढ़ाती थी। उसे पहले ३ महीने परीक्षण पर रखा गया था लेकिन पहले ही महीने उसने इतना अच्छा काम किया की उसे पक्की नौकरी दे दी गयी और साथ ही, तनख्वा भी बढ़ा दी गयी। अब श्यामा खुश रहती थी। उसके बैंक के खाते में उसकी पूरी तनख्वा आ जाती थी, लेकिन हर महीने थोड़े से पैसे घर-खर्च के लिए निकाल कर वो अपनी माँ को दे देती थी। उसके माँ-बाप अभी भी उससे बहुत ज़्यादा प्यार तो नहीं करते थे, लेकिन अपनी बेटी को पैरों पर खड़े देख थोड़ा खुश रहते थे उससे। आस-पड़ोस के लोग भी अब श्यामा से अपने बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने के लिए पूछने लगे। पहले तो उसने मना कर दिया था लेकिन फिर **उसने सोचा की समाज की सोच बदलने के लिए बच्चों से ज़्यादा अच्छा और क्या रास्ता होगा?** अब श्यामा दिन में अपने ऑनलाइन क्लासेज चलाती थी और शाम को अपने पड़ोस के बच्चों को पढ़ाती थी। श्यामा बच्चों से बहुत प्यार करती थी, उसका पढ़ाने का तरीका भी मज़ेदार था और जहाँ भी उसे मौका मिलता था, वहाँ वो बच्चों को ये सिखाती थी की काले-गोरे, मोटे-पतले, रंग-रूप से कोई भी इंसान अच्छा या बुरा नहीं बनता, वो अपनी सोच से, अपने काम से अच्छा या बुरा होता है। इस ऊपरी सुंदरता से आगे बढ़कर उसने बच्चों में हौसला बढ़ाया की अपने हुनर और कौशल को और मज़बूत बनाये।

श्यामा अब अपने आसपास के गाँवों में सबसे प्रतिष्ठित अध्यापिकाओं में से एक है। जिस श्यामा से पहले कोई बात नहीं करना चाहता था अब हर कोई उसका दोस्त बनना चाहता है...

चर्चा के बिंदु :

- **नीलम और श्यामा में क्या फर्क था?**
- **क्या शादी के मोड़ तक, पूरी कहानी में हमें नीलम और श्यामा के रंग रूप की अलावा किसी भी और चीज के बारे में पता चला?**
- **क्या असल ज़िन्दगी में भी ऐसा होता है की हम इंसान को सिर्फ उनके रंग और रूप से ही परख लेते हैं, उनको अपनी काबिलियत या हुनर दिखाने का मौका ही नहीं देते? उदाहरण दे के बताएँ।**
- **इस कहानी में गोरे को सुन्दर माना गया है और काले को बदसूरत। क्या हमारे समाज में भी ऐसा होता है? आपके हिसाब से क्या होना चाहिए?**
- **अक्सर भेदभाव वाली कहानियों में, कथित कमज़ोर इंसान को साबित करना पड़ता है की वो कम नहीं है। लेकिन हमारी श्यामा ने ऐसा कुछ नहीं किया, वो बस चुप चाप अपना काम करती रही। उसके इस निर्णय पर आपकी क्या टिप्पणी है?**
- **रंग के अलावा, हम और किन बिनाह पर भेदभाव करते हैं? क्या आपने कभी ऐसा किया? आपको ये भेद कर के कैसा लगा? आपके हिसाब से सामने वाले को कैसा लगा होगा?**
- **हमारी बातों और किसी भी काम का असर दूसरों पर कैसा पड़ता है, क्या ये जानने की ज़रूरत है? क्यों?**
- **इस कहानी में हमने देखा की माँ-बाप अपनी पुरानी सोच के हिसाब से श्यामा को दुत्कारते थे। क्या नीलम अपनी बहन के लिए कुछ और कर सकती थी? क्या?**
- **गलत सोच के खिलाफ आवाज़ उठाना सही है या चुप रहना सही है? अपना तर्क विस्तार में बताएँ।**

समाज की साइकिल

- सुश्री कामिनी कुमारी

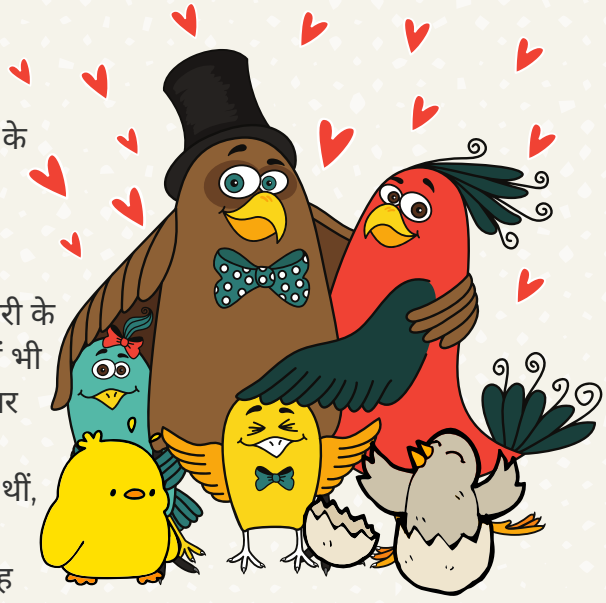

एक छोटे से पेड़ पर चिड़ियों का एक जोड़ा रहता था। पति का नाम था सावन और पत्नी का नाम था बहार। सावन और बहार प्यार से मिलजुल के रहते थे। कुछ समय बाद उनके यहाँ ४ बच्चे हुए जिनमें से दो बेटियाँ थी, कमला और विमला, और दो बेटे थे सुभाष और प्रकाश।

सावन और बहार अपने बच्चों से बहुत प्यार करते थे और चारों को बराबरी के मौके भी देते थे आगे बढ़ने का। चारों बच्चों को इन्होनें एक साथ स्कूल में भी डाला। सुभाष और प्रकाश बड़े समझदार थे, वो स्कूल से वापस आकर घर का काम भी करते थे, मम्मी पापा की मदद करते थे और स्कूल से दिया हुआ गृहकार्य भी अच्छे से करते थे। और जो हमारी कमला और विमला थीं, उन दोनों का मन पढ़ाई में थोड़ा कम लगता था, उनका मन बस बाहर घूमना, बाक़ी पक्षियों को देखना, बाक़ी पक्षी क्या काम कर रहे है, कैसे रह रहे हैं, इनमें ही लगता था। वह दोनों तो स्कूल के बहाने बाहर घूमते रहते थे, कभी कभी तो दूसरे लड़को का पीछा करते और उनको छेड़ते भी थे।

जो हमारे सावन और बहार थे, वो अक्सर काम से बाहर जाया करते थे। उनका लगभग पूरा दिन सबके लिए केंचुए इकट्ठा करने में ही चला जाता था। वो चाहते थे की उनके चारों बच्चे पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दें और बाकी खाने पीने की पूरी ज़िम्मेदारी इनकी रहे। कमला और विमला अपने मम्मी पापा के घर पर ना होने का पूरा फायदा उठाते थे। वो अपने भाइयों पर बहुत रौब झाड़ते थे। ये सब उन्होंने अपने आस पास देख कर सीखा था। जब भी वो बाहर घूमने जाते थें तो वो देखते थें की दूसरे पक्षी अपने भाइयों के साथ काफी पाबन्दी करते है, रोक टोक करते है, उनको परदे में रखते थे, तो वो भी अपने भाइयों के साथ ऐसा ही करने लगीं।

एक दिन, जब कमला और विमला अपनी सहेलियों के साथ घूमने निकलीं तो हमेशा की तरह इस बार भी सब उनके घर में हर चीज़ की बराबरी होने का मज़ाक उड़ाने लगे। एक ने तो सीधे कह भी दिया की "तुम लोग अपने भाइयों को स्कूल क्यों भेजते हो? क्या करेंगे वो पढ़-लिख कर? उन्हें कौन सा कहीं काम करना है? उन्हें शादी ही तो करनी है! घर के काम करने है। उन्हें घर के काम सिखाओ। तुम दोनों को घर चलाना है, उन्हें थोड़ी! वो तो ससुराल चले जायेंगे तो पढ़ाने-लिखाने में लगा सारा पैसा बरबाद जायेगा तुम लोगों का। तुम लोग अपने भाइयों पे ध्यान दिया करो। सब तुम दोनों का मज़ाक उड़ाते हैं। आगे चल कर कोई बॉयफ्रेंड भी नहीं मिलेगा तुम्हें। वैसे भी माहौल ऐसा चल रहा है, क्या पता कब गलत रास्ते पे चले जाएं। पता नहीं किससे दोस्ती हो जाये या किसी ने स्कूल जाते वक़्त इनकी इज़्ज़त लूट ली तो? तुम्हारे परिवार की क्या इज़्ज़त रह जाएगी?"

ये बातें सुनकर कमला और विमला तमतमा उठी। वो पहले से ही परेशान थीं की उनके भाई ज़्यादा नंबर लाते थे तो टीचर इन दोनों को डाँटती थी और अब अपनी सहेलियों के नज़रों में भी वो तानों का पात्र बन रहीं थीं। फिर घर आके सीधे उन्होंने अपने भाइयों से कहा की कल से उनका स्कूल जाना बंद, और उनके अकेले बाहर जाने पर भी पाबंदियाँ लगा दी। अब सुभाष और प्रकाश, दोनों डरे-सहमे घर ही पर रहते थे। उनको समझ ही नहीं आ रहा था की कोई इनके साथ कुछ गलत कर देगा, इस में उनका कहीं आना जाना क्यों बंद कर दिया गया?

अब घर में अकेले रह के दोनों भाई क्या करते? सुभाष ने खाना बनाने के अलावा अपने मम्मी-पापा का और घर के हिसाब-किताब सँभालने की ज़िम्मेदारी भी ले ली। प्रकाश घर बैठे-बैठे ही सिलाई-कढ़ाई करने लगा। सिलाई-कढ़ाई में वो इतना निपुण हो गया कि दूसरी चिड़िया उससे कपड़े सिलवाने लगे और उसके बदले पैसे भी देने लगे। यह देख कर कमला और विमला और

भी चिढ़ने लगीं की "ऐसे क्या बुरे दिन आ गए हमारे की हमें अब भाई की कमाई पर घर चलाना पड़ रहा है?" इसके साथ उन्होंने प्रकाश का सिलाई का काम भी बंद करवा दिया।

इस तरीके से, बराबरी मानने वाले माता-पिता के घर पैदा होने के बावजूद भी समाज के बहकावे में आ कर कमला और विमला ने सुभाष और प्रकाश की पढ़ाई भी बंद करा दी और उनको कोई काम भी करने नहीं दिया।

एक समय ऐसा आया की सावन और बहार को एक पुराना फ्रिज मिल गया अपने घोंसले को रखने के लिए और उन्होंने एक ही दिन में कई सारे केंचुए पकड़ लिए ताकि अगले कुछ दिन वो घर ही पे रहे और अपने बच्चों के साथ और समय बिता सके। इस बार उन्होंने घर में अजीब सा माहौल देखा। सुभाष और प्रकाश को सहमा देखा, दोनों को स्कूल जाना अच्छा लगता था पर अब वो स्कूल भी नहीं जा रहे थे और कमला और विमला के मिज़ाज भी बदले हुए लगे। उन्होंने अपने बेटों से पूछा की क्या हुआ है, बेटों ने पूरी बात बताई की कैसे उनकी बहनें भी दूसरे घरों के तरह उन पर रौब जमाने लगीं थीं, उनका स्कूल भी बंद करवा दिया और कहीं बाहर भी नहीं जाने देतीं। अब सावन और बहार चिंतित थे, क्योंकि उन्हें लगा था की उन्होंने तो अच्छी परवरिश दी थी अपने चारों बच्चों को। खैर, गुस्सा होने के बदले उन्होंने कमला और विमला से बात करने का निर्णय लिया। बातों से पता चला की कैसे उनके घर में लड़का-लड़की को बराबर मानने के वजह से कमला और विमला का मज़ाक उड़ाया जाता था। तो जैसे ही उन्हें मौका मिला उन्होंने अपनी सहेलियों की तरह बनने के चक्कर में अपने भाइयों के सपनों को दबाना शुरू कर दिया।

अपने बच्चों को बातों से समझाने के बदले, सावन और बहार ने एक उदहारण से समझाना बेहतर समझा। बहार पड़ोस के घोंसले से एक छोटी सी साइकिल ले के आया और कमला और विमला से कहा की इसे आगे चलाकर ले जाओ। पहले कमला ने चलाया फिर विमला ने। अब बहार ने साइकिल के एक पहिये को निकाल दिया और कहा की इसे चलाकर दिखाओ। कमला और विमला, दोनों ही ये नहीं कर पायीं। तब सावन ने उन्हें समझाया की **लड़का और लड़की दोनों पहिये हैं और ये साइकिल समाज। अगर एक भी पहिया गायब हो जाये तो ये साइकिल ख़राब हो जाती है, वो आगे नहीं बढ़ सकती।** ठीक वैसे ही लड़के और लड़कियाँ, दोनों का बराबर ओहदा होता है अगर उनमें से एक भी ना हो तो हमारा समाज आगे नहीं बढ़ पाएगा।

फिर सावन और बहार ने सुभाष और प्रकाश से कहा की सिर्फ साइकिल पर बैठकर बिना अपने पैर चलाये इसे आगे बढ़ाकर दिखाओ। दोनों में से एक भी भाई ये नहीं कर सके। तब उन्होंने समझाया कि “**अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं को बिना प्रयास और संघर्ष किए हासिल नहीं किया जा सकता।** अपने सपनों और हक के लिए तुम्हें लड़ना होगा और किसी के दबाव में आकर रुकना नहीं है। किसी ने बोला की लड़के बस घर सँभालने के काबिल हैं और तुम उनकी बात मान कर घर बैठ गए, तो उसमें तुम्हारी भी गलती है। कभी कभी ये कठिनाइयाँ हम पार नहीं भी कर पाए तो क्या? कोशिश तो फिर भी करनी चाहिए ना?”

चारों बच्चों को अपने मम्मी-पापा की बात समझ आयी और चारों थोड़ी देर के लिए चुप हो गए। कमला और विमला को अपनी गलती का एहसास हुआ और सुभाष और प्रकाश को समझ आया की सीधे बात मान लेने से पहले वो अपनी बहनों को समझाने के लिए थोड़ी कोशिश कर सकते थे। चारों बच्चे आपस में गले मिले और वादा किया कि आज के बाद से वो एक टीम की तरह काम करेंगे और जीवन के हर पड़ाव पर एक दूसरे का हौसला बढ़ाएंगे और सहयोग करेंगे।

चर्चा के बिंदु:

- **सावन और बहार अपना परिवार कैसे चलाते थे?**
- **कमला और विमला को उनकी सहेलियों ने क्या कहा की उनके भाइयों का स्कूल जाना बंद क्यों होना चाहिए?**
- **अगर लड़कियाँ सुभाष और प्रकाश को छेड़े तो इस में इन दो भाइयों की पढ़ाई क्यों रुकनी चाहिए?**
- **कमला और विमला ने प्रकाश की सिलाई का काम क्यों रुकवाया?**
- **जिस तरीके का बर्ताव सुभाष और प्रकाश के साथ उनकी बहनों ने किया, वो आपको नार्मल लगा या गलत लगा? क्यों?**
- **क्या आपने जीवन में इस तरीके का बर्ताव किसी और के साथ होते देखा है? विस्तार में बताएं।**
- **अगर इस कहानी में सुभाष और प्रकाश के बदले, कमला और विमला पर रोक टोक लगाया जाता तब भी क्या हमें इतना ही खटकता या कुछ कम?**

शिक्षा का धन

- श्री हेमंत शर्मा

१७ साल की सुशीला, तीन बहनों में वह सबसे बड़ी थी। सुशीला बारहवीं कक्षा में पढ़ाई कर रही थी और पढ़ाई के साथ-साथ वो अपनी माँ का, घर के कामों में भी साथ देती थी, अपनी छोटी बहनों को भी पढ़ाती थी। उसके माँ-बाप मज़दूरी करते थें। उसी से अपने घर का खर्च चलाते थें। इसी तरह सबकुछ ठीक ठाक चल रहा था।

सुशीला के गाँव वालों को उसका पढ़ना-लिखना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। वो रोज़ उसके माँ-बाप को ताने मारते थे। एक दिन किसी ने उसके माँ-बाप के कान भर दिए की "बेटी ज़्यादा पढ़-लिख गयी तो कौन उससे शादी करेगा! उसकी शादी करवा दो।" सुशीला के माँ-बाप को बेटी की शादी वाली बात ठीक लगी। वो लोग उसके लिए लड़का देखने लगे। जब ये बात सुशीला को पता लगी तो पहले तो उसने साफ़ मना कर दिया और बोली की मैं अभी पढ़ना चाहती हूँ, कुछ बनना चाहती हूँ। लेकिन उसके माँ-बाप की ज़िद के आगे उसकी एक न चली। उसकी शादी पास ही के गाँव के रामू से करवा दी गयी। रामू की उम्र सुशीला से दुगुनी थी। वो ३५ साल का अनपढ़ आदमी था। उसके साथ उसकी बूढ़ी माँ भी रहती थी। रामू घर में खेती-बाड़ी का काम करता था और साथ में एक भैंस भी थी जिसका दूध उसकी माँ निकाल के बेचती थी। इस तरह घर का खर्च चल जाता था।

सुशीला जब शादी करके आयी तो अपनी सास से बोली की वो घर के काम के साथ-साथ पढ़ाई भी करना चाहती है, लेकिन उसकी सास ने उसे बहुत डाँटा और कहा "आई बड़ी पढ़ने वाली! चुप चाप घर का सारा काम करो!" ये कह के उसे घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ दे दी गयी। अब सुशीला घर के काम भी करती, भैंस का दूध भी निकालती, घर का खर्च भी संभालती और थोड़े से पैसे अपने बैंक अकाउंट में जमा भी कराती ताकि ज़रूरत पड़ने पे काम आ सके।

एक बार बारिश ना होने की वजह से उनकी पूरी फसल बरबाद हो गयी। फिर कुछ ही महीने में उनकी सारी जमा-पूँजी भी खत्म हो गयी। इस तरह उनके पास अगली फसल के लिए बीज और जुताई के लिए भी पैसे नहीं थे।

ऐसी स्थिति में रामू और उसकी माँ ने भैंस बेचने की सोची, की भैंस बेच के वो खेत के लिए सारा सामान इकठ्ठा कर लेंगे। जब ये बात सुशीला को पता चली की रामू खेती का सामान जुटाने के लिए भैंस बेचने की सोच रहा है तो उसने रामू से कहा की "आपको भैंस बेचने या क़र्ज़ लेने की कोई ज़रूरत नहीं है। पिछले कुछ वर्षो में भैंस का दूध बेच के जो पैसे मिलते थे उसमें से कुछ पैसा मैंने बैंक अकाउंट में जमा किया है। आप वो पैसे ले लें और अपने खेती का काम करें। ये सुन कर रामू की जैसे आँखे खुल गयी। **वो भावुक हो गया और महिलाओं की तरफ उसकी सोच बदलने लगी। पढ़ाई का महत्व भी उसे समझ आने लगा। उसने सुशीला को आगे पढ़ाने का निर्णय किया।** स्नातक के बाद उसी गाँव में सुशीला शिक्षिका का काम करने लगी और अपने गाँव के बच्चों को पढ़ा के अपनी आजीविका चलाने लगी। उनकी पारिवारिक आय अब तीन स्रोतों से आने लगी - रामू की खेती, उनकी भैंस और सुशीला की शिक्षण नौकरी, जो उनके परिवार के लिए बेहतर समय लेकर आई। अब वे अपने घर को फिर से तैयार करने में, बेहतर बचत और पैसे का उपयोग करने में सक्षम थे। और तो और खाने और खर्च करने के लिए काफी बचत भी कर पाते थे।

चर्चा के बिंदु:

- **सुशीला कैसे परिवार से थी?**
- **उसके माता-पिता ने अचानक से उसकी पढ़ाई क्यों रुकवाई?**
- **शादी के बाद जब उसने अपनी सास से पढ़ाई के लिए पूछा तो सास ने क्या जवाब दिया?**
- **सुशीला के परिवार में क्या मुसीबत आई?**
- **सुशीला ने इस मुश्किल का क्या समाधान निकाला?**
- **शिक्षा और खेती में क्या समानता है?** (यहाँ ये समझाएं की जैसे एक दिन बीज बोने की बाद अगले दिन ही फसल नहीं आ जाती, वैसे ही एक दिन स्कूल जाकर कुछ नहीं बदल जाता। धीरे धीरे मेहनत कर के ही शिक्षा का फल इंसान की सोच और कार्यों में झलकता है)।
- **जिस चीज़ के लिए सबने सुशीला को रोका आखिर में वही काम आई। ऐसा यदि आपने अपनी असल ज़िन्दगी में देखा है तो विस्तार में बताएँ।**

क्या करे माही?

- सुश्री नीलम गाँधी

आज की कहानी एक ऐसे गाँव की कहानी है जहाँ लड़कियों का पैदा होना अक्सर अपशगुन माना जाता था। वहीं जन्म होता है माही का। उसकी माँ बहुत खुश थी, क्योंकि लड़का हो या लड़की, उसकी माँ ने नौ महीने उसे अपने गर्भ में पाला था, इसलिए, बच्चा स्वस्थ पैदा हुआ, उसी में उसकी ख़ुशी थी। पर दादी इससे बहुत नाखुश थी कि बहू नेफिर से एक लड़की को जन्म दे दिया!

घर में हर पल माही को इस बात का एहसास दिलाया जाता की वह अनचाही बच्ची है। हमेशा ही कोई कुछ कहता जिससे उसे लगता की वह एक बोझ है। एक दिन वो अपने भाई के साथ बैठ के खाना खा रही थी की दादी आकर बोलीं, "क्यों रे, कितना खाएगी तू? अपने भाई के लिए भी कुछ बचा दे, या फिर सारा तू ही खा जाएगी?" माही खाना वहीं बीच में छोड़ के चली गयी और अपने बंद कमरे में बैठ के रोने लगी और सोचने लगी की क्या सच में वो अच्छी नहीं है? क्या सच में उससे कोई प्यार नहीं करता, या फिर इस धरती पर ज़िंदगी सबके लिए ही इतनी बुरी है? ये सोचती हुई वो सो गयी।

माही पढ़ाई में बहुत तेज़ थी, स्कूल में उसके अच्छे अंक आते थे, और वह स्कूल की अन्य कार्यक्रमों में भी हिस्सा लेती थी। एक बार टीचर ने उसके पापा को बुला के कहा की "आपकी बच्ची तो बहुत अच्छी है पढ़ाई में, लेकिन अफसोस कि आपके बेटे मोहु के लिए हम ऐसा नहीं कह सकते, पढ़ाई में वो कमजोर भी है और उसकी रुचि भी नहीं है, थोड़ा ध्यान रखा कीजिये उस पर भी।" ये बात मोहु को अच्छी नहीं लगी और वो घर आते ही माँ और दादी माँ के पास जाकर बहुत रोया और चिल्लाया कि कैसे उसके टीचर ने उसकी बेइज्जती की क्योंकि माही हमेशा पढ़ती रहती है। उसने उनसे ये भी पूछा, “जब इस लड़की को ब्याह करके दूसरे घर जाना है तो इसे दसवीं पढ़ाने की क्या जरूरत है?”

तभी दादी ने भी मौके का फायदा उठाया और कहा "सही कह रहा है मोहु। अब बहुत हुई इसकी पढ़ाई-लिखाई। आठवीं कक्षा तो पास हो ही गयी है, और क्या चाहिए? अब समय आ गया है की इसकी शादी करा दो। पूरा दिन कलम और कागज़ हाथ में लिए बैठी रहती है, ऐसे थोड़ी ना लड़कियाँ रहती हैं? लड़कियों को तो खाना बनाना आना चाहिए ताकि वो ससुराल में खुश रहें, वरना हमें ही ताने पड़ेंगे की देखो घरवालों ने कुछ नहीं सिखाया।"

माही कमरे में नहीं थी लेकिन उसे सभी बातें सुनाई दे रहीं थी। उसे इन सब बातों पर बहुत गुस्सा आ रहा था। वो पढ़ाई में मेहनत करती थी तो उसके अच्छे नम्बर आये, मोहु पढ़ाई करता, तो उसके भी आते। उसने अपने गुस्से को दबाया और चुपचाप कमरे में चली गयी। अब माही अक्सर उदास रहने लगी, स्कूल जाना भी बंद हो गया था, और घर से बाहर जाना भी बंद हो गया था। अब वो घर से बाहर जाती तो बस सब्ज़ी लेने के लिए।

जिस दुकान से माही सब्ज़ी लेती थी वहाँ पे एक लड़का होता था, राम। राम अक्सर माही के दर्द को पढ़ लिया करता था, वह कुछ नहीं भी बोलती थी तो भी वो समझ जाया करता था। उनके ऐसे मिलने से आँखों ही आँखों में दोनों की बातें होने लगी, एक प्यार का एहसास आपस में होने लग गया था। एक दिन राम ने उससे पूछा, "तुम क्यों इतना उदास रहती हो?" तब माही उससे कुछ कह न पायी और घर आ गयी। किसी ने माही से उसके मन की पूछी, ये बात उसे बहुत अच्छी लगी थी। उसके बाद दोनों की मुलाक़ातें बढ़ने लगी। माही अगर आधे घंटे के लिए सब्ज़ी लेने जाती, तो १५ मिनट में अपना सारा काम खत्म करके राम के पास बैठ जाती। एक पेड़ के नीचे बैठ के दोनों खूब बातें करते, अपने दिल की, अपने दुःख की सारी बातें एक दूसरे से बताते। इन १५ मिनट की मुलाकातों से माही बहुत खुश रहने लगी। अब जैसे ही सब्ज़ी लेने का समय आता माही का चेहरा खिल जाता था। घर से बाहर

निकलने से पहले वो आईने में खुद को देखती की "मैं अच्छी तो लग रही हूँ, मेरे कपड़े सही है ना?" ये सारी चीज़ें, उसकी दादी ध्यान से देख रही थी। दादी अक्सर सोचती की "आजकल ये इतनी खुश क्यों रहती है? आखिर राज़ की बात क्या है?" और अपना शक ले के वह सीधे माही के मम्मी पापा से बात करने चली गयी "लड़की हाथ से निकल जाएगी, तुम देख लो, फिर मत कहना की हमारी नाक कटवा दी, ये कर दिया, वो कर दिया। तुम जल्दी से उसके लिए रिश्ते ढूंढो और शादी करके भेज दो। हो तो गयी है १७ साल की और कितनी बड़ी होगी?" माही के पापा ने इस पे विचार किया कि बात तो सही है।

उसके अगले दिन जब माही और राम मिले, तो पहली बार दोनों ने जीवन साथ बिताने की बातें की। उस दिन माही बहुत खुश थी। लेकिन घर में घुसते ही उसने देखा कि लड़के वाले बैठे है वो भी तैयारी के साथ। उसको तो कुछ पता भी नहीं था और उसकी सगाई कर दी गयी एक ऐसे लड़के के साथ जो माही से १० साल बड़ा था!

अब सगाई हो गयी तो उसका घर से निकलना भी बंद हो गया। काफी विचार किया, काफी रोई लेकिन उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था की वह क्या करे, क्योंकि वो अभी १७ साल ५ महीने की ही थी। वो सोच रही थी की कैसे वो ये सारी बातें राम को बता पाए। उधर राम भी परेशान था कि क्या हो गया। उसने पहले तो ये सोचा कि शादी कि बात सुन के माही का शायद मन बदल गया होगा। उसे बहुत दुःख हुआ।

एक दिन राम माही की गली से निकल रहा था, माही भी उसी समय अपने घर की खिड़की पे बैठी हुई थी। तब उनकी बातें हुई और माही ने ऊपर ऊपर से पूरी बात बताई, राम ने उससे कहा की "क्यों ना हम भाग चलें?"

अभी माही को १८ साल के होने में ४ महीने बचे थे, लेकिन उसको और कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। अब एक रास्ता तो ये था की अपनी ज़िन्दगी के सारे सपने तोड़ के उस इंसान से शादी कर ले जिसे वो जानती भी नहीं है और उम्र में भी उससे १० साल बड़ा है, और एक तरफ वो राम से शादी करे और सारी ज़िन्दगी उसके साथ गुज़ारे। राम उसकी ज़िन्दगी में अकेला ऐसा इंसान था जो बिना कहे ही माही की सब बात समझ जाता था। माही करे तो क्या करे?

चर्चा के बिंदु:

- **माही का अपने परिवार वालों के साथ कैसा रिश्ता था?**
- **माही की दादी उसे इतना नापसंद क्यों करती थी?**
- **माही पढ़ाई में अच्छी थी, फिर भी उसकी पढ़ाई क्यों रुकवा दी गयी? इस घटना से हमे इस परिवार की मानसिकता के बारे में क्या पता चला?**
- **माही को बताये बिना ही उसकी शादी पक्की कर दी गयी, इस बारे में आपका क्या विचार है?**
- **एक महिला होने के बावजूद दादी माही को रोकने टोकने में ही क्यों लगी रहती थी? ऐसा अपने परिवार या आसपास देखा है तो बताएं।**
- **माही और राम के रिश्ते के बारे में आपके क्या विचार हैं?**
- **इस कहानी को एक निर्णय लेने के मोड़ पे आकर रोक दिया गया है। आपके हिसाब से माही को क्या चुनना चाहिए? क्यों?**
- **माही १७ साल और ५ महीने की थी। कानूनी तौर पर १८ साल की उम्र में वो एक बालिग़ लड़की हो जाती और अपना निर्णय खुद ही ले सकती थी। ७ महीने छोटे होने के कारण क्या माही का अपने जीवन में लिए हुए फैसले का कोई मोल नहीं?**
- **क्या उम्र से हर इंसान की समझ बढ़ती है?**

कौन बड़ा कौन छोटा?

- सुश्री अनीता सेन

एक बार की बात है, एक गाँव में पल्लवी नाम की एक लड़की रहती थी। पल्लवी के दो भाई थे, एक बड़ा और एक छोटा। बड़ा भाई बहुत जगह मज़दूरी का काम करता था, और छोटा भाई पढ़ाई करता था। पल्लवी भी कुछ काम करते हुए थोड़े पैसे कमाती थी। इसी तरह तीनों भाई-बहन का घर चलता था। तीनों बच्चे अनाथ थे।

एक दिन पास के गाँव में राजेश नाम का एक लड़का रहने आया, वह भी अनाथ था लेकिन बहुत ही पैसे वाला था।

राजेश और पल्लवी हर शुक्रवार को लगने वाली मंडी में जा कर सब्ज़ियाँ खरीदते थे। हर हफ्ते वो एक दूसरे को मंडी में देखते थे और आखिर एक बार उनकी बात हो ही गयी। दोनों को एक दूसरे से बात कर के बहुत अच्छा लगता था, फिर धीरे धीरे उन दोनों में प्यार हो गया। दोनों के माता-पिता का देहांत हो गया था, तो किसी की इजाज़त नहीं लेनी पड़ी और उन्होंने शादी कर ली। शादी होने के बाद पल्लवी ने अपने दोनों भाइयों को भी अपने ससुराल में रख लिया। राजेश ने पल्लवी के बड़े भाई की एक कंपनी में नौकरी लगवा दी और छोटे भाई का भी पास के एक अच्छे स्कूल में दाखिला करवा दिया। उनके जीवन में होने वाली ऐसी सकारात्मक घटनाओं के साथ, भाई-बहन की तिकड़ी खुश रहने लगी और वे अपने भविष्य को लेकर आशावान हो गए।

कुछ समय तक तो पल्लवी और राजेश बहुत प्यार से रहे। लेकिन, अपने अपने घर में रह कर प्यार करना और शादी कर के एक साथ रहने में बहुत अंतर होता है। शादी के बाद पल्लवी को राजेश की कई सारी आदतों के बारे में जानने को मिला जो की उसे सब्ज़ी मंडी में थोड़ी देर मिलकर पता नहीं थीं। राजेश अक्सर दोस्तों के साथ पार्टी करता, घूमता-फिरता था, शराब पीता था और ऐसी चीज़ें करता जिससे पल्लवी परेशान हो जाती। ज़्यादा शराब पीने की वजह से कभी कभी उसकी तबीयत भी खराब हो जाती थी।

कुछ समय तक ऐसे चलता रहा, एक दिन हिम्मत जुटा के पल्लवी ने उसे बोला की, "आप इतनी शराब पीते है, रात को भी देर से आते हो, हम लोग इंतज़ार करने की वजह से देर रात तक जागते रहते है। और आजकल आपकी सेहत भी ठीक नहीं रहती है।" राजेश को बहुत गुस्सा आया और उसने चिल्लाया की "तुम होती कौन हो मुझे समझाने वाली? तुम तो गरीब परिवार से हो और मुझसे शादी कर के तुम्हें इतना बड़ा बंगला मिल गया है, तुम्हारे दोनों भाइयों का भी खयाल रखता हूँ, जो चाहिए वो सब मिल रहा हैं फिर भी तुम मुझसे सवाल कर रही हो?"

पल्लवी को बहुत बुरा लगा। उसने अपने गाँव में ऐसी कई कहानियाँ सुनी थी जहाँ शादी के बाद पति पत्नी को अपनी अमीरी और उसकी गरीबी जताता है, लेकिन उसने सपने में भी नहीं सोचा था की राजेश उससे इस तरह से बात करेगा। साथ ही, पल्लवी को एहसास हुआ की कैसे गरीबी के कारण वह अपनी पढ़ाई भी नहीं कर पायी थीं और अब उसका वजूद सिर्फ इतना ही था की वह किसी की पत्नी है, जिसकी राय की कोई अहमियत नही!

दोनों भाइयों ने पल्लवी को रोते हुए और राजेश को गुस्सा होते हुए देख लिया था। तो बड़े भाई ने पूछा की "क्या हुआ?", पहले तो पल्लवी ने उसे कुछ नहीं बताया ताकि उसे बुरा न लगे, लेकिन बड़े भाई ने बोला, "अब हम लोग बड़े हो गए है, और ये समझ में आ रहा है की तुम परेशान हो, तो बता दो साफ़ साफ़।" तो पल्लवी ने पूरी बात बताई। सारी बात सुनकर बड़े भाई ने बताया की,

“मैंने भी उनसे बोला था ये सब तो जीजाजी बोले की उन्होंने ही मेरी नौकरी लगवाई है और मैंने ज़्यादा उनको टोका तो नौकरी से निकलवा भी सकते हैं,”। तब पल्लवी का छोटा भाई बोला की उसे भी जीजाजी ने ऐसे ही धमकी दी थी जब उसने उनके लिए शराब लाने से मना कर दिया था। आपस में बात कर के तीनों काफी दुखी हुए, लेकिन राजेश की बात सच भी तो थी की उसने इन तीनों की ज़िन्दगी बदल दी थी, तो इन्होनें ज़्यादा बोलना सही नहीं समझा। लेकिन बात ये भी तो है की हम जिनसे प्यार करते हैं, उनकी भलाई के लिए सोचते भी हम ही हैं। राजेश धीरे धीरे बहुत ज़्यादा शराब पीने लगा था, देर रात तक बाहर रहता, और पल्लवी कुछ बोलती तो उसपे बहुत गुस्सा करता था।

राजेश को अब शराब की लत लग गयी थी, परिवार और डॉक्टरों के मना करने के बावजूद भी ऐसा करते करते राजेश धीरे-धीरे बीमार होने लगा। तब उसे डॉक्टर ने बोला की "आप अगर ऐसे शराब पीते रहेंगे तो आपका लिवर और किडनी दोनों खराब हो जाएंगे।" राजेश ने तुरंत उनको जवाब दिया की "हमारे पास तो बहुत पैसे है। हम इलाज करा लेंगे।" डॉक्टर ने बोला की "सब कुछ पैसे से नहीं होता है, आपको शराब छोड़नी ही पड़ेगी। "

राजेश की तबीयत दिन ब दिन और बिगड़ने लगी और उसे हॉस्पिटल में भर्ती करना पड़ा। पल्लवी का बड़ा भाई ही उसकी दवाइयाँ वगैरह का भी ध्यान रखता था। राजेश के हॉस्पिटल और दवाइयों के खर्चों में उसके बहुत पैसे जाने लगे। धीरे धीरे उसकी तबीयत इतनी बिगड़ने लगी की उसका चलना फिरना तक बंद हो गया। पैसों की कमी होने का सोचते हुए, राजेश ने अपने दोस्तों को फ़ोन लगाना शुरू किया, लेकिन किसी ने भी उसके फ़ोन का जवाब नहीं दिया। और एक दो दोस्त जिसने फ़ोन उठा भी लिया, पैसों का नाम सुन के ही पलट गए।

एक दिन पल्लवी का भाई राजेश के लिए फल ले के आया तो राजेश ने उसे डाँटा की "इतने से फल ले के आये हो तुम!" भाई ने कहा "मेरे पास इतने ही पैसे थे।" पल्लवी ने तब बताया की "आपके सारे पैसे ख़त्म हो चुके है और जो आपके इलाज में और हमारा घर चलाने में खर्चा हो रहा है वो पिछले १५ दिन से मेरे भैया और मेरे बचत किये हुए पैसों से हो रहा है।" राजेश चौंक कर बोला "तुम्हारे बचत के पैसे?" **तब पल्लवी ने बताया की कैसे घर खर्च के लिए दिए हुए पैसों में से थोड़े थोड़े पैसे बचाकर वो अपने बैंक के खाते में डालती थी ताकि मुसीबत के समय पर काम आये।** उसने अपने बड़े भाई से भी उसकी सारी कमाई बैंक में हर महीने जमा करवाई क्योंकि घर तो राजेश के पैसों से चलता था। अपनी कम पढ़ी-लिखी लेकिन बड़े सोच वाली बीवी और साले को देख कर राजेश को खुद पर बहुत शर्म आयी। राजेश का खुद का निर्णय था की शादी के बाद अपने दोनों सालों को अपने घर पर रखे लेकिन अपने अहंकार के मारे उसने बार-बार अपनी अमीरी और उनकी गरीबी को जताया, लेकिन आज अगर राजेश ज़िंदा था तो इन्हीं लोगों के वजह से जिन्होंने अभी तक उसको भनक भी पड़ने नहीं दी की वो उसका खर्चा चला रहे थे। उसे नहीं पता था माफ़ी मांगने से कोई फ़ायदा होगा या नहीं लेकिन उसने खुद से वादा किया की वह खुद को बदलेगा और उनको अपने से कम योग्य नहीं समझेगा।

चर्चा के बिंदु :

- **पल्लवी और उसके भाई कैसे घर से थे?**
- **राजेश कैसे घर से था?**
- **राजेश और पल्लवी पहली बार कहाँ मिले?**
- **शादी के बाद दोनों में झगड़े क्यों होने लगे?**
- **क्या शादी और प्यार दोनों समान हैं?**
- **जब एक प्रेमी जोड़े की शादी हो जाती है तो किस प्रकार की नई जानकारियाँ उन्हें एक-दूसरे के बारे में पता चलती हैं? ये सब शादी से पहले मिलते समय क्यों नहीं पता चलता?**
- **राजेश पल्लवी को नीचा क्यों दिखाता था?**
- **पल्लवी और उसके भाइयों ने ऐसा क्या किया जिससे की राजेश को अपने छोटेपन का एहसास हुआ?**
- **क्या पैसों की अमीरी से ही दिल की अमीरी आ जाती है? क्यों या क्यों नहीं?**
- **क्या वित्तीय स्थिरता एक इंसान के लिए जरूरी है? क्यों या क्यों नहीं?**

क्यों बनें आत्मनिर्भर?

- श्री मुनव्वर अब्दुल्लाह

नमस्ते, मेरा नाम सुहाना है। मेरी माँ बचपन से ही बहुत सायानी थी। उनका घर के काम और सिलाई-बुनाई में बहुत मन लगता था। नाना-नानी मध्य-स्तर के परिवार थे, जहाँ खाने पीने की कभी कमी नहीं रही। माँ को पढ़ाई का ज़्यादा शौक नहीं था, नाना ने उन्हें स्कूल में डलवाया था लेकिन उन्होंने साल भर में ही अपना नाम कटवा लिया। एक दिन जब माँ एक रिश्तेदार के घर से वापस आ रही थी तो उन्हें सड़क के किनारे गन्दा सा, मैला सा, यहाँ-वहाँ से फटा हुआ एक टेडी बीयर दिखाई दिया। माँ को बड़ा प्यार भी आया और तरस भी आया क्योंकि वो गन्दा और फटा था, तो माँ ने उसे उठा लिया और अपने घर ले आयी।

घर आके उन्होंने अपना नया खिलौना नानी को दिखाया, नानी ने सिर्फ, "ठीक है!" कहा और अपने काम में व्यस्त हो गईं। लेकिन माँ को बड़ा प्यार आ रहा था उस पे, तो माँ ने सुई धागे से उसकी अच्छे से मरम्मत की, फिर उसकी धुलाई की, और एक बढ़िया और साफ़ टेडी बीयर बना दिया। माँ ने उसका नाम रखा लकी। वह हमेशा उसी के साथ खेलती रहती, जब मन करता उसी के साथ रहती। स्कूल का और घर का काम जल्दी खत्म करके उसी के साथ खेला करती।

एक दिन उनके घर में, दूर के एक गाँव से दो मेहमान आए, एक औरत और एक आदमी। नाना से बात करते हुए माँ ने उन्हें कहते हुए सुना की "मेरी बेटी की शादी तो हो गयी है, मेरा बोझ उतर गया है अब एक और ख्वाहिश है की मेरे बेटे की किसी अच्छी, सुन्दर और सुशील लड़की से शादी हो जाये, तो बस कृपा हो जाए।" नाना उनकी ये बात सुन कर खुश हो गए। वो जानते थे की ये आदमी पैसे वाले हैं, उनकी एक दुकान है, जहाँ ग्राहकों का आना जाना लगा रहता था।

फिर, माँ बताती थी की अचानक उसके अगले दिन से ही उनके पसंद का खाना, कपड़े वगैरह उनको मिलने लगे। ऐसा कुछ समय चलता रहा और आखिरकार शादी वाला दिन आ गया। सब लोग बहुत खुश थे, परेशान थी तो सिर्फ मेरी माँ। उन्होंने दुपट्टे के पीछे अपने लकी को छुपा के रखा हुआ था, और अंदर ही अंदर बहुत रो रही थी। उन्हें लग रहा था की अब लकी उनसे छूट जाएगा। उस दिन माँ की शादी हो गयी और जैसा उनको डर था, लकी भी उनसे छूट गया।

अब वो नए घर में गयी जहाँ सब लोग नए, नया रिश्ता, और नयी ज़िम्मेदारियाँ भी थी उनके ऊपर। वहाँ जा के माँ व्यस्त हो गयी, काम-काज के अलावा उनको अपनी पुरानी ज़िन्दगी को भूल कर नए को अपनाने का दबाव भी था। माँ ने अपने ससुरालवालों की देखभाल के लिए ही खुद को पूरी तरह से लगा दिया।

१४ साल की उम्र में माँ को उनका पहला बच्चा हुआ लेकिन कुपोषण के कारण उन्होंने उस बच्चे को खो दिया। माँ की इतनी उम्र नहीं थी की एक बच्चे को पैदा करने वाले दर्द को वो सह सके, इसलिए वो खुद बीमार रहने लगी। जब माँ १६ साल की हुई तब उन्होंने मुझे जन्म दिया।

माँ के लिए ये सब कुछ बहुत मुश्किल था लेकिन फिर भी उन्होंने खुद से ये वादा किया की लकी की तरह वो मुझे अपने से दूर नहीं होने देंगी। माँ मुझे एक अच्छा इंसान बनाने में लग गयी। उन्होंने मेरे लिए, ठीक अपने लकी जैसा एक टेडी बीयर भी सिला। अब मैं अपनी माँ की लकी और मेरा टेडी बीयर मेरा लकी। हम तीनों एक साथ खुश थे। वैसे, माँ ने कभी इस बारे में

बात नहीं की लेकिन उनकी शादी-शुदा ज़िन्दगी बहुत ज़्यादा कठिनाइयों से भरी हुई थी। मैंने खुद देखा है कि कैसे पापा और बाकी परिवार वाले माँ पर अत्याचार करते थे, उनको अपशब्द कहते थे। इसलिए हम तीनों ने अपनी ही एक अलग दुनिया बना ली थी, जहाँ हम तीन खुश थे।

एक दिन माँ ने अपना और मेरा सारा सामान बाँध लिया और नाना के घर चली आईं। घर पहुंच कर उन्होंने नाना को सबकुछ बताया की कैसे उनकी ज़िन्दगी बीत रही थी, लेकिन नाना माँ को उल्टा समझाने लग गए कि "ससुराल जा के बेटियों को समझौता करना पड़ता है, थोड़ा सा डाँट दिया ससुराल वालों ने तो उस पर घर छोड़कर नहीं आ जाते।" नाना उनके कुछ दिन के लिए रुकने से तो सहमत थे लेकिन हमेशा के लिए उन्हें रखने से मना कर दिया। अपने पिता को अपने खिलाफ देख कर माँ को काफी दुःख हुआ। लेकिन माँ ने भी ठान रखा था की वापस नहीं जाएंगी। उन्होनें नाना से कुछ दिनों का समय माँगा वहाँ रहने के लिए और उसी समय अपने लिए काम तलाशने लगीं, **लेकिन शिक्षा और काम का अनुभव न होने के कारण उन्हें काम नहीं मिल पाया। रोज़ नयी-नयी जगह जाती थीं लेकिन तब भी उन्हें काम नहीं मिला। शादी के बाद माँ की सारी सहेलियाँ भी छूट गयी थीं की किसी से मदद ले सके। आखिरकार उन्हें हार मान कर वापस अपनी दुखद ज़िन्दगी में, अपने ससुराल जाना पड़ा।**

चर्चा के बिंदु:

- **सुहाना की माँ बचपन में कैसी थी? वह शिक्षित क्यों नहीं थी?**
- **अपने रिश्तेदार के घर से वापस आते समय उन्होनें सड़क पर क्या देखा? उसके साथ माँ ने क्या किया?**
- **नाना से मिलने आए इंसान के बेटे के साथ क्या सोचकर माँ की शादी पक्की करवा दी गयी? इस तरह से रिश्ते पक्का करने के तरीके पर आपका क्या विचार है?**
- **सुहाना की माँ शादी वाले दिन क्यों उदास थी?**
- **सुहाना की माँ ने अपना पहला बच्चा किस कारण खो दिया? माँ के शरीर पर इसका क्या असर पड़ा?**
- **सुहाना की माँ ने ससुराल को हमेशा के लिए क्यों छोड़ दिया? नाना का क्या जवाब रहा इस बात पर?**
- **अगर कोई लड़की ससुराल से परेशान हो कर घर आ जाये, तो आपके हिसाब से माँ-बाप को क्या करना चाहिए?**
- **सुहाना की माँ को इतना प्रयास करने के बाद भी नौकरी क्यों नहीं मिली?**
- **अगर सुहाना की माँ शिक्षित होती तो क्या उनका नौकरी पाना थोड़ा और आसान हो जाता?**
- **अपनी परिस्थितियों को बदलने की चाह में कोई गलत बात नहीं है, लेकिन ऐसा कर पाने के लिए हमें किन तरह के कौशल की ज़रूरत है?**
- **अगर इन में से कोई दो कौशल भी सुहाना की माँ के पास होते तो इस कहानी का समापन किस तरह से अलग हो सकता था?**

तू मेरा बेटा नहीं मेरी बेटी है

- श्री दीपक कुमार शर्मा

एक जंगल में हाथियों का एक परिवार रहता था। वे सभी बहुत प्यार, सुकून और अच्छे से रहते थे। उनकी एक दादी थी जो बूढ़ी थी। अब जैसे जैसे समय आगे बढ़ता है, इन्हें पता चलता है की इनके घर में एक नया मेहमान आने वाला है। जब भी कोई नया मेहमान आने वाला होता है तो सब तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ होती है, इनके घर में भी वैसा ही हुआ। लेकिन एक दिन उनकी दादी ने बोला की "मुझे यकीन है, इस बार तुम्हारी कोख से एक हथनी ही जन्म लेगी।" यह सुनते ही, गर्भवती हथनी की खुशी दूर हो जाती है और वह सोचती है कि अगर वह एक हाथी को जन्म देती है तो क्या होगा ...

जैसे जैसे बच्चा पैदा होने की तारीख पास आती है, दादी हथनी जन्म लेने की लिए अलग-अलग जानवरों से सलाह ले कर आती है। कभी इस मंदिर में पूजा तो कभी उस मस्जिद में गन्ना चढ़ा कर आती है। अलग अलग पेड़-पौधों की पत्तियाँ खिलाती है अपनी बहू को ताकि घर में बेटी पैदा हो। दादी उत्तेजित रहती थी लेकिन उनके बहू और बेटे परेशान और उदास रहते थे। इसको देख परिवार का बड़ा बेटा टीकू माँ के पास आता है और बोलता है की "माँ हमारे घर में इतनी खुशियाँ आने वाली है, और आप इतनी परेशान हैं?" माँ काफी परेशान थी तो बिना कुछ छुपाये सब बता दिया की कैसे दादी घर में हथनी जन्म ले इसलिए इतना पूजा-पाठ कर रही हैं इसलिए वो परेशान हैं की कहीं हाथी पैदा होगा तो क्या होगा! टीकू ने कहा की "माँ, क्या मैं प्यारा नहीं? क्या मैं वो सारा काम नहीं कर सकता जो एक हथनी कर सकती है? मेरे अंदर क्या कमी है जो दादी कहती है की सिर्फ हथनी ही जन्म लेनी चाहिए? हाथी हथनी से कम होते हैं क्या? ये कैसी बात हुई? आज मैं दादी से बात करुँगा।" ऐसा कहते हुए टिकू कमरे से बाहर चला गया, माँ के लाख मना करने के बावजूद।

दिन बीतते गए, और दादी के मन में हथनी की चाह बढ़ती गयी। आखिर में टीकू से रहा नहीं गया और दादी से उसने पूछ ही डाला, **“दादी, ये कोई बात हुई, जो आप माँ से कहती रहती हैं की तेरी कोख से हथनी ही जन्म लेगी! आपको पता है, बेटा हो या बेटी, ये पुरुष पर निर्भर करता है, महिला पर नहीं।** मेरी माँ कितनी परेशान रहती है, पता है आपको?”

दादी बोली, “तू बड़ा आया मुझे सिखाने वाला। हमारे बाद वंश चलाने का काम सिर्फ एक हथनी ही कर सकती है। अगर हथनी न हुई तो हमारा वंश ही खत्म हो जाएगा।” टीकू ने जवाब दिया, “ये कोई बात हुई? अगर सारे हाथी खत्म हो गए और जंगल में सिर्फ हथनियाँ ही बचीं तो वंश कैसे आगे बढ़ेगा? दादी बोली, “जा पागल, जा खेल।" ये बोल कर दादी टीकू के भोलेपन पर हंसने लगी लेकिन टीकू अपनी बात पर अड़ा रहा और दादी खुद उठ कर चली गयी।

आखिरकार वो दिन आ ही गया जब टीकू के घर नया मेहमान आएगा। उसकी माँ को ज़ोर का दर्द हो रहा था और परिवार के बाकी हाथी उसे भाग कर अस्पताल ले जा रहे थे। अस्पताल में जब टीकू की मम्मी को बच्चा होने वाला था, दादी कमरे के बाहर बैठी थी, तब वहाँ एक चिड़िया आयी और पूछा, "अरे दादी सब ठीक है ना?" दादी बोली, "अरे नहीं नहीं चिड़िया रानी जी, ऐसी कोई बात नहीं है। हमारे घर नयी मेहमान आने वाली है इसलिए हम अस्पताल आये हैं। दुआ करो बस की बेटी पैदा हो जाए।” “ओह् अच्छा अच्छा! बधाई हो, वैसे मैं आपसे मिलने आने वाली थी।”

दादी ने पूछा , “क्यों क्या टीकू ने कोई शरारत की है?”

चिड़िया रानी बोली, “नहीं नहीं दादी, उस छोटे से बच्चे ने तो इतना साहसी काम करके दिखाया है जिसकी उससे उम्मीद नहीं थी। एक भैंस तालाब में फंस गयी थी तो टीकू ने अपनी

सूंड से खींच के उस बच्चे की जान को बचाया। उसने अन्य जानवरों को भी इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित किया। एक छोटे से बच्चे ने इतना साहस दिखाया है जो बड़े-बड़े नहीं कर पाते है! देखो आपका कितना सायाना बच्चा है।“

यह सुन के पूरा परिवार आश्चर्यचकित और अविश्वास से भर गया। "अरे! ये क्या! एक छोटे से बच्चे ने इतना बड़ा काम कर दिया! ये कैसे कर सकता है! ऐसे हिम्मत और ताकत कि उम्मीद तो लड़कियों से होती है! ये तो लड़का है!" सब इस तरह की बातें करने लगे। ये सुन के दादी सीधा टीकू की पास आती है, और उसे गले लगाकर कहती है, “आज से तू मेरा बेटा नहीं मेरी बेटी है.. "

चर्चा के बिंदु:

- **टीकू का परिवार कैसा था?**
- **उसके घर में आने वाले नए मेहमान को लेकर दादी क्या चाहती थी?**
- **दादी की बातें सुनकर टीकू की मम्मी को कैसा लगता था?**
- **क्या इस तरह की बात आपने अपने घर में या आसपास सुनी है किसी नए मेहमान को आने को ले कर?**
- **दादी को बेटी ही क्यों चाहिए थी?**
- **टीकू को दादी की बातें कैसी लगती थी?**
- **अगर टीकू आखिर में बहादुरी का एक काम ना करता तो क्या उसे तब भी दादी की इज़्ज़त मिलती? किसी का प्यार और इज़्ज़त पाने की लिए क्या इस तरह अलग से कोई काम करना ज़रूरी है?**
- **आखिर में दादी टीकू से कहती है की वो उसका "बेटा नहीं बेटी है"। दादी इसे तारीफ़ के तौर पर कह रही थी या ताना?**
- **आपके हिसाब से ये तारीफ हुआ या ताना?**
- **क्या इस कहानी से मिलती जुलती घटनाएं आपने अपने घरों में या आसपास देखीं हैं? विस्तार में बताएं।**
- **हमारे घरों में कई बेटियों से तारीफ में कहा जाता है की "तुम मेरी बेटी नहीं बेटा हो", इस कहानी को सुनने के बाद बताएँ कि अब ये वाक्य आपको कैसा लगता है?**

झारखंड की कहानियाँ

१. साइबर लव - सुश्री मंजू कुमारी

२. चुन्नी की दुनिया में कोई मुन्नी नहीं - सुश्री पूजा कुमारी

३. हिरनी और उसकी सूझ-बूझ - सुश्री सुषमा कुमारी

४. छोटी चुहिया! - सुश्री जिया नाज़

५. उलट पुलट - श्री प्रदीप कुमार कोल

६. लोमड़ी भी चले भेड़ चाल ! - सुश्री किरन कुमारी

७. छिपकलिंग के वासी - झारखण्ड की सुश्री सुधा कुमारी के पिता, श्री बीरेंद्र माली जी से प्रेरित कहानी

साइबर लव

- सुश्री मंजू कुमारी

चेतावनी - यौन शोषण और मानव तश्तरी के संकेत शामिल हैं।

प्रदीप के पिता किसान हैं और माता बाजार में सब्जी बेचने का काम करती है। माला के पिता ट्रक ड्राइवर है और माता एक छोटे से ढाबे में खाना बनाती हैं।

दोनों ही बच्चों के माता पिता अपने काम को लेकर व्यस्त रहते थे। स्कूल के बाद घर और घर से ट्यूशन जाते थे दोनों, और स्कूल और ट्यूशन के बीच अपना समय ये ऑनलाइन बिताते थे। जब से उनकी पढ़ाई ऑनलाइन होने लगी, तब से ही दोनों के माता-पिता ने बड़ी मेहनत से और भी ज्यादा काम करके उनको मुश्किल से एक-एक स्मार्ट फोन खरीद कर दिया था। पहले तो दोनों ही इसे पढ़ाई के लिए इस्तेमाल करते थे पर जल्द ही उन्हें समझ आ गया कि उनके माता-पिता, दोनों ही अनपढ़ है, तो फोन पर वे दोनों क्या करते हैं, यह उन्हें पता ही नहीं चलेगा। इसलिए अब उन्होंने स्मार्टफोन का फायदा उठाते हुए और भी बहुत कुछ करना शुरू कर दिया।

ऐसे ही एक दिन एक सोशल मीडिया साइट पर प्रदीप और माला दोनों एक दूसरे से मिले। दोनों एक दूसरे से बिल्कुल अंजान थे। वे अलग-अलग शहर में रहते थे। इससे पहले उनकी एक-दूसरे से कभी बात नहीं हुई थी और ना ही कभी मिले थे। सोशल मीडिया पर उनका पहला परिचय हुआ। वहाँ पर उनकी बातें होने लगी। दोनों एक दूसरे से अपने बारे में बहुत सारी बातें करते थे। समय के साथ दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए। उनकी दोस्ती समय के साथ और अच्छी हो गई और धीरे -धीरे उनको एक दूसरे से प्यार हो गया।

एक दिन प्रदीप ने माला को अपनी एक सुंदर सी तस्वीर भेजने को कहा जिसे वह अपने फोन का वॉलपेपर बनाना चाहता था। माला को इसमें कुछ गलत नहीं लगा, उसने प्रदीप को अपनी एक सुंदर सी तस्वीर भेज दी और फिर प्रदीप ने भी उससे अपनी एक अच्छी तस्वीर साझा की। माला प्रदीप के फोटो को देखकर बहुत खुश हुई और फिर उसने प्रदीप से वीडियो कॉल पर बात करने के लिए ज़िद करना शुरू किया। प्रदीप अक्सर अलग-अलग बहाने बनाकर मना करने लगा- कभी घर में और लोग हैं, कभी लाइट नहीं है, कभी बाहर हैं बोल कर टालता रहा। फिर एक दिन प्रदीप ने माला से कहा कि अगर वह सच में प्रदीप से प्यार करती है तो उसे अपनी बिना कपड़े वाली फोटो भेजना पड़ेगा। माला हँस पड़ी इस बात पर, की यह कैसी बात हुई, लेकिन उसने इस बात को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया, उसे लगा प्रदीप मज़ाक कर रहा है।

अगले कुछ दिनों में माला और प्रदीप के बीच में झगड़े बढ़ने लगे। माला कहती की "तुम अगर मुझसे प्यार करते तो मुझे वीडियो कॉल जरूर करते।" और प्रदीप कहता की "तुम मुझसे सच्चा प्यार करती और मुझ पर विश्वास करती तो तुम अपनी फोटो भेज देती जैसी उस दिन मैंने तुमसे माँगा था।" आखिर में अपने झगड़ों से परेशान होकर दोनों ने सुलह कर लिया और प्रदीप ने आखिरी बात रखी कि अगर माला ने उसे अपनी एक बिना कपड़ों वाली फोटो भेजी तो प्रदीप उसी हफ्ते माला से मिलने आएगा। माला उत्तेजित हो गई लेकिन उसके मन में यह विचार भी आया कि "यह तो मेरे उम्र का लड़का है। इसे अकेले कौन आने देगा?" इसके जवाब में प्रदीप ने माला को अपनी टिकट का फोटो भेजा। माला बहुत ही खुश हुई कि वह अपने जिंदगी के पहले प्यार से मिलने वाली है। प्रदीप ने अब यह तक बोल दिया कि "मैं तुमसे सच्चा प्यार करता हूँ इसलिए मैंने तुमसे मिलने के लिए टिकट खरीद लिया। तुमसे मिलने के लिए मैंने अपने माता-पिता से झूठ बोला। लेकिन तुम तो टाइमपास कर रही थी मेरे साथ इसलिए जो एक चीज मैंने मांगा वह तुमने मुझे अभी तक नहीं भेजा।"

माला तो पहले से ही प्रदीप से मिलने के लिए उत्तेजित थी। उसने सोचा कि “अगर प्रदीप अपने परिवार से मेरे लिए झूठ बोलकर मुझसे मिलने आ रहा है तो क्या मैं उसे अपनी एक फोटो तक नहीं भेज सकती। वैसे भी मेरा सब कुछ तो उसी का है। एक फोटो भेजने में क्या दिक्कत है?” माला ने अपनी एक फोटो प्रदीप को भेज दी। उसके बाद दोनों की बातें और बढ़ गई। दोनों ने यह भी तय किया कि अब जब भी वे मिलेंगे वे मंदिर में जाकर शादी कर लेंगे।

आखिरकार मिलने का दिन आ ही गया। माला बहुत खुश थी। उसने घर के सारे काम जल्दी से निपटा लिए। पिछले हफ्ते ही वह पार्लर से होकर आई थी। उसका चेहरा चमक रहा था। उसने अपनी सबसे पसंदीदा सलवार कमीज निकाली। बाल बनाया, आँखों में काजल लगाया और माथे पर एक छोटी सी बिंदी। आज से वह अपने प्यार की पत्नी बनने वाली थी। माला बहुत ही खुश थी।

प्रदीप का फोन आया और माला उससे मिलने के लिए पास के एक होटल में गई। उसने प्रदीप को दोबारा फोन लगाया। प्रदीप ने फोन पर रहते हुए उसे होटल के बगल की गली में एक घर तक आने को कहा। **माला इतनी उत्साहित थी की उसने ध्यान ही नहीं दिया कि कब वह मुख्य सड़क से हटकर एक सुनसान गली में पहुंच गई थी।** वह घर तक पहुंची। उसने प्रदीप को आवाज दी, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे किसी और आदमी ने दरवाजा खोल कर कहा था, "अंदर आओ माला"।

वह अंदर गई और पूछा, "तुम मेरा नाम कैसे जानते हो? प्रदीप कहाँ है?"

"मैं ही तो प्रदीप हूँ" बोलकर वह आदमी मुस्कुराया और पीछे से किसी ने उस कमरे का दरवाजा बंद कर दिया...

चर्चा के बिंदु:

- **माला और प्रदीप के माता-पिता क्या काम करते थे?**
- **माला और प्रदीप कहाँ मिले और उनका रिश्ता कैसे बना?**
- **माला प्रदीप को अपनी तस्वीर भेजने के लिए क्यों राज़ी हो गयी?** (इस प्रश्न के समय आपको इस बात का ध्यान रहें कि आप अपने समूह को यह बार-बार याद दिलाएँ की माला ने प्यार में डूब कर यह निर्णय लिया था। यह अत्यंत आवश्यक है कि इस विषय पर किशोर किशोरियाँ खुले मन से आपके साथ चर्चा करें। इसलिए अगर आप माला का मजाक उड़ाएंगे या उसे बेवकूफ कहेंगे तो आप एक महत्वपूर्ण चर्चा नहीं चला पाएंगे।)
- **आपके ख्याल से, प्रदीप वीडियो कॉल पर आने से क्यों टाला करता था?**
- **इस कहानी को अगर मैं आपके ऊपर छोड़ू, तो आप इसका समापन कैसे करेंगे, दरवाजा बंद होने के बाद से?**
- **क्या आप किसी और को जानते हैं जिनको ऑनलाइन प्यार हुआ हो? उनका अनुभव कैसा रहा?**
- **ध्यान दें:** फैसिलिटेटर अपने समूह से मानव तस्करी के बारे में अवश्य चर्चा करें कि कैसे प्यार में फंसाकर लड़कियों का अपहरण करके उन्हें बेच दिया जाता है। साइबर लव में या आमतौर वाले प्रेम में भी कैसे प्यार के खातिर लड़कियाँ अपने बॉयफ्रेंड्स को अपनी व्यक्तिगत तसवीरें और वीडियोस भेजती हैं। लेकिन ब्रेकअप के बाद या फिर बॉयफ्रेंड को अपना मनचाहा न करने देने पर कैसे, उनके खुद के बॉयफ्रेंड्स उन्हें इन वीडियो और फोटो द्वारा ब्लैकमेल करते हैं। यह भी बताएँ की ऑनलाइन चैटिंग से हम कभी भी सामने वाले इंसान को नहीं समझ सकते हैं और ना ही उसके बारे में वास्तविक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। बहुत ही आसान होता है किसी और की तस्वीर डाउनलोड कर के उसे अपना फोटो बता के दिखाना, आदि बातों पर चर्चा करें।

चुन्नी की दुनिया में कोई मुन्नी नहीं

- सुश्री पूजा कुमारी

चुन्नी बहुत ही चंचल और बहादुर बच्ची थी। उसका टुन्नी नाम का एक छोटा सा दोस्त था। वे दोनों साथ में ही खेलते थे लेकिन जहाँ चुन्नी बहुत बहादुर थी, वहीं टुन्नी उतना ही डरपोक। चुन्नी को कॉक्रोच, चूहे से खेलने में डर नहीं लगता था जबकि टुन्नी उनसे डर-डर के रहता था।

एक दिन संध्या के समय चुन्नी और टुन्नी अपने अन्य साथियों के साथ खेल रहे थे की तभी दादी ने चुन्नी को आवाज़ लगायी की वह कहाँ है? चुन्नी तुरंत "आयी" कहते हुए घर के अंदर भागी। जैसे ही वह घर पहुंची वैसे ही वह अपनी मम्मी की गोद में चढ़ गयी। उसकी मम्मी पेट से थी।

दादी ने चुन्नी से कहा की अगर वह ऐसा करेगी तो उसके आने वाले भाई को तकलीफ़ होगी। यह सुनते ही वह तुरंत बोली "मेरे भाई को कोई तकलीफ़ नहीं होनी चाहिए!" और गोद से उतर गयी। वह जाकर अपनी दादी के पास बैठ जाती है और उनसे अपनी चोटी बनाने को कहती है। दादी और चुन्नी चोटी बनाते-बनाते अपना सबसे पसंदीदा गाना "...चंदा मामा दूर के..." ज़ोर से खिल-खिलाते हुए साथ में गुन-गुनाते हैं। थोड़ी देर बाद वे दोनों परिवार के अन्य सदस्यों के साथ भोजन करते हैं, और उसके बाद सब अपने-अपने कमरों में चले जाते हैं।

थोड़ी देर बाद चुन्नी की नींद दादी की आवाज़ से खुलती है।

दादी – “अगर अस्पताल में जाँच में लड़की निकली तो बच्चे को गिरा दिया जाएगा। "

माँ चुप थी, लेकिन उनके सिसकने की आवाज़ चुन्नी के कमरे तक आ रही थी। फ़िर थोड़ी देर में माँ रोते हुए अपने कमरे में चुन्नी के पास आती है। चुन्नी अपनी माँ से उसके रोने का कारण पूछती है। पर वह "कुछ नहीं" बोल कर टाल देती हैं और चुन्नी को सोने के लिए कहती है।

फ़िर चुन्नी अपनी माँ से प्रश्न करती है कि, "माँ मैंने दादी को बच्चा गिराने की बात कहते हुए सुना, बच्चा गिराना क्या होता है?"

उसकी माँ फिर से उसे सोने के लिए कहती है, लेकिन फ़िर चुन्नी वही प्रश्न करती हैं। उसके बार-बार जिद्द करने के बाद उसकी माँ रोते-रोते कहती है की "लोग ना जाने क्यों लड़कियों को कमज़ोर समझते हैं। इस समाज को ना जाने क्यों एक लड़का ही चाहिए।" चुन्नी को माँ की बात समझ नहीं आयी और वह फ़िर से उनसे कहती हैं - "मतलब?"

उसकी माँ सिसकते हुए भारी आवाज़ में उसे बताती है कि “हम अगर डॉक्टर के पास मेरे पेट की जाँच कराने गए और डॉक्टर ने कहा की पेट में लड़की हैं तो इसे पेट से बाहर आने के पहले ही मार दिया जाएगा।"

चुन्नी पूछती है, “तो क्या हमारे घर में दादी निर्णय लेती हैं कि किसका जन्म होना चाहिए और किसका नहीं?"

माँ, "वैसा ही कुछ समझो।"

चुन्नी यह सुनते ही बोल उठती है, "अरे वाह! दादी तो फ़िर भगवान जैसे हुई! आप ही कहती हैं की यह भगवान तय करते हैं कि दुनिया में क्या होगा और क्या नहीं, और ऐसे ही इस दुनिया में दादियाँ ये निर्णय लेती हैं। तो इसका मतलब लड़कियाँ कमज़ोर नहीं हैं। क्योंकि दादी भी तो लड़की हैं, और इसका यह मतलब है की लड़कियाँ भी ताक़तवर होती हैं। एक दिन मैं भी दादी जैसे ताकतवर लड़की बनूँगी। चुन्नी अपनी दादी के बारे में यह सब जानकर उनसे बहुत प्रभावित हुई। उसने अपनी सबसे करीबी सहेलियों को भी बताया की दादियाँ कितनी ताकतवर होती हैं। वे किसी महामानव से कम नहीं होती। उनके पास भगवान की तरह यह तय करने की शक्ति होती है की कौन जियेगा और कौन नहीं।

चुन्नी के घर में उसके अलावा कोई और बच्चा पैदा ही नहीं हुआ। उसके बाद जब भी माँ पेट से होती, दादी उनके होने वाले बच्चे का लिंग जाँच करवाती। हर बार बेटी निकलती और दादी उस बच्चे को हर बार गिरवा देती। चुन्नी भी दादी का साथ देती। उसके मन में भी यह बात घर कर गयी थी की उसे केवल एक भाई चाहिए, बहन नहीं।

समय के साथ इन्हीं कारणों से चुन्नी अपनी दादी के और करीब और माँ से दूर होती रही। उसे कभी-कभी इस बात पर दुविधा और उलझन होती कि माँ और दादी दोनों ही औरतें हैं, फ़िर दादी इतनी शक्तिशाली और माँ इतनी कमज़ोर क्यों हैं? माँ हर बच्चे को समान रूप से प्यार कर लेती है फ़िर वह चाहे लड़का हो या लड़की। किन्तु दादी स्पष्ट रूप से कहती है की उन्हें लड़का ही चाहिए, क्योंकि वंश को आगे बढ़ाने वाले तो लड़के ही हैं। वही ब्याह कर के दूसरे घर की लड़की को अपने घर लाते हैं। जो घर की आने वाली पीढ़ी को जन्म देती हैं, जिससे खानदान का नाम आगे बढ़ता है।

बहुत सालों बाद, जब चुन्नी दादी बनी, वो बिल्कुल अपनी दादी की तरह थी- शक्तिशाली। उसने भी अपनी बहू के पेट से होने पर उसके होने वाले बच्चे के लिंग की जाँच करायी और जितनी बार गर्भ में बेटी निकली, उन्होंने उस बच्चे को गिरवा देने का निर्णय लिया। समय के साथ चुन्नी को एक पोता हुआ। उसने बड़े ही लाड़-प्यार से अपने पोते को पाला-पोसा और उसे बड़ा किया। जब चुन्नी का पोता २५ साल का हुआ तो सभी घरवालों ने तय किया कि अब उसकी शादी कर देनी चाहिए। चुन्नी का पोता भी अपनी दादी से बहुत प्रेम करता था। उसने कहा की उसकी दादी जिसे भी उसके लिए चुनेगीं, वह उससे विवाह कर लेगा।

चुन्नी इस बात से बहुत खुश हुई। उसने बिना और समय गवाए अपने पोते के लिए अपने ही बिरादरी में एक लड़की की तलाश करना शुरू किया। तलाश करते-करते कई दिन बीते, कई माह बीते और अब एक वर्ष होने को आया है लेकिन चुन्नी को अपने पोते के लिए एक भी लड़की नहीं मिली। ऐसा नहीं था की चुन्नी को कोई लड़की पसंद नहीं आ रही थी, वास्तविकता यह थी की चुन्नी को विवाह हेतु एक भी लड़की नहीं मिल रही थी। उसकी बिरादरी में अब कोई लड़की ही नहीं बची थी।

८ साल की थी चुन्नी जब उसने अपनी दादी की 'शक्ति' के बारे में जाना था, और तब से अब जब वह ६५ साल की हो चुकी थी उसने अपनी बहुत सारी सहेलियों को अपनी सोच से प्रभावित किया था। उसकी सहेलियों ने अपनी दूसरी सहेलियों को और अपने परिवार और समाज को। ऐसा करते-करते एक समय ऐसा आया की उनकी बिरादरी और समाज से दो पीढ़ियों में ही लड़कियाँ गायब हो गयी।

चर्चा के बिंदु:

- **दादी और माँ के बीच क्या चर्चा हो रही थी जिसे सुनकर चुन्नी जाग गयी?**
- **चुन्नी को दादी की सोच क्यों अच्छी लगी?**
- **अपने पोते के लिए बहू ढूंढ़ते समय चुन्नी को क्या समस्या आयी? क्यों?**
- **चुन्नी अपनी दादी से प्रभावित हुई और चुन्नी से उसकी बाकी सहेलियाँ। देखा-देखी हम समाज में एक दूसरे से और कौन-कौन सी बातें सीख जाते हैं?**
- **लिंग आधारित गर्भपात की समस्या हमारे समाज में है या नहीं?**
- **कल्पना कीजिये एक ऐसे समाज का, जहाँ से सारी लड़कियाँ गायब हो गयी, तब हमारा समाज कैसा दिखता?**
- **क्या लड़कियों के बिना हम अपने वंश को आगे बढ़ा सकते हैं?**
- **कल्पना कीजिये एक ऐसे समाज का, जहाँ बेटी के जन्म के बदले, बेटे के जन्म को गलत माना जाता और उसको गिराया जाता? तब हमारा समाज कैसा दिखता?**
- **इन्हीं कल्पनाओं के आधार पर बताइये की क्या लड़के या लड़कियों में से किसी को भी संसार या वंश को आगे बढ़ाने के लिए हम ज़्यादा महत्व दे सकते हैं?**

हिरणी और उसकी सूझ-बूझ

- सुश्री सुषमा कुमारी

एक घना जंगल था, वहाँ एक होनहार और प्रखर बुद्धि की हिरणी अपने परिवार के साथ रहती थी। उसके परिवार में उसके माता-पिता तथा उसकी तीन बहनें थीं। हिरणी की बहनों का विवाह बहुत कम उम्र में पास वाले जंगल में करा दिया गया था। जो कि हिरणी अभी छोटी थी तो उसे अपने माता पिता से थोड़ी बहुत स्वतंत्रता प्राप्त थी। वह होशियार और बहुत तेज़-तर्रार थी। दौड़ने में उसका कोई जवाब नहीं था। हिरनी को पढ़ना लिखना भी बहुत पसंद था। वह विद्यालय साइकिल से जाती थी। हिरणी का एक सपना था कि वह किसी भी खेल को लेकर अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपने जंगल का प्रतिनिधित्व करे।

संध्या के समय वह जंगल के मैदान में हाफ शर्ट और शॉर्ट्स पहनकर फुटबॉल खेलने जाती। इसके कारण कई बार हिरणी और उसके माता-पिता को जंगल में रहने वाले अन्य जानवरों के कटु वचनों का सामना करना पड़ता था। अगल-बगल के जानवर उसे ताना देते थे। वे अक्सर तंज़ कसते कि “इसके माता-पिता ने इसे अच्छे संस्कार नहीं दिए हैं।“, “यह हिरणी छोटे कपड़े जंगल के हिरनों को रिझाने के लिए पहनती है!”, “लड़कों का खेल खेलती है!”, “इसका चरित्र ठीक नहीं है।”

लोगों की बातें सुन-सुनकर हिरणी के माता-पिता का भी मन मैला हो गया था। उन्हें हिरणी का फुटबॉल खेलना, छोटे कपड़े पहनना, विद्यालय साइकिल से जाना आदि अब बिल्कुल भी नहीं भाता था। दूसरी ओर रिश्तेदार भी उसके माता-पिता पर उसकी पढ़ाई छुड़ाकर उसके विवाह का दबाव बनाते थे। वे कहते की “प्रकृति ने हिरणियों को खेलने कूदने के लिए नहीं बनाया है। हिरणियाँ भला फुटबॉल कैसे खेल सकती हैं? अपनी हिरणी को एक कुशल गृहस्थ बनने के लिए प्रशिक्षण दो। उसकी उम्र अब झाड़ू पोछा, कपड़ा धोने, खाना बनाना और अन्य घरेलु काम सीखने की है। “

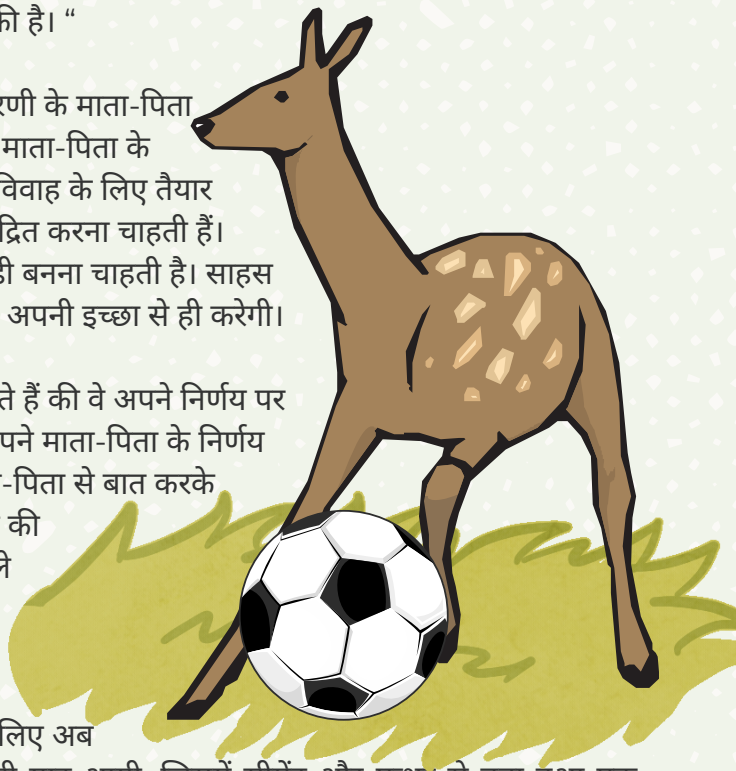

समय बीतता गया। हिरणी अब १४ वर्ष की हो चुकी थी। एक दिन हिरणी के माता-पिता ने उसके विवाह का निश्चय किया। हिरणी ने हिम्मत जुटाई और अपने माता-पिता के इस निर्णय के विरोध में खड़ी हो गई। उसने उनसे कहा की वह अभी विवाह के लिए तैयार नहीं हैं और अभी वह अपना पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई और खेल पर केंद्रित करना चाहती हैं। वह अभी भी पढ़ना चाहती है। इस जंगल की महिला फुटबॉल खिलाड़ी बनना चाहती है। साहस का परिचय देते हुए वह यह भी कहती है की भविष्य में भी वह विवाह अपनी इच्छा से ही करेगी।

हिरणी के माता-पिता उसकी बात सुनने से इंकार कर देते हैं और कहते हैं की वे अपने निर्णय पर अटल हैं। हिरणी अगले दिन विद्यालय जाकर अपने अध्यापकों को अपने माता-पिता के निर्णय के बारे में बताती है। वह उनसे अनुरोध करती कि वे सभी उसके माता-पिता से बात करके उनको समझाने का प्रयास करें की हिरणी को अभी पढ़ाई और खेलने की स्वतंत्रता दें। हिरणी के अध्यापक-अध्यापिका उसी जंगल के रहने वाले थे। उन्हें पता था की जंगल में तो 'ऐसे ही होता है' इसलिए उन्होंने भी हाथ धोकर अपनी इस ज़िम्मेदारी से मुँह मोड़ लिया।

हिरणी पूरी तरह से अकेले पड़ गयी थी। अपनी समस्या के निदान के लिए अब उसे कोई नया मार्ग ढूंढना था। उसे स्कूल में पढाई गयी एक कहानी याद आयी, जिसमें सीमेंट और पत्थर से बना हुआ एक मजबूत कुंआ था जिस पर एक रस्सी बंधी थी। रस्सी वैसे तो कुवें के पत्थर से कमज़ोर थी लेकिन महीनों एक ही जगह बाल्टियों के साथ लग कर खिंचते-खिंचते मजबूत पत्थर पर भी कमज़ोर रस्सी का निशान बन गया था। उसने इस कहानी से प्रेरणा लेते हुए एक योजना बनायीं।

हिरणी अपनी बात सामने रख कर माता-पिता से लड़ाई करने के बदले, रोज़ उनके साथ थोड़ा वक़्त बिताती, उनके हर काम में हाथ बँटाती और अपनी दिनचर्या भी उनसे बताती। धीरे-धीरे वह अपने माता-पिता को यह विश्वास दिलाना चाहती थी कि वह बिल्कुल वैसे ही पुरानी वाली हिरनी है। इसका असर दिखने लग गया। करीब महीने भर में ही माता-पिता का बरताव

हिरणी की तरफ बदल गया। उनका भरोसा हिरणी पर और भी ज्यादा दृढ़ हो गया। हिरणी उन्हें अपनी दिनचर्या के बारे में खुलकर सब बताती थी। उनसे अपने सपने, उसके लिए आवश्यक मेहनत आदि पर भी बात करती। उन्हें दोबारा से यह यकीन भी आने लगा कि उनकी बेटी कुछ भी गलत नहीं कर रही है। धीरे-धीरे भरोसे का फायदा उठाते हुए हिरणी ने अब अपनी सहेलियों के किस्से भी घर पर सुनाए। उसने बताया कि कैसे कुछ लड़कियाँ झूठ बोलकर खेलने आती थी क्योंकि उनके माता-पिता भी उन्हें खेलने से मना करते थे। लेकिन वह आभारी थी कि उसके माता-पिता ऐसे नहीं है। उसे पूरी छूट देते थे। समय के साथ उसने यह भी बताना शुरू किया की कैसे उसके जानने वाली सहेलियाँ अपनी शादी में खुश नहीं हैं। क्योंकि बचपन में ही उनकी शादी करा दी गई। वे उस उम्र में किसी दूसरे हिरन के साथ बंधन में बंध गए जब वे बहुत छोटे थे और उन्हें कोई समझ नहीं थी, और अब दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे के साथ नहीं रहना चाहते और दोनों के घरवाले भी उनके तलाक के लिए तैयार नहीं हैं।

अपने माता-पिता का प्यार और भरोसा, एक जिम्मेदार हिरणी की छवि बनाते हुए, जीतने के बाद, हिरणी ने बाल-विवाह और सपने पूरे ना होने के डर को बहुत ही प्रेम से माता-पिता को समझाया। यह समझाने में भले ही उन्हें ७-८ महीने लग गए, लेकिन उन्हें हिरणी का पक्ष भी समझ आ गया। माता-पिता ने स्वयं ही ठान लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए वह समाज के दबाव में आकर अपनी होनहार और जिम्मेदार बेटी के सपनों को नहीं तोड़ेंगे।

चर्चा के बिंदु:

- **हिरणी का परिवार कैसा था?**
- **हिरणी का क्या सपना था?**
- **उसके खेलने-कूदने को लेकर समाज के लोगों का क्या कहना था?**
- **हिरणी के माता-पिता ने कब उसका साथ देना बंद कर किया और क्यों?**
- **माता-पिता के शादी के लिए दबाव देने पर, हिरणी की पहली प्रतिक्रिया क्या थी?**
- **आखिर में उसने कौन सी तरकीब निकाली जिससे हिरणी के माता-पिता उसकी बात मान गए?**
- **अक्सर शादी या पढ़ाई को लेकर कई किशोरियों के घर में झगड़े बढ़ जाते हैं। सूझबूझ से काम लेकर हम ऐसी कौन सी चीजें कर सकते हैं जिससे के हिरणी की तरह हम भी अपने माता पिता को मना लें?**

छोटी चुहिया!

- सुश्री जिया नाज़

यह कहानी एक चुहिया और उसके परिवार की है। चुहिया एक छोटे से बिल में अपने माता -पिता के साथ रहती थी। उसके दो भाई भी उसके साथ रहते थे। एक भाई उम्र में उससे छोटा था और एक भाई उससे बड़ा था। आर्थिक रूप से चुहिया का परिवार बहुत कमज़ोर था।

चुहिया की उम्र अभी बहुत ही छोटी थी। वह रोज़ अपने पड़ोस के बिलों में रहने वाले चूहों के साथ खेलने निकल जाया करती थी। जिसके कारण उसे कई बार अपने भाइयों से डांट पड़ती थी। कई बार इस चक्कर में उसकी पिटाई भी हो जाती थी। समय के साथ चुहिया बड़ी होने लगी। चुहिया की माँ उसे बिल से बाहर जाने के लिए मना करती थी। वे उसे पूरे शरीर को ढकने वाले बड़े कपड़े और दुपट्टा पहनने को कहती थी। उसे चूहों के साथ खेलने से भी मना कर दिया गया था। उसको लेकर उसके घर का माहौल अब पूरी तरह से परिवर्तित हो चुका था। उसे हर चीज के लिए रोका-टोका जाता था। चुहिया को इतना रोकना-टोकना समझ नहीं आता था। उस पर घरवाले नजर भी रखते थे और कई बार तो उसे पूरे परिवार के क्रोध का पात्र भी बनना पड़ता था। चुहिया के भाइयों के लिए बात बिलकुल अलग थी। जैसे जैसे वे बड़े होते रहे, उन्हें हर चीज़ में ज्यादा आज़ादी दी जाने लगी। वे अपनी मर्ज़ी से घर आते और जाते और जिसके साथ चाहें उसके साथ ही खेलते।

एक दिन चुहिया के परिवार को दुख के काले बादलों ने घेर लिया। चुहिया के पिता का देहांत हो गया। उसका पूरा परिवार दुखों के बोझ तले दब गया। परिवार वाले पहले से ही कई परेशानियों का सामना कर रहे थे किंतु पिता के अचानक चले जाने से परिवार बिखरने लगा। चुहिया के दोनों भाई भी बेरोजगार थे। दिन प्रतिदिन घर की स्थिति खराब हो रही थी। घर के बिगड़ते हालातों को देखकर चुहिया की माँ बहुत परेशान रहने लगी। अपनी माँ और घर की स्थिति देख कर चुहिया भी परेशान हो जाती थी। वह इन परेशानियों का हल ढूंढना चाहती थी परन्तु वह मजबूर थी, क्योंकि वो अभी भी छोटी सी थी। घर के हालातों को ठीक करने के लिए चुहिया के मन में कई बार बाहर जाकर पैसे कमाने का ख्याल आता था किंतु उसे घर से बाहर निकलने नहीं दिया जाता था। घर के बिगड़ते हालातों से तंग आकर चुहिया का छोटा भाई अपनी माँ से झगड़ा कर के घर से भाग गया। बड़ा भाई भी शादी करके अपनी पत्नी के साथ माँ को छोड़कर अलग रहने लगा। बढ़ती परेशानियों का प्रभाव चुहिया की माँ के स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा था। वे अक्सर बीमार रहने लगी और शारीरिक रूप से बहुत कमज़ोर हो चुकी थी।

अपने परिवार की ऐसी स्थिति देखकर चुहिया तंग आ चुकी थी। उसने अपनी माँ से जाकर कहा, "माँ , घर बैठने से कुछ नहीं हासिल होगा। मैं बाहर जाकर रोज़ी-रोटी कमाना चाहती हूँ, मेहनत करना चाहती हूँ। किसी के सहारे और मदद का इंतजार करने के बजाय स्वयं अपने लिए और आपके लिए कुछ करना चाहती हूँ।"

चुहिया की माँ यह सब सुनकर क्रोधित हो जाती हैं और कहती है, "तुम बाहर जाकर काम करोगी तो लोग क्या कहेंगे? वे मुझ पर थूकेंगे कि मैं बेटी का कमाया पैसा खा रही हूँ। नहीं-नहीं! मैं यह पाप नहीं कर सकती हूँ।"

चुहिया अपनी माँ की एक भी बात नहीं सुनती है, और बाहर जाकर मेहनत-मज़दूरी करने लगी। वह पैसे कमाने लगी। वह अपना और अपनी माँ का भरण पोषण करती और अपने पूरे घर का ख्याल रखने लगी। धीरे-धीरे उसकी माँ भी उसे समझने लगी। उसे अब बाहर जाने से नहीं रोकती-टोकती थी। चुहिया सुबह काम पर जाती और शाम को घर आती थी।

आते-जाते कुछ चूहे उसे छेड़ते थे, उस पर अभद्र टिप्पणी भी करते थे। चुहिया के पड़ोसी भी चुहिया के चरित्र पर तंज कसने लगे थे। बड़े चूहे उसे गलत नज़र से देखते थे। उसके रिश्तेदार उसकी उम्र को लेकर ताना कसते थे। बार-बार उसके विवाह के लिए उसकी माँ पर दबाव भी बनाते थे। किंतु चुहिया की माँ को अपनी बेटी पर गर्व था कि उनकी बेटी मेहनत करती है,

पैसे कमाती है और स्वतंत्र है। वह किसी पर निर्भर नहीं है। **लेकिन दिन प्रतिदिन सगे-संबंधियों का दबाव चुहिया की माँ पर चुहिया के विवाह के लिए बढ़ता जा रहा था। वे उसकी माँ को भी ताने देने लगे थे कि "अगर बेटी की शादी समय से नहीं करोगी तो आगे चलकर उसे कोई चूहा नहीं मिलेगा।"**

लेकिन माँ पलट के जवाब देती की, "ये चुहिया मेरी बेटी नहीं, मेरा बेटा है।"

चर्चा के बिंदु:

- **चुहिया का परिवार कैसा था?**
- **चुहिया की कौन सी बातें धीरे धीरे परिवार वालों को खटकने लगीं?**
- **चुहिया के परिवार में दुखों का पहाड़ कैसे टूट पड़ा?**
- **दुखों के पहाड़ में दबने के बाद, तीन भाई बहनों की क्या प्रतिक्रिया रही ?**
- **जब चुहिया अपना घर चलाना चाह रही थी, और माँ के पास कोई और सहारा भी नहीं था, तब भी माँ ने उसे क्यों रोका ?**
- **चुहिया को हम इस कहानी में ज़िद्दी मान सकते हैं। लेकिन, उसकी ज़िद्द से किसको फायदा हुआ?**
- **आपकी नज़रों में, चुहिया अच्छा और सही काम कर रही थी या गलत?**
- **चुहिया के काम करने को लेके दूसरों की जो प्रतिक्रिया थी, उसके बारे में आपका क्या ख्याल है?**
- **इस कहानी में, मुसीबत के समय दोनों बेटे, जिन्हें माँ बाप बुढ़ापे का सहारा मानते हैं, अपना-अपना फायदा देख कर रास्ता नाप लिए और बेटी माँ का सहारा बनी। फिर भी समाज के लोग बेटी को ही ताने मारते रहे। इस बात पर आपका क्या विचार है और आपकी समझ में ऐसा क्यों हो रहा है?**
- **आखिर में, जो माँ खुद अभी तक अपनी बेटी की कमाई पर ज़िंदा नहीं रहना चाह रही थी, समाज के दबाव से लड़ते हुए कहती है की "चुहिया मेरी बेटी नहीं मेरा बेटा है।" ये बात आपको तारीफ़ लगी या फिर से एक और तरीका जिससे हम लड़कों को लड़कियों से बड़ा और अच्छा मानते हैं ?**

उलट पुलट

- श्री प्रदीप कुमार कोल

एक हरे-भरे जंगल में, अन्य जानवरों के बीच, एक भालू दंपत्ति अपने परिवार के साथ रहते थे। उनके परिवार में वे दोनों और उनकी दो संतानें थी। लड़की का नाम शालू था और लड़के का नाम आलू था। भालू ने शालू और आलू दोनों का दाखिला एक ही विद्यालय में करा दिया। उन्हें लगा की दोनों बच्चे एक ही साथ, एक ही स्कूल में पढ़ेंगे, तो वे एक साथ ही आ जा सकेंगे और भालू दंपत्ति के पैसे और समय की बचत भी हो जायेगी।

विद्यालय भालू की गुफ़ा से कुछ दूरी पर था तो भालू ने दोनों बच्चों को स्कूल आने-जाने के लिए एक साइकिल खरीद दी। शालू और आलू दोनों विद्यालय जाने लगे। शालू साइकिल चलाती और आलू साइकिल के पीछे वाली गद्दी पर बैठ जाता। कभी-कभी आलू, शालू से साइकिल चलाने का मौका माँगता तो शालू यह कह कर मना कर देती की “हमारे जंगल में लड़के साइकिल नहीं चलाते हैं। किसी ने हमें ऐसा करते हुए देख लिया तो हमारे परिवार की बहुत बदनामी होगी।" शालू की बात भी सही थी, अपने परिवार की इज़्ज़त का सोच कर आलू चुप हो जाता था।

आलू विद्यालय जाते समय अक्सर हड़बड़ाया होता था और कई बार उसको देर भी हो जाती थी। वह शालू से भी पहले उठता था, पूरे घर की साफ-सफाई के बाद स्वयं नहाता था और उसके बाद पूरे घर का भोजन बनाता था। इन्हीं कारणों से उसे कई बार भोजन करने में और विद्यालय जाने में देरी हो जाती थी। शालू के साथ ऐसी कोई समस्या नहीं थी। अपने दांत साफ करती, नहाती, तैयार होती और अपना गृह-कार्य करने के बाद आराम से नाश्ता करती और विद्यालय जाने के लिए समय से तैयार हो जाती थी। शालू इस कारण आए दिन आलू पर क्रोधित हो जाती थी। वह कहती की अगर वह आलू के साथ चलने की प्रतीक्षा करेगी तो उसे विद्यालय के लिए देर हो जाएगी और उसे भी आलू के साथ दंड का भागी होना पड़ेगा। आलू उसकी डाँट सुनकर चुप हो जाता और सिर हिला कर उसकी हाँ में हाँ मिलाता, और मान लेता की गलती उसकी ही है। कई बार तो शालू, आलू को छोड़कर अकेले ही विद्यालय चली जाती थी। आलू को विद्यालय पैदल ही जाना पड़ता था और देरी में उसे और देर हो जाती थी।

एक दिन आलू ने बहुत हिम्मत जुटा कर अपनी माँ से कहा, "माँ! मुझे भी विद्यालय जाने के लिए साइकिल दिला दो।" उसका इतना कहना ही था कि माँ आग बबूला हो गई। उन्होंने आँखें बड़ी करते हुए गुस्से से कहा, "तुम कैसे साइकिल चला सकते हो? तुम अगर साइकिल चलाओगे तो हमारी नाक कट जाएगी। खैर मुझ से जो कुछ कहा, कहा। भूल से भी साइकिल वाली बात अपने पिताजी को नहीं कह देना। वरना साइकिल तो दूर की बात है, वे तुम्हारा विद्यालय जाना भी बंद करा देंगे।“ शालू की माँ का इतना कहना ही था कि पितजी गुफ़ा में प्रवेश करते हैं- "क्या बात है? क्या खुसुर- फ़ुसूर हो रही है ?" शालू की माँ बात पलटते हुए कहती हैं कि ऐसी कोई आवश्यक बात नहीं हो रही है। हम तो ऐसे ही बात कर रहे थे। आलू चुपचाप रसोई में चला जाता है। इतने में गुफा के बाहर से किसी के बुलाने की आवाज सुनाई देती है। आवाज़ शालू के प्रधानाध्यापक लोमड़ी महाराज की होती है।

"भालू महाराज़ बधाई हो! भालू महाराज़ बधाई हो!" कहते हुए अखबार लिए लोमड़ी महाराज़ नई साइकिल पर चले आ रहे हैं। उनकी आवाज़ सुनकर भालू दंपत्ति बाहर आते हैं। वे लोमड़ी महाराज़ को बैठने के लिए आसन देते हैं। उनसे बड़ी विनम्रता से पूछते है, "क्या बात है मास्टर साहब सब कुशल मंगल?"

लोमड़ी मास्टर भालू दंपत्ति की तरफ़ देखते हुए कहते हैं- "बधाई हो! आपके आलू ने तो कमाल कर दिया। उसने पूरे जंगल में हमारे विद्यालय का नाम रोशन कर दिया हैं! अपनी कड़ी मेहनत से उसने पूरे विद्यालय में और पूरे विद्यालय में ही नहीं बल्कि पूरे जंगल में अव्वल स्थान प्राप्त किया है। अखबार में उसकी और हमारे विद्यालय की तस्वीर भी छपी है। आलू के परिश्रम और सफलता की सराहना करते हुए स्कूल प्रबंधन समिति ने उसे उपहार स्वरूप एक साइकिल भेंट की है। “यह सुनते ही भालू की सारी खुशी गुस्से में बदल गई। वह अपना पड़ोसी, टमाटर, के जैसे लाल हो गया।

बड़े ही रूखे स्वर में लोमड़ी से कहा, "आप यह कैसी बात कर रहे हैं? आलू कैसे साइकिल चलाकर स्कूल जा सकता है? ऐसा करना हमारे जंगल के परंपरा के ख़िलाफ़ है। साइकिल चलाने वाले लड़को को यहाँ तेज़ माना जाता है, शादी के लिए लड़की कैसे मिलेगी अगर हमने यह सब शुरू कर दिया तो?”

मास्टर साहब पिता जी की यह प्रतिक्रिया देख और उनके कटु वचन सुनकर थोड़ा दुःखी हो गए। अपना विवेक संभालते हुए वे बोले, "भालू भाई समय बदल गया है। परंतु आप अभी भी पुराने दौर में जी रहे हैं। दोनों ही संताने आपकी है। दोनों में फिर यह भेदभाव क्यों? आप पुराने रीति-रिवाज में स्वयं और अपने बच्चों को बांधकर उनके पंख मत काटिए। दोनों बच्चों को उड़ने के लिए खुला आसमान दीजिए। दोनों को ही समान अवसर दीजिए। प्रकृति हमारे साथ भेदभाव नहीं करती है। यह जंगल हमारे साथ भेदभाव नहीं करता है। तब हम जानवर एक दूसरे के साथ भेदभाव क्यों करते हैं?"

मास्टर साहब की बातें सुन कर भालू दंपत्ति कहना तो बहुत कुछ चाहते थे की **“बेटा और बेटी समान कैसे हुए? हम दोनों को स्कूल भेजते हैं, क्या यह कम है कि अब दोनों के पास साइकिल भी होनी चाहिए? स्कूल वाले तो अपना सिखा-पढ़ा देते हैं, पर समाज में तो हमें रहना हैं। हम भी चाहते हैं की एक अच्छी लड़की हो जो हमारे आलू को ब्याह कर अपने साथ ले जाये लेकिन एक साइकिल चलाने वाले लड़के को अच्छी पत्नी कहाँ से मिल जायेगी?”** खैर दोनों को ये भी पता था की मास्टर साहब समाज में एक सम्मानित व्यक्ति हैं तो उनसे आना-कानी करना सही नहीं रहेगा इसलिए उन्होंने साइकिल की भेंट स्वीकार करके मास्टर साहब को नमस्ते किया। जाते-जाते मास्टर साहब फ़िर बोले, "भालू जी उम्मीद है की कल से आपके दोनों बच्चे अपनी अपनी साइकिल में स्कूल आते दिखेंगे। नमस्ते!"

मास्टर साहब के जाते ही शालू और आलू दोनों घर के बाहर आए। उन्होंने देखा की मास्टर साहब घर आये हुए हैं, लेकिन कहीं शिकायत तो नहीं हो रही, यही सोच कर दोनों घर के अंदर बैठे रहे। बाहर आते ही उनकी नज़र चम-चमाती हुई नई साइकिल और पिता जी के हाथ में अखबार पर पड़ी। उन्होंने आश्चर्यचकित होते हुए पिता जी से पूछा कि क्या बात है? मास्टर साहब क्यों आये थे? उनकी माँ ने सब बताया। आलू सब सुन कर मन ही मन मुस्कुराया। शालू को गुस्सा आया कि एक तो रोज़ आलू उसको देर करवाता है और ऊपर से अब उसे नई साइकिल मिल गई। उसने तुरंत बड़े ही प्रेम से अपने पिता जी से पूछा, "पिता जी! मैं तो काफी समय से साइकिल चला रहीं हूँ। मुझे अच्छे से साइकिल चलाना आता है तो क्यों ना मैं नयी साइकिल ले लूँ। आलू तो अभी पहली बार साइकिल चलाएगा। वह साइकिल चलाने में मेरी तरह निपुण नहीं है। उसकी साइकिल के साथ गिरने की संभावना भी होगी। साइकिल के गिरने से नयी साइकिल पर दाग़ लग जाएगा|”

माता-पिता को शालू का यह विचार बहुत अच्छा लगा। उन्होंने तुरंत ही नयी साइकिल शालू को दे दी और आलू को पुरानी साइकिल देते हुए वे बोले, "तुमने आज ही हमसे साइकिल मांगी थी और देखो! हम तुम्हें यह साइकिल दे रहे हैं।"

चर्चा के बिंदु:

- **शालू और आलू कैसे स्कूल जाते थे?**
- **स्कूल जाते समय शालू को आलू पर गुस्सा क्यों आता था ?**
- **आलू को स्कूल जाने में रोज देरी क्यों हो जाती थी?**
- **मास्टर साहब से खुश-ख़बरी सुनकर माता-पिता की क्या प्रतिक्रिया थी?**
- **नयी साइकिल का माता-पिता ने क्या किया?**
- **इस कहानी में आलू द्वारा घर का हर काम कर के स्कूल जाने में और शालू का घर का बिना कोई काम किये स्कूल जाने के बारे में आपके क्या विचार हैं? क्या ऐसा ही कुछ हमें अपने वास्तविक जीवन में देखने को मिलता है?**
- **वास्तविक समाज में जो व्यवहार लड़कियों के साथ अक्सर होता है, इस कहानी में जब आपने एक लड़के साथ होते हुए देखा तो आपको कैसा लगा?**
- **कहानी के अंतिम वाक्य के बारे में आपके क्या विचार हैं?**
- **इस तरीके के भेदभाव को ख़त्म करने के लिए हम क्या कर सकते हैं?**
- **आलू और शालू को उनकी शिक्षा के लिए एक ही स्कूल में भेजा गया, अपने माता-पिता की ओर से यह एक एक प्रगतिशील कदम की तरह लगता है। फिर भी, हम कहानी के माध्यम से देखते हैं वास्तव में उनकी मानसिकता कितनी पुरानी है। क्या आपने अपने आसपास ऐसी ही चीजें देखी हैं?**

लोमड़ी भी चले भेड़ चाल !

- सुश्री किरन कुमारी

एक गाँव के एक घने जंगल में लोमड़ियों की एक छोटी सी बस्ती थी। उसी बस्ती में मनु नाम की लोमड़ी अपने माता पिता और बहन मीनू के साथ रहती थी। मनु स्वभाव से शरारती और मनमौजी बच्ची थी। उसे लट्टू नचाना, गिल्ली डंडा, फुटबॉल, क्रिकेट खेलना बहुत पसंद था। सबसे प्रिय था उसे जंगल के बाकी नर लोमड़ियों के साथ शिकार पर जाना, किंतु समस्या यह थी कि मनु का जंगल पिछड़ा हुआ इलाका था।

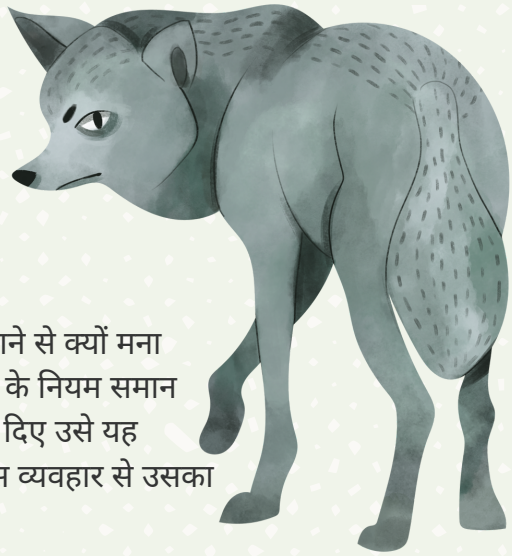

वहाँ के जानवर पुरानी विचारधाराओं और सोच में जकड़े हुए थे। उन्हें मादा लोमड़ियों का बाहर शिकार पर जाना बिल्कुल पसंद नहीं था। मनु की माँ के विचार भी पुरानी जंजीरों में बंधे हुए थे। उन्हें और पूरे जंगल को मनु का नर लोमड़ियों के साथ शिकार पर जाना असभ्य लगता था। मनु की माँ जब भी उसे दुसरे नर लोमड़ियों के साथ देखती, वो गुस्से से लाल हो जाती। वह जंगल में डंडा लेकर पहुँच जाती और मनु की पूँछ खींचते हुए उसे घर ले आती थी।

मनु अक्सर उनसे पूछती की आखिर उसे और अन्य लड़कियों को शिकार पर जाने से क्यों मना किया जाता है? लड़कों पर तो शिकार की कोई पाबन्दी नहीं हैं। दोनों को जंगल के नियम समान स्वतंत्रता क्यों नहीं देते हैं? मनु के प्रश्नों से माँ खीझ उठती और बिना कोई उत्तर दिए उसे यह कहकर चुप करा देती कि “यह सब नर लोमड़ियों का काम है।“ अपनी माँ के इस व्यवहार से उसका मन टूट जाता था।

कबीले में दो झुंड थे जो शिकार पर जाते थे। मनु छुट्टी के दिन उस झुंड में शामिल होने के मौके की तलाश में रहती जिसमें उसके पिता नहीं थे। झुंड के बाकी नर लोमड़ी मनु को पसंद करते थे। उनको अच्छा लगता था कि उनके कबीले से एक होनहार लोमड़ी निकली है। मनु के पिता दूसरे लोमड़ियों के झुंड में शिकार पर जाते थे, इसलिए, उन्हें बस ये पता था की कोई लोमड़ी है इस कबीले की जो शिकार सीखने की कोशिश कर रही है, लेकिन ये नहीं पता था की ये उन्हीं की बेटी है। अपनी गुफा में मनु ने पिता जी को कई बार झल्लाते सुना है इस ‘बेहया’ लोमड़ी के बारे में।

वैसे तो कबीले के लोमड़ियों का झुंड जंगल के अलग-अलग इलाके में शिकार पर जाते थे, लेकिन एक दिन मनु के पिता का झुंड ठीक तभी वापस आ रहा था गुफा की तरफ, जब मनु झुंड के साथ शिकार पर निकल रही थी। मनु ने तो पिताजी को नहीं देखा, लेकिन पिताजी ने मनु को देख लिया और आग-बबूले हो गए। घर आकर उन्होंने मनु की माँ से पूरी बात कही, और माँ डंडा लेकर जंगल की तरफ चल पड़ी उसे मार मार कर वापस लाने। पूरे जंगल के सामने बहुत बड़ा हंगामा हुआ। सबके सामने मनु की माँ ने उसे लात जूतों से मारा। उस दिन से मनु अपने घर से नहीं निकली। वो अत्यंत गुस्से में थी और मन ही मन मना रही थी कि उसके पिता को कोई दूसरा जानवर काट ले, क्योंकि उन्होंने ही माँ से उसकी चुगली लगायी थी।

कुछ दिन बाद, मनु के मन की बात सच हो गयी। शिकार पर निकले उसके पिता का पैर किसी ज़हरीले साँप पर पड़ गया, जिसने उन्हें डस दिया और मिनटों में उनकी मौत हो गयी| ये सब जानने के बाद मनु के मन को बहुत आघात पँहुचा। उसने भले ही गुस्से में ये सब सोचा हो, लेकिन ये कभी नहीं चाहती थी कि सच में उसके पिता की मृत्यु हो जाए। इसी ग्लानि में मनु ने सबसे बात करना बंद कर दिया। वो मन ही मन स्वयं को अपने पिता की मौत का कारण मानने लगी थी।

मनु के पिता के मरने की वजह से उनके घर पर कई संकट आये। सबसे पहले तो उनके घर का खाना ख़त्म होने लगा। उसका कोई भाई भी नहीं था और पिता की भी मौत हो गयी थी, तो उनके लिए शिकार लाने वाला कोई बचा ही नहीं। मनु का मन अपने पिता की मौत से मरा हुआ था, लेकिन उसने देखा की अगर उसने जल्दी ही कुछ नहीं किया तो उसके पूरे परिवार की ही

मौत हो जाएगी| शिकार तो उसे पहले से ही करना आता था, तो उसने अपनी कौशल का फायदा उठाया और रात को अकेले शिकार पर निकलने लगी। जो भी रात को चूहा या कोई पक्षी वो मार सके, उनका शिकार ला कर वो अपनी गुफा के दरवाज़े पर रख देती थी और अंदर जाकर सो जाती थी। सुबह उठ कर माँ को अपने दरवाज़े पर कोई मरा हुआ जानवर दिखता और वो सोचती थी की कोई भला पड़ोसी उनकी मदद कर रहा है।

ऐसे ही कुछ दिन बीते, फिर अचानक से माँ की तबीयत ख़राब हो गयी। उसने पड़ोस की मादा लोमड़ियों को बुलाया और सबने कहा की केवल खरगोश का माँस खाकर ही मनु की माँ बच सकती है इस बीमारी से। अब सब परेशान होगए की खरगोश जल्दी से चाहिए लेकिन आस पास के सभी नर लोमड़ी तो शिकार पर गए हैं और शाम को ही आएंगे, तो मनु की माँ कैसे बच पायेगी? मनु ने तुरंत कहा, “मैं ले आउंगी अभी खरगोश का माँस”।

ये सुन कर सभी लोमड़ियाँ चिढ़ गईं। उन में से एक ने तो मुँह पर कह दिया कि “ऐसी बेशर्म हरकतों की वजह से ही तो पहले तुम्हारा बाप मर गया और अब माँ मर रही है”, ये बोल कर पड़ोस की सभी लोमड़ियाँ गुफा से निकल गईं।

मनु ने फिर से अपनी माँ से कहा की खरगोश का माँस वो अभी ले आएगी। माँ ने कहा की “मर जाउंगी लेकिन तुझसे शिकार नहीं कराऊँगी। सुना न तूने की अगल-बगल की लोमड़ियाँ क्या बोल रही थीं तेरे बारे में?”

मनु ने सोचा की अगर उसके मन में आये सिर्फ एक गलत सोच से उसके पिताजी का देहांत हो सकता है तो इसी मन की बात मान कर वो आज अपनी माँ को बचा के रहेगी। ये सोच कर मनु ने चिल्लाया कि “नहीं माँ, आज मैं तुम्हारी एक नहीं सुनूँगी, आज मैं तुम्हें बचा कर ही रहूँगी।”

माँ ने कहा, “समाज वाले हम पर हँसेंगे बेटी, अभी देखा ना सब कैसे मुझे मरने के लिए छोड़ कर चले गए? सिर्फ इसलिए क्योंकि तू ज़िद्द लगा कर बैठी है।”

मनु ने अपनी माँ को समझाया की **“हम लोमड़ी हैं माँ, फिर भी भेड़ चाल में चल रहे हैं। किसी ने कुछ नियम बना दिए तो सब बिना सोचे समझे उसी रास्ते पर चल रहे हैं। वैसे भी माँ, हमारे मुश्किल हालात में चार लोगों ने आकर हमारी सहायता नहीं की तो तुम उनकी बातों में क्यों आ रही हो?”**

माँ ने बोला, “ऐसे कैसे किसी ने मदद नहीं की? इतने दिनों से जो हम गुज़ारा कर रहे हैं, वो सिर्फ इसलिए की कोई भला लोमड़ी हमारे दरवाज़े पर रोज़ रात को माँस रख के जाता है।”

ये सुनते ही मनु हँस पड़ी और जल्दी में चिल्लाया “वो माँस मैं रखा करती थी माँ। रात को शिकार पर निकलती थी छुप छुप कर, क्योंकि मुझे पता था कि सीधा तुम्हें वो शिकार लाकर दूंगी तो तुम लोगी नहीं।” इतना बोल कर मनु भाग गयी जंगल की ओर। करीब १५ ही मिनट में वो अपने दाँतों के बीच एक खरगोश लेकर आयी और अच्छे से धो कर और काट कर माँ को दे दिया। माँ ने बड़ी मुश्किल से थोड़ा सा माँस खाया। उनकी हालत थोड़ी देर में और सुधरी, फिर उन्होंने थोड़ा और खाया और तबीयत थोड़ी और ठीक हुई। शाम तक माँ की हालत बिलकुल ठीक हो गयी थी। माँ बेटी में रात को कोई भी बात नहीं हुई।

अगले दिन सुबह होने पर माँ ने मनु को एक छोटी सी बोतल में पानी भर के दिया और कहा “अपने गले में यही बोतल लटका कर तेरे पापा शिकार पर जाते थे। आज से तू भी इसे लेकर शिकार पर जाया करना।”

ये सुन कर मनु की आँखों में आँसू आ गए और उसने पूछा “और तुम्हारे लोगों का क्या होगा?”

माँ ने मुस्कुरा कर जवाब दिया “कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना...”

चर्चा के बिंदु :

- **मनु कैसी लोमड़ी थी?**
- **मनु के कबीले के बाकी लोमड़ियों के बारे में हमें क्या समझ आता है?**
- **नर लोमड़ी मनु के शिकार पर आने वाली बात को किस तरह से देखते हैं?**
- **मनु के माता पिता का उसके शिकार पर जाने को लेकर क्या राय थी?**
- **मनु के पिता की मौत कैसे हुई? उसकी प्रतिक्रिया उनकी मौत पर कैसी रही?**
- **अक्सर हम गुस्से में आकर किसी के बारे में गलत सोच लेते हैं, उनमें से कोई भी बात सच हो जाए तो हमें कैसा लगेगा? इस ग्लानि से बचने के लिए हम क्या कर सकते हैं?**
- **पिता की मृत्यु के बाद, मनु ने अपने परिवार को बचाने का कैसा रास्ता निकाला?**
- **भले ही मनु की माँ मरने के कगार पर हो, समाज की बाकी लोमड़ियों और मनु की माँ को भी अपने नियम मनवाने की पड़ी थी। इस वाक्य पर आपके क्या विचार हैं? क्या आपने कभी ऐसा कुछ देखा या सुना है अपने गाँव में?**
- **अगर कभी आपको खुद किसी की जान बचाने और समाज के नियम तोड़ने में से किसी एक को चुनना पड़े, तो आप क्या करेंगे और क्यों?**
- **अपने आसपास के कुछ उदाहरण सोचिये जिस में लड़के और लड़कियों को बराबर आज़ादी नहीं दी गयी है और लड़कियों ने फिर भी दृढ़-निश्चय कर के सारी बाधाओं को पार किया है?**
- **इसी के साथ, ऐसे भी कुछ आदमियों के बारे में बताइए जिन्होंने अपने घर या समाज की बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए बाधाओं का सामना किया है।**

छिपकलिंग के वासी

- झारखण्ड की सुश्री सुधा कुमारी के पिता, श्री बीरेंद्र माली जी से प्रेरित कहानी

बहुत समय पहले की बात है, छिपकलिंग नाम के एक सुन्दर से राज्य में एक छिपकली राजा और रानी रहते थे। भले ही वे छिपकलियों के राजा-रानी थे, उनके साफ़ दिल और निष्पक्ष विचार और व्यवहार के कारण अन्य जानवरों को भी यहाँ रहना बहुत भाता था।

छिपकलिंग के राजा-रानी ने ना स्वयं के लिए और ना ही किसी अन्य वर्ग के लिए विशेष और अलग नियम बनाया था। वे अपने राज्य में सबको स्वयं की ज़िम्मेदारी लेने के लिए सदैव प्रोत्साहित करते थे। उनका यह मानना था की आज़ाद मन और भली सोच वाले जंगल के जानवर सही और गलत के बीच में सही निर्णय बिना किसी दबाव के कर सकते हैं। जंगल के वासियों ने भी राजा और रानी के इस भरोसे का मान रखा। वे अपना जीवन बहुत ज़िम्मेदारी से व्यतीत करते थे। राज्य हर तरह के अपराध से मुक्त था। यहाँ कोई अमीर या गरीब नहीं था न कोई बड़ा न छोटा था। सभी जानवर एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते थे।

छिपकलिंग जैसा राज्य पूरे देश में कोई और नहीं था। जानवरों ने इसे अपने आचार-व्यवहार से अनोखा बना दिया था। दूर देश के निवासी इस राज्य को अपनी आँखों से देखने के लिए आते थे। इन्हीं जानवरों में एक जादूगर डायनासोर छिपकलिंग राज्य में रहने आया। लेकिन उसके इस राज्य में आने की मंशा कुछ और ही थी। असल में वह छिपकलिंग वासियों की नीयत की परीक्षा लेना चाहता था की क्या वाकई यहाँ रहने वाले जानवर साफ़ नीयत और बड़े दिल के हैं?

जैसे ही डायनासोर राज्य में पहुँचा उसने एक बड़ी रसदार दिखने वाली हड्डी बगीचे में फेंक दी और स्वयं झाड़ियों के बीच जाकर छुप गया। पूरा दिन बीतने को आया था। कई कुत्ते और शेर उस बगीचे में आये लेकिन किसी ने उस हड्डी को देखने के बाद भी छुआ नहीं। वे भली-भांति इस बात को जानते और समझते थे की जो चीज़ हमारी नहीं होती है, उसे नहीं उठाना चाहिए। पहले प्रयास के बेकार हो जाने के बाद डायनासोर को दूसरी तरकीब सूझी। उसने दो पड़ोसियों के बीच लड़ाई लगवाने की ठानी। एक पड़ोसी ने दूसरे पड़ोसी से किसी काम के लिए साइकिल माँगी थी। डायनासोर ने अपने जादू से पड़ोसी को यह भुलवा दिया की उसका काम हो जाने के बाद उसको दूसरे पड़ोसी की साइकिल वापस भी करनी है। हफ़्ते भर का समय बीत गया लेकिन पहले पड़ोसी ने साइकिल नहीं लौटाई। फिर दूसरा पड़ोसी अपनी साइकिल माँगने आया। लेकिन उसमें किसी प्रकार का कोई रोष नहीं था। उसने बड़े विनम्र भाव से अपनी साइकिल वापस माँगी और पहले पड़ोसी ने उसे साइकिल दे दी और साथ ही देरी से लौटाने के लिए माफी भी माँगी।

जादूगर परेशान हो गया की इस राज्य में कोई भी कुछ गलत क्यों नहीं कर रहा है? फिर उसको एक और खुराफ़ात सूझी। उसने सोचा दिखने में तो ये सारे जानवर बहुत ही भले प्रतीत होते हैं, लेकिन क्या पता इनके मन में कोई चोर हो? और क्यों न इसी बात का फ़ायदा अपने मकसद को पूरा करने के लिए उठाया जाए। वह वापस से बगीचे में पड़ी उस हड्डी के पास गया। उसने अपने जादू से उस हड्डी को देखने वाले जानवरों के मन को पढ़ा। उसकी बात सही निकली। राज्य में ऐसे कई जानवर थे जिनका मन उस हड्डी के लिए ललचाया हुआ था। लेकिन उन्हें इस बात की भी समझ थी की लालच बुरी बला है और इस कारण सभी ने हड्डी नहीं उठाने का निर्णय लिया। बहुत सोच-विचार और राज्य के जानवरों को परखने के बाद डायनासोर को यह बात तो समझ में आ गयी थी की यहाँ सभी जानवर एक दूसरे को समान समझते हैं। कोई किसी को छोटा या बड़ा नहीं मानता और इसी कारण कोई जानवर किसी अन्य जानवर के साथ गलत नहीं करता था। लेकिन डायनसोर भी कहाँ हार मानने

वाला था। उसने छिपकलिंग राज्य के वासियों को बहला-फुसला कर और अपने जादू से ये मनवाने की कोशिश की कि वे एक-दूसरे के बराबर नहीं हैं ताकि राज्य में समानता का अंत हो सके।

जादूगर ने एक दिन अपनी दुकान लगायी - छिपकलिंग राज्य के माता और पिताओं के लिए। एक दिन में वह जादूगर केवल तीन माता-पिता की जोड़ियों से मिलता था। जोड़ियों का चयन इस शर्त पर होना था की वे जादूगर के लिए स्वादिष्ट भोजन ले कर आएंगे। बदले में वह उनको ऐसा जादू सिखाएगा जिसके बलबूते पर माता-पिता अपने बच्चे के लिए जो चाहे वह बन सकते हैं।

शुरू-शुरू में तो जादूगर के पास गिने-चुने ही माता-पिता आये लेकिन जो आये वे बड़े ही प्रसन्न हो कर लौटे। उनके बच्चों में से जब भी किसी को आइसक्रीम खानी होती, माता-पिता आइसक्रीम बन जाते। बच्चे उन्हें जी भर कर खाते। जब बच्चों का मन भर जाता तो वे वापस से माता-पिता बन जाते। जब भी बच्चों के पढ़ाई का समय होता माता-पिता कॉपी-किताब और कलम बन जाते। पूरे राज्य में खुशियाँ दुगनी हो गयी थी। बच्चों की सभी इच्छायें पूरी करने के लिए सभी माता-पिता अपने पूरे प्रयास में लग गए। जादूगर के पास माता-पिताओं का काफ़िला बढ़ता जा रहा था। जंगल के सभी माता-पिता उसके पास जाना चाहते थे।

यह जादू सुनने में तो बहुत मोहक था लेकिन इसने समाज की बराबरी को ख़त्म कर दिया था। परिवार में माता-पिता अब अधिक शक्तिशाली हो गए थे। जादू ने माता-पिता और उनके बच्चों के बीच की बराबरी को नष्ट कर दिया था। अब घर के बड़े और बच्चे सामान नहीं रहे। माता-पिता को अब यह लगता था की क्योंकि अब उनके पास इतना अच्छा जादू है, वे अपने परिवार में अधिक महत्वपूर्ण हैं और इस कारण से उनके बच्चों को उनकी हर बात माननी चाहिए। जंगल के जिन दंपत्तियों की संतान नहीं थी, वे इस जादू का फायदा नहीं उठा सकते थे। वे दंपत्ति अब जादूगर दंपत्तियों से चिढ़ने लगे थे। जादूगर अपने मकसद में कामयाब रहा। राज्य के करीब पचास प्रतिशत माता-पिताओं को यह जादू सिखाने के बाद उसने अपना समान इकठ्ठा किया और छिपकलिंग राज्य से नौ-दो ग्यारह हो गया।

शुरू-शुरू में माता-पिता मिले हुए जादू का प्रयोग अपने बच्चों की खुशियों तथा उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते थे। अब उसी जादू का प्रयोग, जब उनके बच्चे उनकी बात नहीं मानते थे तो उन्हें दण्डित करने के लिए करने लगे। दंड देने के लिए कभी लाठी बन जाते, तो कभी चप्पल। अगर कभी बच्चों को घर से बाहर ना भेजना चाहे तो एक ऊंचा सा गेट भी बन जाते थे। समस्याएँ यहीं नहीं रुकी। अब जादू सीखे हुए दंपत्तियों के बीच भी झगड़े शुरू हो गए। कभी माता को लगता की पिता का रवैया बच्चों के प्रति ज़्यादा कठोर है तो कभी यही बात कई बार पिता भी कहते की माएँ ज्यादा कठोर हो रहीं हैं। दंपत्तियों के बीच के झगड़े समय के साथ और भी बढ़ गए। उन झगड़ों का परिणाम यह हुआ की राज्य में अब अधिकतर जानवरों को लगता था की पुरुष महिलाओं की तुलना में अधिक सुन्दर हैं, और इसीलिए जंगल में उन्हीं की बात को महत्व दी जायेगी। अब महिलाओं की नहीं बल्कि केवल पुरुषों के बात चलेगी। जंगल की माताएँ और अन्य स्त्रियाँ इस बात से व्यथित हो गयी। वे निराश हो गयी की जंगल में पहले सभी निर्णय सभी जानवर मिलजुल कर लेते थे, लेकिन अब यह अधिकार केवल पुरुषों के पास चला गया। राज्य की सभी औरतें इस बात से निराश थी, लेकिन इसको बदलने के लिए कोई कुछ भी नहीं कर रहा था।

इन्हीं सब परिवारों के बीच बीरेंद्र नाम के तोते का परिवार रहता था। बीरेंद्र ने भी अपनी पत्नी के साथ जादूगर से मिलकर जादू सीखा था। उसने उसके राज्य में आयी नयी पितृसत्ता की लहर के बारे में सुना और अपने आसपास महसूस भी किया। लेकिन बीरेंद्र इस बात को लेकर स्पष्ट था की राज्य में जो कुछ भी बदलाव इस पितृसत्ता के कारण हो रहे हैं, वे गलत हैं। **बीरेंद्र अभी भी अपना जादू अपनी पत्नी के साथ मिलजुल कर अपने बच्चों की भलाई के लिए इस्तेमाल करता था। दोनों पति-पत्नी अपनी कोई भी इच्छा और बात अपने बच्चों पर नहीं थोपते थे। इसलिए कभी ऐसी कोई नौबत नहीं आयी की उनके बच्चे उनकी बात मानने से मना कर दें। अगर कभी किसी बात को लेकर उनके परिवार में अनबन होती थी तो वे आपस में शांति से समस्या को सुलझाने का प्रयास करते थे। बीरेंद्र का परिवार अभी भी एक- दूसरे को बराबर मानते थे।** बीरेंद्र कभी अपने बच्चों के लिए पंख बन जाता तो कभी उसकी पत्नी अपने बच्चों के लिए किताब और खिलौना। बीरेंद्र बच्चों के साथ-साथ अपनी पत्नी को भी पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करता था। उनके अनुसार उनका पूरा परिवार समान

हैं, और जादू का प्रयोग भी सभी को मिलजुलकर एक-दूसरे की भलाई के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। बीरेंद्र के आसपास के जानवर उसके पीठ पीछे उसकी खिल्ली उड़ाते थे। वे उसका मजाक उड़ाते कि जब वह दूसरे जानवरों की तरह घर का प्रधान बन सकता है तो फिर वह खुद को इतना आम और बराबर क्यों मानता हैं? और अपने परिवार में अपनी पत्नी और बच्चों को इतना बढ़ावा क्यों दे रहा है? बीरेंद्र इस बात को जानता था की राज्य के सभी जानवर उस पर हँसते हैं, लेकिन उसका यह मानना था की परिवार में हर एक व्यक्ति का खुश रहना जरूरी है तभी पूरा परिवार खुश रहता है, और जिस परिवार में केवल एक सदस्य के मन की चलती है, उस परिवार के अन्य सदस्य संतुष्ट और प्रसन्न कैसे हो सकते हैं?

चर्चा के बिंदु:

- **छिपकलिंग राज्य की खास बात क्या थी?**
- **डायनासोर छिपकलिंग राज्य क्यों और क्या करने आया था?**
- **जादूगर ने शुरुआत में कौन-कौन सी तरकीबें निकाली?**
- **जादूगर की आखरी तरक़ीब क्या थी?**
- **माता-पिता ने मिले हुए जादू का शुरुआत में कैसे फायदा उठाया?**
- **छिपकलिंग में धीरे-धीरे ऊंच-नीच की भावना कैसे आ गयी? इसका परिणाम क्या निकला?**
- **आपके विचार में क्या कारण हो सकता है की जंगल में आयी इस नयी पितृसत्ता में बीरेंद्र नहीं बहा?**
- **क्या कहानी में बताई गयी ऊंच-नीच की घटनाओं को आपने आस-पास के समाज में घटित होते हुए देखा है? कुछ उदाहरण देकर बताएँ?**
- **क्या आप अपने आसपास के समाज में बीरेंद्र जैसे आदमियों को जानते हैं, जो अपने फ़ायदे और हाथ में आयी सत्ता से ऊपर उठकर, समाज के हर व्यक्ति, विशेषकर महिलाओं को बराबरी का मौका देने का प्रयास करते हों?**

उत्तर प्रदेश की कहानियाँ

१. मर्द बनो - सुश्री प्रीति
२. कुक-डू-कू - सुश्री प्रतिभा सिंह
३. डार्क एंड लवली - सुश्री काजल
४. फुटबॉल या आज़ादी?- श्री मंजीत कन्नौजिया
५. आधी घरवाली... - मोहम्मद फराज़
६. मोलू और मोली - सुश्री श्वेता खरवार
७. राजकुमारी शेरनी - सुश्री रजनी सिंह
८. रानी और उसके पिता - सुश्री अर्चना
९. दो घड़ों की कहानी - सुश्री संजना चक्रवर्ती
१०. किसकी गलती? - श्री विक्रम नामदेव

मर्द बनो

- सुश्री प्रीति

किसी जंगल में एक शेरनी अपने पति के साथ रहती थी। पति का नाम समशेर था। उनकी तीन बेटियाँ, मीरा, प्रेमा और ईशा थीं। उनका इकलौता बेटा था जग्गू। शेर अपने जंगल का राजा होने के साथ-साथ परिवार का मुखिया था। वो बहुत ताकतवर था। उनके परिवार में सभी उससे डरते थे लेकिन परिवार के सभी सदस्य उससे प्रेम भी करते थे तथा समशेर की सारी बातें मानते थे। उसकी पसंद, सबकी पसंद होती थी। कोई भी उसकी बात न मानने की हिम्मत नहीं करता था।

समशेर का बेटा जग्गू परिवार में सबसे छोटा था और जग्गू को बचपन से ही गुड्डे-गुड़ियों से खेलना, अपनी माँ और बहनों के साथ रसोई में खाना बनाना बहुत पसंद था परन्तु, जग्गू के पिता को ये सब बिलकुल भी नहीं पसंद था। जब भी समशेर को पता चलता कि जग्गू गुड़ियों के साथ खेल रहा है या खाना बनाना सीख रहा है, समशेर जग्गू की माँ को बहुत बुरा भला कहता, कभी-कभी माँ की पिटाई भी कर देता, क्यूंकि वो अपने बेटे को संभाल नहीं पा रही। यह सब देखकर जग्गू को बहुत बुरा लगता। जब वो अपने पिता से कहता कि माँ को मारना सही नहीं है, तो वो बस इतना ही जवाब देते "मर्द बनो"।

पूरी ज़िंदगी जग्गू ने बस यही देखा की 'मर्द बनो' के नाम पर उसके घरवाले उसे कठोर बनने को कहते थे। कभी चोट लग जाए और दर्द हो, तो कहते थे 'रोना मत, मर्द को दर्द नहीं होता'। जग्गू अपनी बहनों के साथ घर-घर खेलता तो सब उस पर हँसते और कहते कि "मर्दों वाले खेल खेलों"। जग्गू को खाना बनाने का शौक था, पर जब वो खाना बनाने जाता, तो सब कहते कि "ये मर्दों का काम नहीं है"। इन सभी रोक-टोक से परेशान होकर जग्गू ने निर्णय लिया की अब वो मर्द नहीं बनेगा, वो सिर्फ एक अच्छा शेर बनेगा। उसने समझ लिया था कि पिता जी से या घर पर किसी और के साथ इस बारे में बात करना व्यर्थ है, घर में बेकार के झगड़े होने लगते और उसकी माँ को गलती का दोष दे कर उसी को नीचा दिखाया जाता। इसलिए, जग्गू ने अपनी एक डायरी बनाई जिस में वो सब कुछ लिखता था की जब वो राजा बनेगा, तब जंगल में क्या क्या बदलाव लाएगा। तब तक के लिए वो चुपचाप सहता था, अपनी पढ़ाई और अपना काम अच्छे से करता था ताकि कोई भी उसे या उसकी माँ को नीचा न दिखा सके।

करीब दस साल के बाद जब जग्गू जंगल का राजा बना, तो हफ्ते भर का उत्सव मना था। सब बहुत ही खुश थे कि जंगल को नया राजा मिला है, वो भी जग्गू जैसा नम्र स्वभाव का राजा। जैसे ही जंगल के वासी अपनी आम ज़िंदगी में लौट आए, जग्गू ने सबसे पहले ऐलान किया की “आज से जंगल में कोई मर्द नहीं और ना ही कोई औरत। जिसे जो भी बनना है, अपने घर में या सपनों में जो भी किरदार निभाना है, वो निभा सकते हैं”। जंगल के बड़ों को ये बात कुछ अच्छी नहीं लगी, लेकिन राजा का हुकुम है, मानना तो पड़ेगा ही! नई पीढ़ी के जानवर सब बहुत ही खुश हुए। अचानक से बहुत सारी चीजें बदलने लगीं। जंगल के स्कूल में हर लिंग के जानवर जाने लगे। जिसे जो भी बनना था, वो उसी की शिक्षा पाने लगा। इसी से जंगल में बहुत सारे बदलाव आने लगे, कला के शौकीन नर हस्तकला प्रशिक्षण ले रहे थे; मादाएँ शिकार करने का प्रशिक्षण ले रहीं थीं; नए दंपत्ति मिलकर अपने बच्चों को पाल रहे थे; और घर का ख्याल रखना सबकी ज़िम्मेदारी बन गई। शादी के समय भी इसका बहुत अच्छा प्रभाव रहा। अब मादाओं का कन्यादान नहीं होता था, जिसे भी जहाँ भी रहना है, आपस में बातचीत कर के घर बसाते थे। कभी नर, मादा के जंगल में जा कर बसने लगे क्योंकि मादा के माता पिता वृद्ध थे और उनको देखभाल की जरूरत थी, और कभी अपने काम में सुविधा पाने के लिए दंपत्ति स्वयं ही चर्चा करके बीच के किसी जंगल में बस जाते।

धीरे-धीरे जंगल में बदलाव की एक लहर आ गई। कोई भी नर अपने परिवार की मादा पर अब वक्त-बेवक्त अपना गुस्सा नहीं निकालता था। सब अपनी सोच और कार्यों की पूरी ज़िम्मेदारी उठाते थे, अपने और दूसरों के बारे में सोचते हुए ही कुछ करते थे। धीरे-धीरे, जग्गू ने अपनी दुनिया ठीक वैसे ही बना ली जैसी वो हमेशा से चाहता था।

जग्गू को कई बार अपने पिता की "मर्द बनो" वाली बात याद आती है, लेकिन अब उसे समझ आ गया की मर्द बनने की कोई एक परिभाषा नहीं होती और ख़ास कर हिंसा से तो बिल्कुल नहीं! हिंसा करने वाला सिर्फ हिंसक होता है, मर्द नहीं।

चर्चा के बिन्दु :

- **जग्गू कैसा बच्चा था?**
- **जग्गू के पिता कैसे थे?**
- **जग्गू की माँ को मार क्यों पड़ती थी? इसके बारे में जग्गू को कैसा लगता था?**
- **घर पर मर्दों और औरतों के क्या काम होते हैं? क्या होगा अगर मर्द औरतों के, या औरतें मर्दों के काम करें?**
- **जग्गू को अपने घर में किस प्रकार के दबाव महसूस होते थे?**
- **क्या सोचकर जग्गू ने अपने घर पर लड़ाई करना बंद कर दिया?**
- **जग्गू ने राजा बनने के बाद क्या-क्या बदलाव लाए? इसका क्या प्रभाव पड़ा?**
- **क्या जग्गू की तरह, हम भी अपने आप को अपने घर या समाज में ऐसी जगहों में पाते हैं जहाँ हमें बहुत घुटन होती है? उस परिस्थिति में हमारी प्रतिक्रिया आमतौर पर क्या रहती है?**
- **हमारी परिस्थिति में संयम रखने का हमें क्या फल मिल सकता है?**
- **हम जग्गू से क्या सीख सकते हैं?**

कुक-डू-कू

- सुश्री प्रतिभा सिंह

ये कहानी एक छोटी सी मुर्गी की है जिसका नाम है बिट्टू।

बिट्टू को अपने दोस्तों के साथ खेलना और साथ में पढ़ना बहुत पसंद था। बिट्टू का सबसे अच्छा दोस्त था पंकज नाम का एक मुर्गा। इनके समाज में, मुर्गों और मुर्गियों की दोस्ती आम बात नहीं थी, लेकिन, क्योंकि दोनों बच्चे थे, अभी तक ज्यादा रोक टोक नहीं लगी। पुरुष-प्रधान समाज था इनका भी, यहाँ मुर्गे बाहर काम करके पैसे कमाते थे और मुर्गियों को घर-परिवार की देखभाल करना पड़ता था। इनके यहाँ आमतौर पर तो मुर्गियों को नहीं पढ़ाया जाता था, लेकिन कुछ खुले सोच वाले माता पिता ने अपनी बेटियों को स्कूल भेजना शुरू कर दिया था। हमारी बिट्टू भी ऐसी ही एक खुश-नसीब मुर्गी थी, जिसके माँ-बाप उसे स्कूल भेजते थे।

अपने माता-पिता से प्रोत्साहन पा कर, बिट्टू ने पढ़ाई के आगे भी अपने सपने देखने शुरू कर दिए। उसे बड़े हो कर इंसानों के एक धनवान परिवार में एक अलार्म घड़ी-मुर्गी की नौकरी चाहिए थी। वहाँ उसका काम होता रोज़ सुबह सूरज निकलते साथ ही कूकडुकू की आवाज़ लगाकर सबको जगाना और शाम होने पर दोबारा से कूकडुकू कर के सबको बताना की अब अँधेरा हो गया है। बिट्टू के गाँव में ये नौकरी सिर्फ मुर्गों को दी जाती थी, क्योंकि मुर्गियों की चीख मुर्गों से कमज़ोर होती थी। हालाँकि बिट्टू को ये बात पता थी, फिर भी उसने सोचा कि अभी भी तो मुर्गियों को दिमागी रूप से कमजोर मान कर उन्हें स्कूल जाने से मना किया जाता था, लेकिन अब तो मुर्गियाँ भी स्कूल जाती हैं। उसने ये ठान लिया कि अभ्यास करने से कोई भी चीज़ सीखी जा सकती है। इसलिए, बिट्टू ने पंकज से मदद लेने की ठानी। बिट्टू ने पूछा, "पंकज तुम मुझे कूकडुकू बोलने का अभ्यास कराओगे?" पंकज तुरंत मान गया।

स्कूल की छुट्टी होने के बाद पंकज बिट्टू को अपने घर ले जाता है। दोनों मिल कर अभ्यास करते, पहले दिन तो वो ज्यादा अच्छा नहीं कर पाती, लेकिन पूरे मन से और समय निकाल कर अभ्यास करने का वादा करती है। पंकज के घर से निकलते समय बिट्टू का पड़ोसी उसे देख लेता है और बिट्टू के घर में जाकर चिल्लाता है कि, "अरे ओ बिट्टू के पापा! बहुत घमंड था न अपनी सोच पे! बहुत उछल कूदकर गया था न अपनी बेटी का दाखिला करने स्कूल में! जाके देख ले क्या गुल खिला रही है तेरी बेटी! बेटी स्कूल से आकर कहीं और घूम रही है वो भी एक मुर्गे के साथ!" ये बोलकर पड़ोसी निकल जाता है और बिट्टू के पिता ऐसे ही दंग बैठे रहते हैं। जब बिट्टू घर पहुँचती है, तो वो उससे पूछते हैं कि "तुझे देर क्यों हो गई आज स्कूल से आने में?"

बिट्टू – (वैसे तो वो झूठ नहीं बोला करती थी अपने घरवालों से, लेकिन वो अपने पिता को सरप्राइज़ देना चाहती थी, मुर्गों की तरह आवाज़ निकाल कर, इसलिए तुरंत बोल पड़ी) “अरे बापू मैं अपनी सहेलियों के साथ खेलने लगी थी तभी देर हो गई।“

बापू (गुस्से में) – “मुझे पता लगा तू कहीं और गई थी अगर फिर कभी स्कूल से कहीं और गई तो तेरी टाँगे तोड़ दूँगा।“

अगले दिन स्कूल में बिट्टू बहुत उदास बैठी थी, तभी पंकज वहाँ आया और पूछा “क्या हुआ बिट्टू इतनी उदास क्यों हो?”

बिट्टू – “कल मैं तुम्हारे घर गई थी तो बापू को किसी ने बता दिया और बापू बहुत डाँट रहे थे मुझे, अब मैं कैसे सीख पाऊँगी मुर्गों के तरह चिल्लाना?”

पंकज– “हम्म्म्म... चिंता मत करो! तुम स्कूल के बहाने से कभी-कभी सीखने आ सकती हो, मैं भी स्कूल उस दिन छुट्टी कर लूंगा। सुबह के वक़्त कोई तुम्हें देख भी नहीं पाएगा। और उस दिन का जो काम छूटा, वो मैं अपने दोस्तों से ले कर तुम्हें भी दे दूँगा।“बिट्टू इस बात से खुश हो गयी और अगले कुछ दिन तक ऐसे ही चलता रहा। दोनों कभी-कभी स्कूल में छुट्टी कर लेते थे

और कूकडुकू बोलने का अभ्यास करते थे। एक दिन ऐसे ही पंकज के घर से निकलते हुए, बिट्टू के पापा ने उन्हें देख लिया। पड़ोसी की बातें आज भी उनके मन में चल रही थी, उन्होनें आगे पीछे कुछ भी नहीं सोचा न देखा, सीधे बिट्टू की शादी कराने का निर्णय ले लिया।

सुबह-सुबह बिट्टू अपने माता-पिता को व्यस्त देख कर थोड़ा घबरा जाती है। घर में इतनी चहल-पहल नहीं देखी थी उसने, उसने भी खुशी से काम में हाथ बँटाने के लिए पूछा और ये भी की घर में क्या हो रहा है? उसके पिता ने बताया कि लड़के वाले उसको देखने आ रहे हैं और इसी में बिट्टू के चेहरे पर उदासी छा गयी।

बिट्टू - "पर बापू, आप तो मेरी दूसरी सहेलियों के पिता से अलग थे, मुझे पढ़ाना लिखाना चाहते थे न, तो मेरी इस उम्र में शादी?"

बापू - "हाँ, पढ़ लिया जितना पढ़ना था, अब शादी करना सही रहेगा। तेरी बाक़ी सहेलियों की भी तो शादी हो गयी है, वो सब तो ठीक हैं। तू भी ठीक ही रहेगी।"

बिट्टू - "और स्कूल?"

बापू – “आज चली जा स्कूल, कल से मत जाना।“

अपने घरवालों की सोच में अचानक बदलाव देख कर बिट्टू कुछ समझ नहीं पाई। उसने चुपचाप से अपना बस्ता उठाया और स्कूल निकल गयी। वहाँ उसने पंकज को सब बात बताई। उसने तुरंत बिट्टू को पुलिस से शिकायत करने के लिए कहा, लेकिन बिट्टू अपने माता-पिता के ख़िलाफ़ नहीं जाना चाहती थी। उसने घर वापस आकर अपनी मम्मी से भी बात की कि उसकी शादी रोक दी जाए, पर मम्मी भी खुश थीं कि एक बड़े घर में उसका रिश्ता पक्का हुआ है इसलिए बिट्टू को भी खुश होना चाहिए। बिट्टू ने फिर उदास होते हुए अपनी माँ से एक आखिरी बार खेलने जाने के लिए पूछा और मम्मी मान गयीं।

उस दिन खेलने के बहाने बिट्टू ने अपनी सभी सहेलियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "देखो सहेलियों आज मेरा बाल-विवाह हो रहा है, कल तुम सब का भी होगा। अगर तुम सब भी बाल-विवाह नहीं करना चाहती और पढ़ना चाहती हो तो मेरी सहायता करनी होगी..." सहेलियों के साथ बिट्टू ये योजना बना ही रही थी कि बिट्टू के पिता आ जाते हैं और सारी बातें सुन लेते हैं। गुस्से में आकर, वहीं बिट्टू को मार-मार कर घर ले जाते हैं।

रोते हुए बिट्टू पूछती है की उसने ऐसा क्या कर दिया कि जो माता-पिता स्वयं उसे पढ़ाना लिखाना चाहते थे, आज उसकी शादी कराने पर तुले हुए हैं। उसके बापू ने सब बताया कि कैसे उन्होंने ज़माने के ख़िलाफ़ जाकर बिट्टू को पढ़ाने के लिए स्कूल भेजा, लेकिन बिट्टू ने उनके साथ विश्वासघात किया, वो स्कूल के बहाने दूसरे लड़कों के घर जाती थी, जिस कारण उन्हें अपने पड़ोसियों से भी खरी खोटी सुननी पड़ी। ये सब सुनते ही बिट्टू समझ गयी कि बात क्या हुई थी। उसने बताया कि कैसे वो अपने बापू को सरप्राइज़ देना चाहती थी मुर्गों की तरह कूकडुकू बोलके, ताकि वो एक अच्छे घर में नौकरी पा सके और अपने माता-पिता को आराम की ज़िंदगी दे सके। अपनी बात को साबित करने के लिए बिट्टू ने चीख़ कर दिखाया।

अब उसके **माता-पिता के आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने खुद को कोसा की उन्होंने अपनी इतनी प्यारी बच्ची पर शक किया, जिस कारण उसके आगे की ज़िंदगी भी बिगड़ सकती है। लेकिन अब देर भी हो गयी थी। शादी की बात करने कल ही लड़के वाले उनके घर आ रहे थे, अभी अगर मना किया तो समाज में नाक कट जाएगी। इसलिए, पिताजी ने खुद से दिमाग लगा कर एक योजना निकाली।**

अगले दिन बिट्टू और उसके पिता लड़के वालों के लिए मिठाई खरीदने बाज़ार के तरफ़ गए। उन्होंने बिट्टू को बताया कि उस शहर की पुलिस अधिक्षिक एक महिला है, तो ठीक पुलिस स्टेशन के सामने ही बिट्टू को गाड़ी रुकवाना है किसी बहाने से और उन महिला ऑफिसर से बात करनी है। बिट्टू ने वही किया। पुलिस स्टेशन के बाहर गाड़ी रुकवा कर उसने पेशाब जाने के लिए पूछा, पुलिस अधीक्षिका की ऑफिस जाकर सब बता दिया और आगे की योजना भी बता दी। पुलिस अधीक्षिका काफ़ी आश्चर्य-चकित

रही, लेकिन उन्हें अच्छा भी लगा कि कैसे एक परिवार अपनी गलती को मान कर बाल विवाह रोकना भी चाहती है और समाज में अपनी नाक बचाना भी चाहती है। पुलिसवाले भी उनकी योजना को मान गए। सुबह १० बजे जब लड़के वाले उनके घर आये, पुलिस भी वहाँ पहुँच गयी और खूब डाँटा-फटकारा, फिर उन्होंने बिट्टू के परिवार और लड़के वालों को भी गिरफ़्तार करने की धमकी दी, और बाहर इकठ्ठा हुए परिवारों से भी कहा कि वो लोग उस मोहल्ले में खास नज़र डाल के बैठेंगे और किसी भी बच्ची का बाल विवाह अगर कराया गया तो दोनों परिवारों के रिश्तेदारों समेत सबको जेल में डाल दिया जाएगा।

पुलिस के जाने के बाद, बिट्टू के माता-पिता एक दूसरे की तरफ देखते हुए जीत की खुशी झलकाते हैं, लेकिन अपने नाटक को कायम रखते हुए, सब गुस्से, अपमान और दुख दर्शाने में जुट जाते हैं। बाहर, सब इस बात से घबरा जाते हैं, लेकिन, इसी बहाने बिट्टू और उसकी सहेलियों का स्कूल जारी रहता है और इस बात से संतुष्टि मिलती है कि कोई उनकी ज़बरदस्ती शादी नहीं करेगा।

चर्चा के बिन्दु :

- **बिट्टू के माता-पिता बाक़ी माता-पिताओं से अलग कैसे थे?**
- **बिट्टू उनके लिए क्या करना चाहती थी? इसको करने के लिए बिट्टू ने किसकी मदद ली?**
- **पंकज के साथ देखकर पड़ोसी ने क्या किया?**
- **भले ही उसके माता-पिता खुले विचार के थे, पड़ोसी की इस बात का उनपर असर क्या पड़ा?**
- **पिता के स्कूल के बाद कि बात पूछने पर बिट्टू ने झूठ क्यों बोला?**
- **पिता ने बिट्टू और पंकज के बारे में गलत क्यों सोचा? क्या ऐसे उदाहरण आपके पास भी हैं जहाँ एक लड़का और लड़की की दोस्ती को गलत समझा गया?**
- **अपनी शादी को रोकने के लिए बिट्टू ने अपनी सहेलियों के साथ मिल कर क्या किया?**
- **बिट्टू के माता-पिता को उनकी गलती का एहसास कैसे हुआ?**
- **बिट्टू के पिता ने अपनी गलती को सुधारने के लिए क्या योजना बनाई? आपको उनकी सोच के बारे में कैसा लगा?**
- **क्या आपके आसपास भी ऐसे माता-पिता या परिवार के लोग हैं जिन्होंने अपने बच्चों के बाल विवाह को रोकने के लिए कोई अलग योजना बनाई हो? उदाहरण दे के बतायें।**

डार्क एंड लवली

- सुश्री काजल

मुन्नू और टुन्नू नाम के दो कौवे थे, मुन्नू पिता था और टुन्नू उसका बेटा। मुन्नू की पत्नी ने कुछ साल पहले ही उसको और उसके बेटे को अपने घोंसले से निकाल दिया था। सुनने में आया था की उसका दिल किसी जवान कौवे ने मोह लिया था। **बिना औरत के परिवार की बड़ी दुर्दशा होती है इस दुनिया में! सबने ये मान लिया था की किसी वजह से वह अपनी पत्नी को खुश नहीं रख पाता था।** कमाने वाली भी वही थी, मुन्नू उतना पढ़ा लिखा भी नहीं था, लेकिन अपना और बेटे का पेट पालने के लिए यहाँ-वहाँ छोटा-मोटा काम ढूँढ लेता था। ऊपर से दोनों बिलकुल घनघोर काले रंग के थे, जो की बहुत ही खूबसूरत माना जाता है, तो वैसे ही महिला कौवों की नज़र उनपर पड़ी रहती थी।

एक दिन जब मुन्नू काम पर गया था, टुन्नू अकेला घूमने निकला, घोंसले से निकल कर बस थोड़ी ही देरी हुई थी की पड़ोस के घोंसले में रहने वाली टीना और मीना उसे छेड़ने लगीं, अश्लील गाने गाने लगी थीं दोनों और लगातार उसका पीछा करने लगीं। टुन्नू डर के मारे जितना तेज उड़ सकता था उतना तेज उड़ कर घोंसले में वापस आया। शाम को जब पापा वापस आए, टुन्नू ने रोते हुए उनको पूरी बात बतायी। अपने जवान और ख़ूबसूरत बेटे की इज्जत को ऐसे ख़तरे में देख कर मुन्नू बहुत घबरा गया। वैसे भी बिना माँ के बेटे को कोई अपना दामाद नहीं बनाना चाहेगा और अब ये! शाम भर सोचने के बाद मुन्नू ने निर्णय लिया कि अब वो वहाँ नहीं रहेंगे।

अगले दिन सुबह-सुबह, दोनों बाप-बेटे ने अपना सारा सामान बाँधा और दूसरे जंगल की ओर निकल पड़े। वहाँ पहुँचकर, सबसे पहले दोनों ने अपने घोंसले के लिए एक पेड़ ढूँढा, फिर तुरंत ही मुन्नू ने टुन्नू के ऊपर सफेद रंग लगा दिया, ताकि उसके रंग-रूप को देखकर कोई दोबारा टुन्नू को परेशान न करें। वहीं रह कर मुन्नू ने किसी अमीर कौवे के घोंसले में साफ-सफाई और खाना लाने का काम शुरू किया।

एक दिन मुन्नू बीमार पड़ गया और टुन्नू उसके लिए दवा लेने बाहर गया। दवा लेकर वापस आ ही रहा था की तेज बारिश शुरू हो गई, और उसका सफ़ेद रंग उतर गया| वहीं पर बगल के घोंसले में रहने वाली कुछ महिला कौवों ने उसे देख लिया और उसका पीछा किया। टुन्नू अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए बहुत तेज़ उड़ा और सीधे जाकर एक पुलिस थाने पहुँचा। उसने पुलिस वाली कौवी को सब बता दिया। पुलिस वाली टुन्नू की खूबसूरती से आकर्षित होकर बस उसे घूरती रह गई। उसने टुन्नू को बचाने का प्रण लिया और पीछे पड़ी गुंडियों को भगा दिया। फिर वो स्वयं टुन्नू को उसके घर तक पहुँचाने गई।

मुन्नू से मिलकर पुलिस वाली ने सीधे टुन्नू से शादी करने की बात की। मुन्नू सकपका गया, लेकिन फिर स्वयं को संभालते हुए बोला कि "टुन्नू तो अभी बहुत छोटा है, अभी हम उसकी शादी कैसे करा सकते हैं?" पुलिस वाली कौवी को ना सुनने की आदत नहीं थी, गुस्से से तमतमाते हुए उसने कहा की मुन्नू से पूछकर तो वो बस अपनी तमीज़ दिखा रही थी लेकिन उसको मना करके मुन्नू पुलिस वाली का अपमान कर रहा है। मुन्नू ने घबराते हुए फिर से समझाया की टुन्नू अभी बच्चा है, उसकी शादी की उम्र नहीं है। पुलिस वाली तिरस्कार को संभाल नहीं पाई और मुन्नू के सामने ही उसने टुन्नू को आग लगा दिया और कहा की "अगर वो मेरा नहीं हो सकता तो किसी और का भी होने नहीं दूँगी।"

चर्चा के बिंदु:

- **टुन्नू और मुन्नू की दुनिया में सुंदरता का क्या अर्थ था?**
- **मुन्नू की पत्नी ने उसे क्यों छोड़ा?**
- **इस कहानी में बिना माँ के बेटे और बिना पत्नी के आदमी को समाज में किस नज़र से देखते थे? आपका क्या विचार है इस सोच पर?**
- **टुन्नू और मुन्नू को क्यों अपना घोंसला छोड़ कर जाना पड़ा?**
- **नई जगह पर आ कर मुन्नू ने टुन्नू के साथ क्या किया और क्यों?**
- **बारिश के दिन क्या हुआ?**
- **पुलिस वाली ने टुन्नू के साथ क्या किया और क्यों?**
- **कितने लोगों को ये कहानी सुन कर मजा आया और हास्यजनक बात लगी की लड़कियाँ लड़कों को छेड़ती है और लड़के इज्जत बचाने के लिए भागते हैं? विस्तार में बताएँ की ऐसा क्यों लगा?**
- **हमारे समाज में भी ऐसा होता है क्या?**
- **किस भावना से पुलिस वाली ने टुन्नू को जलाया? क्या आपने अपने आस पास या टीवी पर कभी ऐसा कुछ सुना है? आपके क्या विचार है इस बारे में?**
- **मुन्नू के प्यार से समझाने पर भी पुलिस वाली को समझ नहीं आया, उल्टा उसने इसे अपना अपमान समझ लिया। ऐसा क्यों हुआ? क्या अपने आस-पास भी आपने ऐसे स्वभाव को किसी और में देखा है?**
- **जब हम किसी से कुछ पूछते हैं, तो उनके 'ना' की भी हमें इज्जत करना चाहिए, लेकिन अक्सर हम एक नकारात्मक जवाब नहीं अपना पाते। एक इंसान को 'ना' का मतलब अपनाने लिए, उसकी परवरिश में हम क्या-क्या चीज़ें कर सकते हैं ताकि बड़े होकर वो किसी और को नुकसान न पहुंचाएँ?**

फुटबॉल या आज़ादी?

- श्री मंजीत कन्नौजिया

लड़कियों का एक झुंड फुटबॉल खेल रहा था, तब ही मोहन दौड़ते हुए मैदान में आता है और पूछता है कि "मैं भी तुम सब के साथ फुटबॉल खेलना चाहता हूँ। मेरे साथ का कोई दोस्त बॉल ले कर खेलना नहीं जानता है। मुझे तुम लोगों को खेलता देख बहुत मज़ा आता है। मुझे भी खिला लो अपने साथ।"

लड़कियाँ हँस पड़ती हैं, कहती हैं, "जाओ गुड्डे-गुड़ियों से खेलो। फुटबॉल तो लड़कियों का खेल है, लड़कों का नहीं।" फिर वो मोहन को मैदान से भगा कर खेलने लगती हैं।

उदास मोहन अपने दोस्तों के पास वापस आकर देखता है कि वो अभी भी घर-घर खेल रहे हैं। उनसे वो दोबारा पूछता है, "क्या तुम मेरे साथ फुटबॉल खेलोगे?" मोहन के दोस्तों ने भी बोला, "ये सब क्या लड़कियों वाली बातें करने लगा है? फुटबॉल क्यों खेलेंगे हम? घर-घर खेल ना हमारे साथ, कितना मज़ा आ रहा है। चल इस बार तुझको पापा बनाएंगे, तू ही घर संभालना। ठीक है?" मोहन इन सब से काफी उदास होता है। वो भी चाहता है की अपनी दीदी की तरह उसे आज़ादी मिले कुछ भी पहनने की, कहीं भी जाने की, फुटबॉल खेलने की, शहर में जाकर पढ़ाई करने की, इत्यादि, लेकिन यहाँ तो उसके साथ के दोस्त उसे समझ नहीं पा रहे तो बड़ो से क्या ही उम्मीद रखना है।

धीरे-धीरे उसके समाज में लोग उसके बारे में उल्टा-सीधा बोलने लगते हैं, उसके माता-पिता को भी कोसते हैं कि "ये कैसा औरताना बेटा पैदा किया है तुमने, जब देखो तब लड़कियों की तरह शॉर्ट्स पहनना चाहता है, उनके साथ फुटबॉल खेलना चाहता है। अभी भी समय है, संभाल लो लड़के को, शादी करा दो किसी अच्छी लड़की से, वरना ऐसे बेहया लड़के को कौन अपने घर का दामाद बनाएगा?"

मोहन के माता-पिता समाज के दबाव में आकर उसके लिए एक अच्छे घर की लड़की ढूँढने लगते हैं, लेकिन मोहन के खुले विचारों के लिए उसका नाम काफी खराब हो गया था। कोई भी उसे अपने घर में दामाद बनाकर नहीं लाना चाहता था। लगातार एक के बाद एक परिवारों के मोहन से शादी के रिश्ते ठुकरा देने की वजह से माता-पिता मोहन से और भी चिढ़ने लगे। उन्होंने ठान लिया की अब जो कोई भी परिवार शादी के लिए मान जाएगा, चाहे वो जैसी भी लड़की हो, मोहन के घरवाले उससे उसकी शादी करा देंगे। आखिर में, करीब साल भर बाद मोहन के लिए एक औरत का रिश्ता आया। वो लगभग ४० साल की थी, उसके पहले पति का देहांत हो गया था कुछ साल पहले। हालांकि मोहन १२ वर्षीय लड़का था, उसका नाम खराब होने की वजह से उसके घरवाले एक वरिष्ठ महिला के साथ शादी कराने को राज़ी हो गए। मोहन नहीं चाहता था कि उसकी शादी हो, लेकिन एक १२ वर्षीय लड़के की आवाज़ एक महिला-प्रधान समाज में आखिर कौन सुनता है...

चर्चा के बिन्दु:

- **मोहन फुटबॉल क्यों खेलना चाहता था?**
- **लड़कियों ने मोहन को फुटबॉल क्यों नहीं खेलने दिया?**
- **मोहन के दोस्त फुटबॉल क्यों नहीं खेलते थे?**
- **मोहन क्या चाहता था?**
- **समाज में मोहन की बदनामी क्यों हुई?**
- **पड़ोसी मोहन के माता-पिता को क्यों और क्या कह कर कोसते थे?**
- **मोहन के माता-पिता ने उसकी शादी क्यों करानी चाही?**
- **आखिर में, मोहन की शादी किससे हुई और क्यों?**
- **मोहन के शादी के बारे में आपके क्या विचार हैं?**
- **इस कहानी में हमें समाज के बारे में क्या पता चल रहा है? क्या ऐसा ही, या इससे मिलता-जुलता हमने अपने आस-पास देखा है? विस्तार में बताइए।**

आधी घरवाली...

- मोहम्मद फराज़

उत्तर-प्रदेश के एक गाँव में एक छोटा सा परिवार रहता था, एक माँ और उसकी दो बेटियाँ, अनु और मीना। पापा की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी, लेकिन उनके बाद, तीनों महिलाओं ने मिल के अपने आप को और घर को बहुत ही अच्छे से संभाला था| माँ गाँव में चल रहे एक स्वयं सहायता समूह में काम करती थी, बड़ी बेटी अनु बगल की फैक्ट्री में काम करती थी और मीना अपनी पढ़ाई के साथ-साथ घर के आस-पास के बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती थी।

अनु जिस फैक्ट्री में जाती थी, वहीं पर काम करने वाले एक लड़के से उसको प्यार हो गया। उस लड़के का नाम था मोहन। उसे अपने खाली समय में पान चबाना, गले में गमछा डाल कर अपने दोस्तों के साथ बाइक पर घूमना-फिरना, भोजपुरी गाना सुनना और गंगा मैय्या की पूजा करना बहुत अच्छा लगता था। अपने घरवालों का लाडला, फैक्ट्री में सबका चहेता, हँसता-गाता, अच्छा लड़का था मोहन। वो भी अनु से बहुत प्यार करता था। उसे अच्छा लगता था की अनु और उसके परिवार ने पिता की मृत्यु से हार नहीं मानी, बल्की उस चुनौती में स्वयं को सशक्त बनाने का मौका ढूँढा और इतनी निपुणता से सब कुछ सम्भाला। अनु अपने परिवार की मुखिया थी, सबसे ज्यादा वही कमा के लाती थी और सबसे ज्यादा पढ़ी-लिखी भी वही थी तो घर के निर्णय भी वही लेती थी। अनु की परिस्थति को समझते हुए मोहन ने भी ये तय किया की शादी के बाद दोनों अनु के घर पर ही रहेंगे ताकि उसकी माँ और छोटी बहन को ज्यादा दिक्कत ना आए। मोहन के घरवाले इस बात से काफ़ी नाराज़ हुए, क्योंकि घर-जमाई को अच्छा नहीं माना जाता था उनके समाज में। मोहन अपने परिवार में तीसरा बेटा था, और इस बात का फ़ायदा उठाते हुए उसने अपने घरवालों को मनाया की बाकी दो भाई तो हैं ही घर देखने के लिए। घरवाले सुनने को तैयार तो नहीं थे, पर जब उनके सबसे लाडले बेटे ने अपना मन बना ही लिया था, तो माता-पिता की बात उसके आगे कहाँ चलनी थी?

इन्हीं सब के कुछ दिनों बाद दोनों की धूम-धाम से शादी हुई और अनु और मोहन, अनु के घर में रहने लगे। ससुराल में भी अपनी बहुत अच्छी जगह बना चुका था वो। सासू माँ का तो वो लाडला बेटा ही बन गया था। सब बहुत खुश थे, बस मीना काफ़ी असहज रहने लगी थी। मोहन, जो बहुत ही मजाकिया लड़का था, ये जनता था की इनके समाज में जीजा-साली का रिश्ता छेड़-छाड़ से भरा होता है। इसलिये, वो कभी भी आते-जाते मीना का हाथ पकड़ लेता था, या कभी उसके सामने कोई रोमांटिक गाना गा देता था या यूँ ही छेड़ देता था। मोहन तो अपनी समझ से कुछ भी गलत इरादे से नहीं कर रहा था। वो जनता था कि जीजा-साली का रिश्ता ऐसा ही होता है, फिल्मों में भी उसने यही देखा है और अपने भाई, चाचा, पापा, मामा सबको ऐसे ही करते देखा है।

मीना अपने जीजा की इन हरकतों से काफ़ी परेशान रहती थी। वो मोहन को रोकना चाहती थी, लेकिन नई-नई शादी हुई थी उसकी दीदी और जीजा की, और जीजा इतनी समझ और प्यार भी दिखा रहे थे उसके परिवार के लिए, तो कहीं उन्हें बुरा लग जाए मीना की बात का, तो उसकी दीदी का क्या होगा? ऐसे ही घुटन में कुछ महीने तक जीने के बाद, मीना ने बहुत हिम्मत जुटा कर अनु से बात करने की ठानी। शाम को दोनों बहनें छत पर थी जब मीना अनु से बात करते समय फूट-फूट कर रोने लगी। अनु को कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। सुनने में तो लग रहा था की मीना मोहन की हरकतों से परेशान है, लेकिन मोहन इतना अच्छा लड़का है, वो कुछ गलत कैसे कर सकता है? उसने मीना को शांत करते हुए, उसकी बात को रफा-दफा करने की कोशिश की। सीढ़ी के पास खड़े मोहन ने सब सुन लिया था। उसे बहुत तेज़ गुस्सा आया की मीना उसके मिलनसार स्वभाव का गलत मतलब निकालकर उसको बदनाम करने की कोशिश कर रही है। उसने बहुत मुश्किल के साथ अपने गुस्से को काबू किया और अपने कमरे में चला गया। मोहन सोच में डूब गया की उसने ऐसा क्या किया होगा जो मीना उसके सामने इतना असहज महसूस करती है, लेकिन उसको कुछ सूझा ही नहीं। आखिर में उसने सीधे मीना से ही बात करने की सोची।

अगले दिन मीना को अकेला पा कर मोहन ने कल की बात छेड़ी, मीना एक दम से डर गई। लेकिन मोहन ने उसे प्यार से आश्वासन दिया की वो उसकी परेशानी को समझना चाहता है। मीना से जितना हो सका, सब बताया कि कैसे छोटी उम्र में ही उसके पिता की मृत्यु हो गई और तब से किसी आदमी के घर में होने की आदत नहीं है। तो मोहन को अपने घर में देखना उसके लिए थोड़ा सा अलग अनुभव है, लेकिन मोहन का उसका हाथ पकड़ लेना या गाना गाना उसे और भी परेशान कर देता है। उसे स्वयं पर ही घिन आने लगती है की इतना अच्छा इंसान उसे ऐसे छेड़ रहा है, जरूर वो ही एक गंदी लड़की होगी। मोहन को इस बात से बहुत दुःख पहुँचा। **उसने आज तक बस अपने परिवार के मर्दों को उनकी सालियों को छेड़ते हुए ही देखा है, लेकिन कभी ये जानने की कोशिश ही नहीं कि की उन लड़कियों को कैसा लगता होगा... उसने मीना से माफ़ी माँगी और वादा किया कि अब वो उसे छेड़ेगा नहीं और मीना से भी वादा लिया की आगे कभी भी अगर मोहन की कोई बात उसे बुरी लगे तो वो सीधे उसी को बतायेगी, अकेले में बैठ कर नहीं रोयेगी। मीना ने भी मोहन से वादा किया। ऐसे ही वो लोग तीन से बड़े होकर, चार लोगों का परिवार बन गए, जहाँ हर कोई एक दूसरे से प्यार और सम्मान के साथ रहते हैं...**

चर्चा के बिंदु:

- **अनु, मीना और उनकी माँ ने पिता के मृत्यु के बाद क्या किया?**
- **अनु और मोहन कहाँ मिले?**
- **मोहन कैसा लड़का था?**
- **मोहन ने कैसे समाज की एक बड़ी रीति को तोड़ा? उसके माता-पिता की क्या प्रतिक्रिया रही और मोहन ने उन्हें कैसे मनाया?**
- **मोहन और मीना का रिश्ता शुरू में कैसा था?**
- **मीना को मोहन से क्या परेशानी थी?**
- **मीना क्यों मोहन को अपनी परेशानी नहीं बता सकी?**
- **मीना की परेशानी को जानने के बाद मोहन ने क्या किया?**
- **कई बार हो सकता है कि सामने वाला अच्छे मन से कुछ कर रहा हो, लेकिन हमें वो बात अच्छी न लगे। तब हम क्या कर सकते हैं?**
- **मीना को मोहन ने कुछ गलत जगह पर नहीं छुआ, बस कभी-कभी हाथ पकड़ लेता था, फिर भी मीना को वो अच्छा नहीं लगता था। अपने शरीर के लिए दायरे बनाना सही है या गलत?**
- **मीना ने कहा की मोहन जब उसे छेड़ता था तो उसे खुद पर घृणा आती थी| इस बात पर आपका क्या विचार है?**
- **हमारे समाज में कई बार प्यार को छेड़-छाड़ के साथ जोड़ते हैं या जीजा-साली के रिश्ते को भी। मोहन की कहानी से हम इस विषय में नई सीख क्या ले सकते हैं?**

मोलू और मोली

- सुश्री श्वेता खरवार

मोलू और मोली एक मध्यम वर्गीय परिवार में दो भाई-बहन थे, उनके पिता नौकरी करते और माँ घर संभालती थी।

हालांकि दोनों बच्चों को एक ही स्कूल में भेजा जाता था, ताकि दोनों बच्चों को बेहतर भविष्य के समान अवसर मिलें, लेकिन घर पर बात इससे बहुत अलग थी। मोली, क्योंकि घर कि बेटी है, उसे हमेशा स्कूल से पहले और बाद में माँ का हाथ बँटाना होता था। उम्र में मोली मोलू से साल भर छोटी थी, तो कपड़े भी उसे मोलू के छूटे हुए ही पहनने पड़ते। मोलू को बाहर जाकर अपने दोस्तों से खेलने की छूट मिलती लेकिन मोली को बस अपने घर पर ही सहेलियों को बुलाकर खेलने कि आज़ादी थी। घर में जब भी मुर्गा बनता, तो टांग सिर्फ पिता और भाई को ही खाते देखती। उसके घर में ये भी मानते थे कि खाने का पहले परोसन घर के बेटे को मिलना चाहिए ना कि बेटी को। इसलिए, दोपहर और रात के खाने से पहले मोली को कितनी ही भूख क्यों ना लगे, पिता या भाई के खाने तक उसे रुकना पड़ता। मोली को कभी समझ नहीं आता था कि उसके और मोलू के लिए नियम अलग क्यों हैं। उसने कई बार जानने कि कोशिश भी की लेकिन माँ और पिता दोनों ने ही उसको बदतमीजी करने के लिए डाँटा था।

धीरे-धीरे मोली को समझ आने लगा कि घर में भाई कि ज़्यादा चलती है, इसलिए उसने सोचा की 'क्यों न मोलू को ही बताया जाए की उसे इन सबसे कैसा लगता है, ताकि वो ही माँ-पिता को समझाए।' उसे अपनी ये योजना बहुत ही अच्छी लगी और ख़ुशी-ख़ुशी वो मोलू से बात करने गयी। मोलू ने पूरी बात सुनी और मोली से कहा कि, "ठीक है, मैं करता हूँ कुछ।"

उसी रात को, जब मोली अपने कमरे में स्कूल का काम कर रही थी, उसकी माँ ने उसे ज़ोर से आवाज़ दिया। मोली बहुत खुश थी कि आज से सब बदलने वाला है, लेकिन कमरे में पहुंचते ही माहौल कुछ और ही पाया। उसको खूब डाँट पड़ी और दो-चार थप्पड़ भी। अगले कुछ दिनों में सब बदल गया - मोली बस स्कूल जाती, और पूरा दिन घर पर ही रहती और घर के काम में हाथ बँटाती। अपनी सहेलियों से मिलना भी बंद हो गया था। मोली बहुत उदास थी, और एक दिन, मोलू को अकेले पा कर उसने पूछा कि माँ-पिता से ऐसा क्या कहा था मोलू ने जो वो इतने गुस्से में हैं मोली को ले के। मोलू ने तो कहा कि जो भी मोली ने उससे कहा था, वही बताया है। मोली ने मोलू कि बात मान ली और वापस अपने कमरे में चली गयी और मोलू अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया।

अगले दिन सुबह उठकर जब मोलू ब्रश करने गया तो मोली को बाथरूम में देख कर गुस्सा गया कि "तू सुबह-सुबह मेरे बाथरूम में क्या कर रही है!" फिर एकाएक उसको समझ आया कि सामने मोली नहीं आईना है और ये लम्बे बाल उसके अपने हैं और मोली का चेहरा भी उसी के चेहरे में है! वो ज़ोर से चिल्लाया और माँ भागी चली आयी।

“अरे मोली उठ गयी? जा नहाले, स्कूल जाना है ना? बाहर तेरा नाश्ता रखा है खा लेना”।

मोलू ने कहा, “माँ मैं मोली नहीं हूँ, मैं तो मोलू हूँ। मोली तो देखो उस बिस्तर पर सोई है। ”

माँ बोली “अभी भी नींद में है क्या? क्या बोल रही है?” मोलू ने फिर ज़िद्द किया कि वही मोलू है, और माँ का आपा खोने लग

गया, एक चांटा मोलू के गाल में कसते हुए बोली "हद होती है बेशर्मी की। पहले तो अपने भाई का नाम ख़राब करने कि कोशिश करती है, उसके जैसे आज़ादी मांगती है और अब खुद को अपना भाई बताने लगी है। जा नहाले जा के वरना स्कूल जाना भी बंद कर देंगे तेरा।" इन सब शोर से मोली कि नींद भी टूट चुकी थी। उसने माँ कि आखिरी बात सुनी थी केवल। अपने भाई को अपनी शकल में देख कर थोड़ा सा सकपका गयी थी वो लेकिन धीरज बाँधे ध्यान से सब देख रही थी। जब मोलू नहा कर निकला, तो मोली ने उससे पूछा कि दोनों का शरीर कैसे बदल गया। मोलू इस बात पे खुश हुआ कि अब कम से कम माँ मान जाएगी, लेकिन मोली ने माँ से बात करने से साफ़ मना किया और पूछा कि "माँ ने ये क्यों बोला कि मैं तुम्हारा नाम ख़राब कर रही हूँ?" मोलू बिलकुल चुप हो गया और शान्ति से जा कर मोली के कपड़े पहनने लगा। जब नाश्ता करने गया तो देखा उसकी पसंद का कुछ नहीं है वो फिर माँ से बोला “मेरा नाश्ता कहाँ है? माँ ने कहा “जो मिला है वो चुप-चाप खा ले और स्कूल जा”।

मोलू सोचने लगा की ये बेकार से नाश्ता तो मोली का है मैं क्यों खाऊं? पर उसने खाया और देखा कि मोली को तो उसका मनपसंद नाश्ता मिला है। अगले कुछ दिनों तक मोलू को लड़कियों के कपड़े पहनने पड़ते, वो भी उसी के पुराने उतारे हुए कपडे, घर का काम भी करना पड़ता और अपने दोस्तों से मिलने में भी मनाही थी। एक दिन जब घर में मुर्गा बना था तो टांग उसको चाहिए था लेकिन मोली को दे दिया गया। धीरे-धीरे मोलू को भी दिखने लगा कि मोली कि ज़िन्दगी उससे कितनी अलग थी। उसको सारा काम करना पड़ता, खाने में भी उसके पसंद का कुछ नहीं बनता, मुर्गे कि टांग उसको पसंद थी लेकिन उसको नहीं दिया जाता, अपने दोस्तों से नहीं मिलने दिया जाता और हमेशा घर में ही रहना पड़ता था। मोलू को अपने आप पर बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। उसने मोली को बताया कि कैसे उसने उसका भरोसा तोड़ा और उस दिन मोली कि तरफदारी करने के बदले उसने माँ-पिता से झूठ कहा कि “तुम मुझे मारती हो और मुझे बदनाम करने कि धमकी भी दी थी कि तुम मेरा सारा स्कूल का काम कर देती हो, अगर मैंने माँ-पिता से तुम्हें और आज़ादी देने कि बात नहीं कि तो।“ ये कह कर मोलू फूट-फूटकर रोने लगा और मोली से माफ़ी माँगी। उसे एहसास हो गया था कि एक ही घर में दो बच्चों के बीच के भेदभाव को झेल पाना कितना मुश्किल काम था मोली के लिए, लेकिन अब तो दोनों के शरीर कि अदला-बदली हो गयी है तो माँ-पिता इनकी बात भी नहीं मानेंगे। मोली सब कुछ ध्यान से सुन रही थी। उसने मोलू को शांत कराया और कहा कि वो कोई उपाय निकालेगी। दोनों लोग यही सब सोचते हुए सो गए।

अगले दिन जब उठे तो दोनों बहुत खुश थे, रात में दोबारा उनका शरीर बदल गया था। अब मोली अपने शरीर में और मोलू अपने। सब कुछ पहले जैसा हो गया बस एक बदलाव था, मोलू के मन में। मोलू सीधे भागकर अपनी माँ के पास गया और खूब प्यार दिखाया। पिछले कुछ दिनों के अजीब व्यवहार से माँ भी परेशान थी लेकिन आज अपने लाडले बेटे को खुश देख कर वो भी खुश हो गयी। मोलू ने तभी माँ से कहा कि मोली कि धमकी देने वाली बात उसने झूठ कही थी ताकि मोली को डाँट पड़े और साथ ही ये भी बताया कि कैसे पिछले कुछ दिनों से वो सोच रहा था कि **मोली के साथ जो भेदभाव किया जाता है इस घर में वो भी उसे ठीक नहीं लगता। पहले तो माँ ने इस बात को रफा-दफा करने कि कोशिश की लेकिन मोलू भी अपनी ज़िद्द पे अड़ा रहा। करीब हफ्ते भर के अंदर ही छोटे-छोटे बदलाव दिखने लगे - मोली अब अपनी सहेलियों के साथ बाहर खेलने जाती थी, घर में मुर्गा बनने पर अब चार मुर्गे की टांग आती थी, हर सदस्य के लिए एक। पुरे तरीके से तो नहीं, लेकिन जहाँ तक हो सके मोलू ने मोली के लिए बराबरी लाने कि हर कोशिश कि...**

चर्चा के बिंदु:

- **मोलू और मोली कैसे परिवार से थे?**
- **दोनों के साथ घर में किन बातों में समानता रखी जाती और किन बातों में असमानता?**
- **मोली को ये असमानता कैसी लगती थी? उसने इसके बारे में क्या किया? माँ-पिता की क्या प्रतिक्रिया रही?**
- **मोली ने मोलू से क्या मदद माँगी? मोलू ने इसके बारे में क्या किया?**
- **आपके हिसाब से मोलू और मोली के शरीर की अदला-बदली क्यों हुई?**
- **शरीर के अदला-बदली के बाद मोलू को क्या पता चला? इससे मोलू पर क्या प्रभाव पड़ा?**
- **किस चीज़ के बाद दोनों के शरीर वापस से सही इंसान के पास आ गए? इस अनुभव से क्या हुआ?**
- **क्या भेदभाव को मिटाना सिर्फ कमज़ोर वर्ग का काम है?**
- **जिन घरों में भेदभाव होता है, वहाँ चहेते पक्ष के लोगों का क्या किरदार हो सकता है इस भेदभाव को मिटाने में?**

राजकुमारी शेरनी

- सुश्री रजनी सिंह

बहुत समय पहले की बात है, जंगल में एक शेर और शेरनी रहा करते थे। उस जंगल में उन्हीं का राज चलता था। वे दोनों बहुत ही अच्छे थे और सभी जानवर उनसे प्यार भी करते थे। इतना कि जब कभी शेर और शेरनी को भूख लगती तो वो खुद को उन्हें सौंप देते। ऐसी ही खुशहाली में चार चाँद लगाने, जंगल में एक छोटी सी राजकुमारी शेरनी का जन्म होता है। पूरे जंगल में मानो उत्सव का माहौल बन जाता है।

जैसे-जैसे राजकुमारी बड़ी होती हैं, उन्हें भी अपनी भाइयों के स्कूल में भेजा जाता है, जहाँ वो शिकार करना सीखती हैं, ज़ोर से दहाड़ना सीखती हैं और शान्ति और प्रेम से मुश्किलों को सुधारना सीखती हैं। राजकुमारी शेरनी बहुत मन लगा कर पढ़ाई करती हैं, और सभी कार्यों में निपुण हैं।

ऐसे ही दिन निकलते गए। राजकुमारी सयानी हो गयी, धीरे-धीरे अपने माता-पिता का जंगल संभालने में हाथ बँटाने लगी। कुछ दिनों बाद, खबर आती है कि पड़ोस के जंगल में, बिलकुल हमारी राजकुमारी के बराबर का ही एक राजकुमार शेर है। वो भी दिमाग से तेज़ और दिल का साफ़ राजकुमार था, जिस कारण वो बहुत लोकप्रिय भी था। राजा और रानी के कानों में जैसे ही ये बात पहुंची, उन्होंने निर्णय लिया कि पहले वो राजकुमारी से उसके शादी के इरादे पूछेंगे और अगर वो मान गयी तो पड़ोस के राजा को शादी कि बात करने का न्योता देंगे। राजकुमारी तुरंत ही शादी के लिए मान गयी। उसकी बस एक शर्त थी कि शादी बस ऐसे शेर से करेगी जो उस पर रोक-टोक ना लगाए, ताकि वो जब चाहे अपने माता-पिता की देखभाल करने आ सके। राजा रानी को ये बात बहुत ही प्यारी लगी और वो मान गए। अगले हफ्ते ही एक तगड़े से भैंस और चार तगड़े हिरणों की भेंट राजा ने पड़ोस वाले जंगल के राजा को भेजा और साथ ही अपनी बेटी के साथ उनके बेटे कि शादी का प्रस्ताव भी भेजा।

ठीक एक ही दिन के अंदर उधर से भी भेंटो की सौगात आयी और शादी की बात आगे बढ़ी। राजकुमार और राजकुमारी पहले तो अपने माता-पिता के साथ मिले, और यह तय हुआ की शादी के अंतिम निर्णय से पहले राजकुमार और राजकुमारी एक महीने मिलें और एक दूसरे को जाने और समझें।

अगला महीना दोनों का ही बहुत अच्छा रहा। दोनों एक दूसरे के दोस्तों से मिले, एक दूसरे की आकांक्षाओं को जाना और जीवन के लक्ष्य को भी। इसी समय राजकुमारी ने अपनी बात भी रखी कि रहने को ले कर वो ज़्यादा रोक-टोक नहीं चाहती। उसके माता-पिता बूढ़े हैं तो उसे जब भी सही लगेगा, वो बिना किसी रोक-टोक के अपने मायके आना चाहेगी। राजकुमार को ये बात बहुत अच्छी लगी और उसने भी तुरंत 'हाँ' कह दिया। महीने भर में दोनों शादी के लिए तैयार हो गए और अपने घरवालों को भी बताया। दोनों परिवारों ने निर्णय लिया कि शादी दोनों मिल के धूम-धाम से मनाएंगे, लेकिन दहेज़ वगैरह कि बात बिलकुल नहीं होगी। राजा और रानी बहुत खुश हुए कि एक अच्छे परिवार में अपनी बेटी कि शादी करवा रहे हैं।

दोनों की शादी की तैयारियाँ जोरों-शोरों से चलने लगती हैं। शादी की सारी रस्में निभाई जाने लगती हैं और अग्नि के सात फेरे लेकर दोनों एक दूसरे से सात वचन निभाने का वादा करते हैं। फिर पैर पूजने की रस्म की बारी आती है। राजकुमारी के माता-पिता आगे बढ़ते हैं, तभी राजकुमारी शेरनी कहती हैं, "अरे अरे मम्मी पापा आप ये क्या कर रहे हैं? आपने ही हमें संस्कार दिए हैं बड़ो का आदर करना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए, तो आज मैं आपसे पैर छुआकर आपका अपमान कैसे करूँ? आपका अनादर कैसे करूँ?"

तब शेरनी के पिता कहते हैं, "नहीं बेटा ये रस्म है, क्योंकि सात फेरे लेने के बाद आप दोनों गौरी शंकर का रूप हो इसलिए हम आपके पैर पूजने आये हैं"।

राजकुमारी शेरनी इस बात पर भड़क जाती हैं और मना करती हैं। राजकुमार के माता-पिता को बड़ा गुस्सा आता है। वहाँ जितने लोग राजकुमार के तरफ से होते है सभी को बहुत गुस्सा आता है। सभी एक दूसरे से गुपचुप-गुपचुप बात कर रहे होते हैं। शादी में आये हर किसी को गुस्सा आ रहा होता है, "इसी दिन के लिए लड़कियों को पढ़ाना लिखना नहीं चाहिए। अगर इसे बचपन से ही अपनी जगह दिखाई होती तो आज अपने मायके और ससुराल वालों को इतना अपमानित नहीं करती।"

राजकुमारी को लेकिन इस बात कि कोई फ़िक्र नहीं थी। उसे साफ़ पता था कि जो गलत है, उसके खिलाफ खड़ा होना चाहिए, भले ही अकेले क्यों न खड़े होना पड़े। राजकुमारी के माता-पिता उससे विनती कर रहे थे कि अपनी ज़िद्द छोड़ दे और रस्मों कि इज़्ज़त रख ले।

ये सब कुछ लगभग १० मिनट तक चलता रहा। राजकुमार अब तक शांत थे। उन्होंने अपने होने वाले सास-ससुर से पुछा, "आप इसलिए हमारे पैर छूना चाहते हैं न क्योंकि हम फेरे लेने के बाद अब गौरी-शंकर का रूप हैं?"
राजकुमारी के माता-पिता ने हाथ जोड़ कर 'हाँ' कहा।

फिर राजकुमार ने बोला, "तब तो चिंता कि कोई बात ही नहीं। मेरे माता-पिता भी हमारे पैर छूएंगे। आखिर भगवान आये हैं हमारे बीच तो हम सब से वो बड़े ही हुए न, तो सभी को उनका सम्मान करना चाहिए, सिर्फ राजकुमारी के माता-पिता को ही ये मौका क्यों मिले? ये तो भेद-भाव होगा न!"

राजकुमार कि बात ख़त्म होते ही चारों तरफ सन्नाटा छा गया, बस, सिर्फ राजकुमारी ही मुसकुरा रही थी उनको देख कर। दोनों के माता-पिता को एहसास हुआ कि राजकुमार कि बात तो बिलकुल सही थी और उन्हें खुद पर हँसी भी आयी कि समाज के इतने नियमों को तोड़ कर दोनों परिवारों ने अपने बेटे और बेटियों के बीच कभी फर्क नहीं किया फिर इसी रस्म में आकर चूक गए, जहाँ बेटी के परिवार को बेटे के परिवार की तुलना में कम समझा जाता है। दोनों ही परिवारों ने अपने बच्चों की तर्कशक्ति की सराहना की और लिंग-समान भविष्य का नेत्रत्व करने की उनकी प्रतिबद्धता को सलाम किया।

चर्चा के बिंदु:

- **जंगल का माहौल कैसा था?**
- **राजकुमारी के माता पिता कैसे थे? उनकी सोच के बारे में हमें क्या पता चलता है?**
- **राजकुमारी कैसी थी?**
- **शादी के लिए राजकुमार और राजकुमारी को उनके माता-पिता ने किस चीज़ की आज्ञा दी? इसके बारे में आपके क्या विचार हैं?**
- **किस रस्म में आ कर राजकुमारी ने विरोध किया?**
- **जितने खुले विचार वाले राजा-रानी थे, उसको देखते हुए बताएँ कि अपनी बेटी के मना करने पर उनकी प्रक्रिया कैसी रही और क्यों?**
- **राजकुमार ने क्या उपाय निकाला?**
- **अगर राजकुमार भी खुले सोच का न होता तो फिर हमारी कहानी का समापन कैसा दिखता?**
- **अगर लिंग भेद को मिटाना है तो क्या ये लड़ाई सिर्फ लड़कियों की ही है? पुरुषों का इस में क्या योगदान हो सकता है?**

रानी और उसके पिता

- सुश्री अर्चना

एक गाँव में हरिया नाम का आदमी रहता था जिसकी रानी नाम की एक बेटी थी। रानी की माँ तब ही गुजर गयीं थी जब वह बहुत छोटी बच्ची थी। रानी बहुत समझदार और होशियार लड़की थी। रानी अपने घर का सारा काम-काज करती, अपने पिता का ख्याल रखती और साथ ही साथ स्कूल भी जाती थी। रोज़ की तरह रानी की सहेलियाँ उसे स्कूल के लिए बुलाने आती और आवाज़ लगाती “रानी ओ रानी, स्कूल का समय हो गया है, चलो स्कूल चलते हैं।” तब रानी अपनी सहेलियों के साथ स्कूल चली जाती। रोज़ इसी तरह से वह अपने घर का काम-काज करती और फिर स्कूल जाती। उसके बाद अपने पिता के साथ बैठ कर, अपने स्कूल में पढ़ी हुई बातों को बताती।

एक दिन रानी को पीरियड्स आ गए और रानी के घर में कोई महिला नहीं थी जिससे वो अपनी परेशानी बताती या परेशानी का हल निकालती। लेकिन, रानी स्कूल जाती थी जिसके कारण उसे पता था कि लड़कियों को पीरियड्स आते हैं, जिस समय उन्हें अंडरवियर में कपड़ा लगाकर रखना पड़ता है। उसने मन में सोचा भी की किसी अध्यापिका से इसके बारे में बात करे, लेकिन वो लोग भी इस विषय पर ज़्यादा बोलना नहीं चाहती थीं और बस इतना ही बोलतीं की "ये हर लड़की को होता है"।

रानी ने पैड्स के बारे में भी सुना था, लेकिन वो क्या चीज़ है, कैसे लगाते हैं, कहाँ से खरीदते हैं, ये सब न उसे पता था न कोई बताने वाला था। हरिया ने रानी को हमेशा ही माँ और बाप, दोनों का प्यार दिया और रानी का रिश्ता भी अपने पिता के साथ बहुत ही खुले मन का था। लेकिन आज किशोरावस्था में प्रवेश करते समय अलग ही संकोच और शर्म का एहसास हुआ रानी को, इसलिए उसने उन्हें कुछ बताया ही नहीं।

अगले दिन, स्कूल में, कपड़ा इस्तेमाल करने के कारण रानी की स्कर्ट में दाग़ लग गया, जिसके कारण उसे बहुत शर्म महसूस हुई। तब उसने पीरियड्स के दौरान स्कूल ना जाने की ठानी। अगले दिन रानी की सहेलियाँ उसे स्कूल के लिए बुलाने आई लेकिन रानी ने अंदर से आवाज़ दिया कि “मैं नहीं जाउंगी, मेरी तबीयत नहीं ठीक है,” और उसकी सहेलियाँ स्कूल चली गयीं।

दोपहर को जब पिता खाना खाने के लिए घर वापस आये, रानी को घर में देख कर चौंक गए, पूछा, "स्कूल क्यों नहीं गयी आज?” रानी ने कमरे से आवाज़ दी कि “पिताजी मेरी तबीयत नहीं ठीक है और मैं स्कूल नहीं गयी, आपका खाना वहां रखा हुआ है आप खाना खा लीजिये।” खाना खाते समय हरिया ने सोचा कि ऐसा क्या हो गया जो रानी स्कूल नहीं गयी, ये लड़की तो बुखार होने पर भी स्कूल चली जाती है।

खाने के बाद वो रानी से मिलने गए और पूछा की “क्या खराब लग रहा है?” रानी ने कहा कि सिर में दर्द है, तो हरिया उसे सिर दर्द की दवाई देने लगे, घबरा कर रानी ने बोला कि अब पीठ दर्द हो रहा है। उसकी आँखों में शर्म और आवाज़ में हिचकिचाहट महसूस करते हुए, हरिया ने पूछा कि "कहीं तुम्हें पीरियड्स तो नहीं आ गए?” रानी शर्म से पानी हो गयी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। हरिया ने रानी को शांत कराया और आराम से कहने को बोला कि क्या बात है। रानी ने उनसे बताया की कैसे २ दिन पहले उसके पीरियड्स पहली बार आये और वो किसी से बता नहीं पाई, फिर कपड़ा इस्तेमाल किया और कल जब दाग़ लग गया स्कूल के ड्रेस में तो उसे बहुत शर्म आई और उसने सोचा कि जब तक पीरियड्स ख़त्म नहीं हो जाते वो स्कूल नहीं जाएगी।

हरिया ने प्यार से रानी को पुचकारा, फिर पूछा, "और तूने मुझसे २ दिन पहले ये सब क्यों नहीं कहा? हम दोनों आपस में सब

बात बाँटते हैं ना?" रानी शांत रही।

हरिया - “अच्छा बताओ, तुमने कौन सा कपड़ा इस्तेमाल किया?"

रानी -"रसोई में जो पोछने के लिए कपड़े रखे हैं, उसी को थोड़ा थोड़ा फाड़ के लगा रही थी।"

हरिया - "ऐसे दोबारा कभी मत करना बेटा। **कपड़ा हमेशा सूती का होना चाहिए, वो भी साफ, और धूप में सूखा हुआ। धूप बहुत ही प्रभावी कीटनाशक है। और गंदा कपड़ा अगर अपने शरीर में लगायेंगे तो उससे और भी बीमारियाँ हो सकती हैं ना?**

रानी - "लेकिन सब तो कहते हैं कि लड़कियों के शरीर से ये गंदा खून निकलता है? तो गंदा खून साफ करने के लिए गंदा कपड़ा ही इस्तेमाल करूँगी ना?”

हरिया - "अरे! ये किसने बोल दिया कि गंदा खून निकलता है? ये बिलकुल गलत बात है। लड़कियों के पीरियड्स के समय में निकलने वाला खून बहुत ही साफ और पोषक होता है और वो लड़कियों की शरीर से निकलने के ठीक बाद ही, कपड़े या पैड से लगकर या हवा में अलग-अलग गैस से मिल कर ही गंदा और बदबूदार होता है।"

रानी -"हम्म्म्म... ये तो मैं पहली बार सुन रही हूँ।"

हरिया - "हाँ बेटा, **क्योंकि पीरियड्स के बारे में खुल कर कोई बात नहीं करता, इसलिए, इस विषय पर भ्रांतियाँ बहुत ज़्यादा है**। तुम्हें पता है? लड़कियों का जो मासिक चक्र होता है, वो उसके अनध्याय से अंडाणुओं का निकालकर, एक पतले से नलिका से होते हुए, गर्भाशय तक आकर, फिर कुछ दिनों में शरीर से खून और गर्भाशय की परत के साथ निकलने तक का होता है। और हमें तो बस खून निकलते हुए दिखता है।”

रानी - "हाँ!? सच में पिताजी? मुझे तो ये मालूम ही नहीं था! और आपको ये सब कैसे पता?”

हरिया - "तुम्हारी माँ से मैंने बहुत कुछ सीखा है, पीरियड्स के बारे में भी उन्हीं से जाना। अफ़सोस होता है कभी-कभी की ये सब मुझे पहले से नहीं पता था, वरना मैं अपनी बहनों को भी ये सब जानकारी दे कर उनके जीवन को सुधार सकता। थोड़ा बुरा लग रहा है ये सोच कर की तुमने अपने पीरियड्स के बारे में मुझे नहीं बताया, लेकिन चलो, कम से कम अभी तो पता चला। आगे से इन सब को ले कर कुछ भी चाहिए हो या दिक्कत हो तो मुझे ज़रूर बताना। अभी तुम्हारी माँ की कुछ पुरानी साड़ियाँ तुम्हें निकाल के दे रहा हूँ, उनको अच्छे से काट कर साफ कर लो, धूप में सुखाओ और इस्तेमाल करना शुरू कर लो।"

रानी ने हरिया के तरफ कृतज्ञता भरी नज़रों से देखा और फिर उनके साथ अलमारी से माँ की साड़ियाँ निकालने चली गयी।

चर्चा के बिंदु:

- **रानी के परिवार के बारे में आपको क्या पता है?**
- **रानी और उसके पिता का रिश्ता कैसा था?**
- **रानी ने स्कूल जाना क्यों बंद किया?**
- **रानी ने पीरियड्स के बारे में अपनी अध्यापिकाओं से क्यों नहीं पूछा?**
- **रानी ने अपने पीरियड्स के बारे में अपने पिता से बात क्यों नहीं की?**
- **हरिया को कैसे पता चला कि रानी को पीरियड्स होने लगे हैं? ये जानने के बाद हरिया ने क्या किया?**
- **कपड़े के इस्तेमाल के बारे में हरिया ने क्या बताया?**
- **हरिया के पास ये सारी जानकारी कहाँ से आयी?**
- **क्या लड़कों को पीरियड्स के बारे में पता होना चाहिए? क्या उनको पीरियड्स के बारे में पूरी जानकारी दी जानी चाहिए?**
- **एक महिला के पीरियड्स के अनुभव में, एक पुरुष का क्या किरदार होता है - पैड्स खरीदने में या दर्द समझने में, इत्यादि पर रोशनी डालते हुए बताएं।**

दो घड़ों की कहानी

- सुश्री संजना चक्रवर्ती

कुछ समय पहले की बात है जब गाँव में रहने वाले एक लकड़हारे, रामू, ने सर्दियों के मौसम में दो घड़े बाज़ार से खरीदे। इन में से एक घड़े का नाम हीरा था जो कि सोने का घड़ा था और दूसरे का नाम मीरा था, जो की मिट्टी का घड़ा था।

हीरा, निस्संदेह, रामू को अधिक प्रिय था। गरीब परिवार का होते हुए, रामू ने कई वर्ष मेहनत कर के पैसे बचाए ताकि सोने का घड़ा खरीद सके, और मिट्टी वाला घड़ा तो उसे बिना कोई पैसे लिए, दुकानदार ने मुफ्त में ही दे दिया था। एक घड़ा लेने गए और दो ले कर वापस आने पर रामू काफ़ी खुश था। दोनों घड़े भी रामू के साथ घर आ के खुश थे।

रामू सोने के घड़े को बहुत ही अच्छे से रखता व उसे बड़ी प्यार भरी नज़रों से देखता था, आखिर में, बड़ी तपस्या के बाद उसे ये घड़ा मिला था। वहीं मिट्टी का घड़ा जो कि हमारी मीरा थी, रामू न ही उसको साफ करता और न ही उसका ख्याल रखता। यह भेदभाव देख मीरा को बहुत दुःख होता था और वह सोचती थी कि, "मालिक हीरा को इतना प्यार और उसकी इतनी देखभाल करते हैं क्योंकि वह कीमती सोने का घड़ा है", और फिर मीरा अपने बारे में सोचती कि "मैं तो एक मामूली सी मिट्टी का घड़ा हूँ, मुझे भला मालिक क्यों इतना प्यार करेगा?" यह सब सोचकर उसको बहुत दुःख हुआ करता था, लेकिन उसने अपना नसीब मान लिया था। फिर भी, कभी-कभी ये भी सोच लेती थी कि एक न एक दिन मालिक उसका भी ख्याल उसी तरह रखेंगे जिस तरह से वह हीरा का रखा करते हैं|

जैसे जैसे समय बीतता गया, मौसम बदलते गए, लेकिन रामू के घर पर अब भी कुछ नहीं बदला था। रामू अभी भी मीरा का ख्याल नहीं करता था, और पेट पालने के लिए कड़ी मेहनत करता था। एक गर्मी की दोपहर को रामू थका-हारा घर की ओर लौट रहा था, गर्मी के कारण उसका बहुत बुरा हाल था। उसने बस ये सोचा की "किसी भी तरह घर पहुँच जाऊँ, फिर जी भर के पानी पियूँगा और लेट के आराम करूँगा।"

चूँकि रामू काफ़ी गरीब था, उसके यहाँ कोई रेफ्रिजरेटर नहीं था जिससे उसे ठंडा पानी मिल सके। घर पहुँचते साथ ही रामू पानी के घड़ो के पास गया। तुरंत उसने एक गिलास पानी हीरा में से निकाला। लेकिन पहला घूँट लेने के साथ ही उसने पानी थूक दिया और बाकी का पानी भी फेंक दिया। भीषण गरमी के कारण, सोने का घड़ा गरम हो गया था और उसके अंदर का पानी भी। परेशान हो कर रामू अब मीरा से पानी पीने लगा। मीरा मिट्टी की बनी हुई थी, जो की गर्मी में भी पानी को ठंडा रख सकती है। रामू ने जी भर के पानी पिया। प्यास बुझने के बाद रामू को अपनी सोच पर तरस आया। **सोने से मोह के चक्कर में उसने हीरा को हमेशा ज्यादा प्यार दिया, ज्यादा संभाल के रखा, लेकिन वो भूल गया था की एक घड़े का काम है पानी रखना। और गरमी के मौसम में जो भी घड़ा उसे ठंडा पानी दे सके वही एक सफल घड़ा है, इससे क्या फर्क पड़ता है की घड़ा सोने का है या मिट्टी का। इस एहसास के साथ रामू ने दोनों घड़ों के प्रति अपनी सोच को बदला। अब वो हीरा और मीरा दोनों का ही बराबर ख्याल रखता था, क्योंकि अब उसमें ये समझ आ गयी था कि दोनों ही घड़े अनमोल हैं, और दोनों की ही जगह अपने हिसाब से महत्वपूर्ण है।**

चर्चा के बिंदु:

- **रामू बाजार से क्या ले के आया?**
- **दोनों के प्रति उसका व्यवहार कैसा था?**
- **मीरा को रामू का व्यवहार कैसा लगता था?**
- **रामू की सोच आखिर में किस घटना के बाद बदली?**
- **रामू को आखिर में कौन सी बात समझ आयी?**
- **हीरा और मीरा के बीच के भेद-भाव के तरह क्या आप को अपने परिवार या समाज में भी ऐसा नज़र आता है? उदाहरण दे के बताएँ।**
- **क्या ये सही है की सिर्फ घड़े की बनावट देख कर ही ये तय कर लिया जाए की वो महत्वपूर्ण है या महत्त्वहीन? इस बात को ध्यान में रखते हुए बताएँ कि किन-किन वजहों से हमारे समाज में किसी को आगे बढ़ने से रोका जाता है?**
- **भेदभाव हटाने के लिए हमें समाज की सोच को कहाँ पर लाना पड़ेगा?** (इस सवाल में समूह को इस बात को समझाएँ की रामू ने जाना कि घड़ा सोने का बना हो या मिट्टी का, उसका काम है पानी अपने अंदर रखना तो जो गर्मी में उसे ठंडा पानी दे सके, वही महत्वपूर्ण है उसके लिए। वैसे ही हमारे समाज में किसी के लिंग या धर्म या जाति या किसी भी और मापदंड से हम लोगों को तोलते हैं, उसके बदले हमें इंसान की कद्र उसके कार्यों से करना चाहिए। अगर हमारा सड़क पर एक्सीडेंट हुआ हो और कोई निम्न जाति का इंसान हमें सही-सलामत अस्पताल पहुँचा दे तो हमारे लिए वही श्रेष्ठ है। अगर कोई ऊँची जाति वाला किसी दूसरे इंसान की समय पर मदद न कर सके तो उसके ऊँचे होने का क्या लाभ हुआ?)

किसकी गलती?

- श्री विक्रम नामदेव

एक गाँव में सुंदर नाम का एक लड़का रहता था। उसके चेहरे पर दाढ़ी और शरीर पे बाल बहुत ही कम थे, आवाज़ भी पतली थी और उसको लम्बे बाल रखना भी बहुत अच्छा लगता था। उसको गाँव में सब 'चिकना' बोल कर चिढ़ाते थे और स्कूल के नाटकों में भी हमेशा उसे लड़की का किरदार ही दिया करते थे। सुंदर को इन सब बातों का बुरा नहीं लगता था, वो भी सबके साथ हँसता था। **बहुत कम उम्र में ही उसे समझ आ गया था कि लोग उसके 'लड़की जैसे' चिकनी त्वचा का और पतली आवाज़ से बहुत मज़े पाते थे, तो वो भी कभी किसी के सामने लड़कियों के नाच या उनकी तरह बोलकर सुनाने के लिए एक या दो रुपये माँग लेता था। फिर उस पैसे से वो आइसक्रीम खाता और अपने दोस्तों को भी खिलाता।** दोस्तों में उसका बहुत नाम था, सब उसको उसके साफ मन की वजह से प्यार करते थे और मज़ाकिया तो वो था ही, जिस कारण सबका चहेता भी था वो।

सुंदर के परिवार के लोग खेतों में काम करते थे और उसी से घर चलाते थे। लेकिन घर की आमदनी इतनी नहीं थी कि ज्यादा अच्छे से घर चल सके तो जैसे ही सुंदर १५ साल का हुआ वह घर से निकल आया शहर में काम करने के लिए और घर-परिवार चलाने में मदद करने के लिए।

उसको एक बड़े घर में खाना बनाने की नौकरी मिली। उसी घर से थोड़ा सा दूर एक लड़कों का हॉस्टल था जहाँ पर आस-पास के गाँव से पढ़ाई करने आये हुए लड़के रहते थे।

जब घर के सारे काम हो जाते, तब सुन्दर छत पर अपने घर वालों और दोस्तों से मोबाइल पर बात करने के लिए चला जाता था। हॉस्टल के लड़के हॉस्टल से सुंदर को रोज़ देखते थे| लेकिन हॉस्टल और सुंदर का घर थोड़ा दूर होने के कारण, कभी उसका चेहरा सही से दिख नहीं पाया। एक दिन, मोबाइल पर सुंदर और उसके दोस्त याद कर रहे थे कि कैसे बचपन में लड़कियों की तरह नाच कर वो आइसक्रीम खाने के पैसे कमाता था। ये बोल कर, सुंदर भी थोड़ा सा पुराने दिनों के तरह नाच लिया। ये सब देख के हॉस्टल के एक लड़के का मन मचल गया और वो जल्दी ही तैयार हो कर सुंदर के घर के तरफ आया। तब सुंदर छत के दीवार से पीठ लगा कर खड़ा था, लड़के ने मौका पा कर उस पर एक कागज़ का गेंद दे मारा। सुंदर पहले तो घबरा गया, लेकिन कागज़ को खोल कर देखा तो अंदर किसी लड़के का नंबर लिख रखा था और साथ में ये भी लिखा था की "मुझे तुम से प्यार हो गया है। अगर तुम भी मुझे जानना चाहती हो तो इस नंबर पर कॉल करो।"

सुंदर के दिमाग की बत्ती जली! जैसे बचपन में वो लड़कियों वाली एक्टिंग कर के दूसरों से आइसक्रीम के पैसे कमाता था, आज ठीक वैसा ही मौका मिला है उसे पैसे कमाने का। वो तो पहले से ही परेशान था कि हमेशा थोड़े-थोड़े पैसों का रिचार्ज कराना पड़ता है तो खुल के घर पे बात भी नहीं होती और कपड़े भी हमेशा अपने मालिक के दिये हुए ही पहनना पड़ता है। उसे फिर से यहाँ पर मौका दिखा दूसरे के मन की गंदगी से अपना जीवन सुधारने का। उसने तुरन्त उस नम्बर पर मैसेज किया कि "बात तो मैं करना चाहती हूँ, लेकिन अभी बैलेंस नहीं है। तुम मेरा रिचार्ज करा दो, तो मैं रात को मौका देख कर तुम्हें कॉल करूँगी।" थोड़ी देर में उसके फ़ोन में घंटी बजी। रिचार्ज हो गया था। सुंदर अब बहुत खुश था! ऐसे ही वो उस लड़के से, और हॉस्टल के दूसरे लड़को से बात करता। अपने फोन का रिचार्ज करवाता, अपने पसंद के खाने मँगवाता और कभी-कभी कपड़े भी और कभी शैम्पूज़, साबुन, पाउडर और परफ़्यूम भी। क्योंकि वो लोग उसे लड़कियों के कपड़े ला के देते थे, वो उसे अपने घर भेज देता, अपनी माँ, भाभी और बहन के लिए। उसके परिवार वाले भी खुश थे और सुंदर भी। अब पैसों के साथ-साथ वो तोहफे भी घर पर भेजा करता था।

एक दिन किसी कारण, सुंदर के मालिक छत पर आए, और ठीक उसी समय किसी लड़के ने एक पर्ची फेंकी, जिस में आज रात को मिलने के लिए पूछा था। सुंदर को ऐसे रंगे हाथ पकड़ कर मालिक को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने तुरंत नीचे झाँका और देखा कि ये तो कोई लड़का फेंक के गया है। सुंदर को समलैंगिक प्यार के रिश्ते में मान कर मालिक ने अपना आपा खो दिया और उसे खूब पीटा। उन्हें सुंदर से घिन हो गई थी और उसकी चाहतों को अप्राकृतिक मानते हुए उसे घर से बाहर निकाल दिया। उन्होंने सोचा की सुंदर की वजह से आस-पास रहने वाले और बच्चों पर गलत प्रभाव पड़ेगा। सुंदर ने अपनी तरफ से पूरी बात समझाने की कोशिश की, लेकिन मालिक ने उसकी एक न सुनी। अगले कुछ दिन तक प्रयास करने पर भी कोई दूसरी नौकरी न मिलने पर सुंदर हार कर अपने गाँव वापस चला गया।

चर्चा के बिंदु:

- **सुंदर की इस कहानी में कौन सी बात अलग थी?**
- **दूसरे लोग इस अलग बात का सुंदर से कैसे मज़े लेते थे?**
- **वैसे तो सुंदर उनकी बात का बुरा मान सकता था, लेकिन दूसरों की छोटी सोच का फायदा सुंदर कैसे उठाने लगा?**
- **सुंदर किस उम्र में शहर गया और क्यों?**
- **सुंदर रोज़ शाम को छत पर क्यों जाता था? इसका हॉस्टल वाले लड़कों पर क्या प्रभाव पड़ा?**
- **सुंदर ने हॉस्टल के लड़कों का कैसे फ़ायदा उठाया?**
- **क्या किसी और का फ़ायदा उठाना अच्छी बात है?**
- **सुंदर की स्तिथि में, वो और उसका परिवार इतना गरीब था कि सिर्फ अपनी जरूरत की चीज़ें मुश्किल से ले पाते लेकिन चाहत की चीज़ें नहीं। उसकी जगह अगर आप होते और अगर कोई सामने से पैसा और तोहफ़े देने आए तो क्या करते?**
- **क्या दूसरों को नैतिकता की शिक्षा देना और स्वयं वैसा कर पाना एक जैसा आसान होता है? क्यों या क्यों नहीं?**
- **इस कहानी में आप किसको गलत समझेंगे? सुंदर को, जिसने हॉस्टल के लड़कों के मन की लालसा या हवस का फायदा उठाया या उन लड़कों को, जिन्होंने छत पर एक लड़की को रोज़ बात करते हुए देखा और उस पर लाइन मारने आ गए? अपने कारण स्पष्ट बताइये|**
- **मालिक ने सुंदर को समलैंगिक प्यार करने वाला लड़का समझ कर मारा और घर से निकाल दिया। इस बारे में आपका क्या विचार है?**
- इस चर्चा के अंत में अपने समूह को बताएँ की समलैंगिक प्यार भी उतना ही प्राकृतिक है जितना कि विपरीत लिंग का प्यार। हमारे समाज में इस चीज़ की मान्यता नहीं है फ़िलहाल, लेकिन अगर हम इस बात को खुले मन से सोचें और समझे तो हम अपने भविष्य में समलैंगिक रिश्तों के प्रति प्रतिक्रियाओं को और सकारात्मक बना पायेंगे। ये कोई बीमारी नहीं है और न ही कोई जानबूझ कर निर्णय लेता है कि आज से वो किस लिंग के प्रति आकर्षित होगा। इस कहानी के संदर्भ में, सुंदर को भले ही 'चिकना' कहा गया हो, वो भी विपरीत लिंग के तरफ ही आकर्षित है, लेकिन अपने घरवालों को तोहफ़े भेजने की चाह में उसने लड़कों से बात करना शुरू किया।

पश्चिम बंगाल की कहानियाँ

१. एक माँ का प्यार - श्री सोमनाथ दास

२. अँधेरी रात - श्री बिल्टू ढिबर

३. अस्तित्व - सुश्री सुष्मिता दे

४. अग्निकन्या, आग से जन्मी - सुश्री संचारी चक्रवर्ती

५. क्या यह प्यार है? - सुश्री रशीना खातून

६. लव आज कल - श्री सुरोजीत सेन

७. प्यार अंधा बना देता है - श्री विश्वजीत मुखर्जी

८. प्यार प्यार होता है - सुश्री कविता कँवर

९. स्वर्ग में बना हुआ - सुश्री बन्दना मंडल

१०. मिष्टू- बालिका विद्यालय का लड़का... - सुश्री सुसोमा दस

एक माँ का प्यार

- श्री सोमनाथ दास

एक बार की बात है टुनटुन नाम की एक नन्ही चिड़िया रहती थी। टुनटुन एक गरीब परिवार से थी, जहां कोई नहीं जानता था कि घर में अगला भोजन कब और कहां से आएगा। अपने परिवार की मदद करने के लिए, टुनटुन को नौकरी की सख्त तलाश थी। एक दिन, कुछ पक्षी उसके घोंसले में यह बताने के लिए आए कि कैसे एक बाज़ पड़ोसी पेड़ों पर आया था, और युवा लड़कियों को नौकरी की पेशकश कर रहा था। अधिक समझने के लिए टुनटुन ने तुरंत बाज़ के पास उड़ान भरी। प्रस्ताव रोमांचक लग रहा था। मादा पक्षियों के एक समूह को शहर ले जाया जाएगा जहां उन्हें हरे भरे पेड़ों में घोंसला दिया जाएगा और उन्हें पूरे पेड़, उसके सभी घोंसले और उसके नीचे के क्षेत्र को साफ रखना होगा। टुनटुन ने इस अवसर का फायदा उठाने की सोची और तुरंत इस काम के लिए अपना भी नाम दे दिया।

एक हफ्ते के भीतर सब कुछ तय हो गया और सभी चिड़ियों ने बाज़ के साथ शहर के लिए उड़ान भरी। जैसे ही वे वहाँ पहुँचे, चिड़ियों को एक बड़े आदमी ने ले लिया और बाज़ को बदले में कुछ पैसे दिए। इस आदमी ने सभी चिड़ियों को एक छोटे से पिंजरे में डाल दिया, जिसमें मुश्किल से उनके लिए जगह थी, जो गंदी भी थी और उन्हें कम भोजन दिया जाता था। टुनटुन दुखी थी। यह वह नौकरी नहीं थी जिसका उससे वादा किया गया था, उसे कोई पैसा कमाने या घर वापस जाने की अनुमति नहीं थी, उसे अपने माता-पिता से फोन पर बात करने की भी अनुमति नहीं थी। दिन-ब-दिन लोग उन्हें उनके पिंजरों में देखने आते, लेकिन कुछ भी नहीं बदला। इसी दौरान, उसने देखा कि अन्य चिड़िया गर्भवती हो जाती हैं और अपने बच्चों को पिंजरे में ही जन्म देती हैं, लेकिन जगह न होने के कारण उनकी मृत्यु हो जाती। ऐसे ही जिंदगी जीते हुए टुनटुन भी आखिरकार एक दिन गर्भवती हो गई, लेकिन उसे खुशी की जगह इस बात की चिंता थी कि वह अपने बच्चे को कैसे रख पाएगी। उसने एक तोते से विनती की, जो अक्सर उस क्षेत्र में आज़ाद घूमता था, की वह रात में पिंजरा खोल दे, ताकि टुनटुन उड़ सके और अपने अंडे पास के घोंसले में रख सके, जहां ऐसे बच्चे पाले जाते थे जिन्हें कोई नहीं चाहता था या जिनके माता-पिता उन्हें नहीं रख सकते थे। तोते ने टुनटुन की बात मान ली। रात को टुनटुन उड़ गई, उसने अपना अंडा दिया और फिर पिंजरे में वापस आ गई।

एक दो दिनों में अंडा में से छोटा बच्चा निकला। घोंसले के मालिक उसे प्यार से पोली कहते थे। पोली अन्य पक्षियों के साथ बड़ा हो रहा है जिन्हें वहाँ छोड़ा गया था। टुनटुन कोशिश करती की वो कभी-कभार पोली से मिले और मिलने पर उसे एक या दो रसदार कीड़े उपहार में देती। पोली ने सोचा कि दुनिया एक अच्छी जगह है क्योंकि एक अजनबी चिड़िया समय-समय पर उसके लिए उपहार लाती है, उसे नहीं पता था कि वह उसकी अपनी माँ थी। जैसे-जैसे पोली बड़ा हुआ, उसे पता चला कि टुनटुन ही वास्तव में उसकी माँ थी, जो एक अलग जगह पर रह रही थी और जिसने अजनबियों के झुंड के साथ बड़े होने के लिए उसे अकेला छोड़ दिया था।

अगले कुछ हफ्तों में, पोली ने अपने बहुत सारे दोस्तों को खो दिया। बहुत से अन्य बच्चों की माएँ उन्हें वापस ले गईं, लेकिन पोली की माँ ने ऐसा नहीं किया। वह कभी-कभी रसदार कीड़ा लेकर आती रही, लेकिन उसे अपने साथ कभी वापस नहीं ले गई। **पोली ने टुनटुन से मिलने से कतराना शुरू कर दिया और अंततः टुनटुन ने आना बंद कर दिया। इस बात ने पोली को और भी अधिक परेशान किया! उसे शायद उम्मीद थी कि उसकी माँ उसको मानाने की थोड़ी और कोशिश करेगी, लेकिन माँ खुद अपराध बोध से ग्रसित थी और अपने निराश बेटे का सामना नहीं कर सकती थी।**

पोली अकेलापन महसूस करता रहा। उसके सारे दोस्त जा चुके थे। घोंसले का मालिक सख्त था। पोली बाहर जाकर पास के पेड़ों में अन्य पक्षियों के साथ खेलना चाहता था, वह नृत्य सीखना चाहता था, लेकिन कहने से डरता था। पोली ने अपनी स्थिति के प्रति काफी नाराजगी महसूस की थी, लेकिन उसे यह भी नहीं पता था कि इस स्तिथि में वह क्या कर सकता था। एक दिन, घोंसले का मालिक बीमार पड़ गया। पोली ने वह सब कुछ किया जो वह कर सकता था, लेकिन उसे बचा नहीं सका। उसकी मृत्यु के साथ, पोली को अंततः वह स्वतंत्रता मिल गई जो वह चाहता था, लेकिन बहुत जल्द ही उसे एहसास हुआ कि वह दोबारा अनाथ हो गया था। जीवन के बदलाव से नाखुश, पोली ने आखिरकार अपने जीवन की जिम्मेदारी लेने का फैसला किया और जीवन अच्छा बनाने की कोशिश की। उसने माताओं के लिए अपने बच्चों को पीछे छोड़ने के लिए बड़े घोंसले को फिर से शुरू करने का फैसला किया और सोचा कि वह मज़ेदार तरीके से देखभाल करने वाला बनेगा जैसा वो हमेशा से अपने लिए चाहता था, लेकिन उसे मिला नहीं। हालांकि, उसके मन में अब तक अपनी माँ के लिए कड़वाहट थी, जिसके कारण उसने यह भी प्रण लिया की वह कभी अपने बच्चों के साथ वैसा नहीं करेगा जैसा उसकी माँ ने उसके साथ किया था- उन्हें कभी नहीं छोड़ेगा।

चर्चा के बिंदु:

- **टुनटुन किस तरह के परिवार से थी?**
- **बाज़ ने क्या वादा किया था?**
- **नौकरी का प्रस्ताव ज़रुरत से ज़्यादा अच्छा था। फिर उस पर शक करने के बदले, टुनटुन भावनाओं में बह कर उसे लेने को तैयार क्यों हो गयी?**
- **टुनटुन और उसकी सहेलियों के साथ क्या हुआ जब वे शहर पहुँचे?**
- **क्या आपने अपने आसपास ऐसी घटनाओं के बारे में सुना है जहाँ युवाओं को नौकरी देने के सपने दिखाकर उन्हें छला जाता है? विस्तार में बताइये।**
- **ऐसे घोटालों में फंसने से बचने के लिए कौन से कदम उठाए जा सकते हैं?**
- **टुनटुन पिंजरे में अपना अंडा क्यों नहीं रखना चाहती थी?**
- **पोली ने दुनिया के बारे में क्या सोचा जब उसने देखा कि टुनटुन उससे मिलने के लिए कीड़े लेकर आई है? जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ यह धारणा क्यों बदली?**
- **पोली अपने दिल की बात घोंसले के मालिक को क्यों नहीँ बता पाया?**
- **घोंसले के मालिक के निधन के बाद पोली ने क्या किया?**
- **अक्सर, एक माँ को एक ऐसी आकृति के रूप में देखा जाता है जो अपने परिवार से प्यार करती है और उसका पालन-पोषण करती है। हमारी कहानी में, टुनटुन ने अपने बेटे को एक अलग जगह पर छोड़ने के लिए एक बड़ा बलिदान दिया, ताकि उसे एक बेहतर जीवन मिल सके। फिर भी, पोली उससे नाराज था। आपके ख्याल से टुनटुन ने पोली को कभी सच क्यों नहीं बताया?**
- **आपको क्या लगता है कि पोली ने कभी अपनी माँ को समझने की कोशिश क्यों नहीं की? क्या आपको लगता है कि अगर वह कोशिश करता तो चीजें बदल जातीं?**
- **टुनटुन के प्यार का प्रदर्शन, पोली ने जैसा माँ का प्यार होने की उम्मीद की थी, उससे अलग था। क्या आप अपने जीवन से ऐसे और उदाहरण सोच सकते हैं जहां आपके माता-पिता का प्यार व्यक्त करने का तरीका आपकी धारणा से अलग था?**

अँधेरी रात

- श्री बिल्टू ढिबर

चेतावनी – यौन शोषण के प्रकरण शामिल हैं

मैंने अभी-अभी पवित्र तुलसी के पौधे के नीचे दीया जलाया। आज असामान्य रूप से अंधेरा है। ऐसा लग रहा है मानो दीए के ठीक नीचे के अंधेरे ने हर झाड़ी को निगल लिया हो, यहां तक कि आसमान में भी अंधेरा है, जिसमें केवल चाँद की चमक है।

मैं, मणिमाला, अपने बिस्तर के किनारे पर एक डायरी और हाथ में कलम लिए बैठी हूँ। उस रात भी ऐसा ही अंधेरा था। उस गहरे अँधेरे आकाश में चाँद ही एकमात्र राहत था, जिसकी किरणें मेरी छोटी-सी खिड़की से प्रवेश करती और हल्के से मेरे बिस्तर पर गिरती थीं। उस रात मेरे माता-पिता घर पर नहीं थे। घर पर सिर्फ मैं और मेरा छोटा भाई था। ओह हाँ! और मेरे चचेरे भाई भी घर पर थे। वह मुझसे कुछ साल बड़े थे और दो दिन पहले ही आए थे। यह पहली बार था जब मैं अपने माता-पिता के बिना घर पर अकेली थी। उस दिन अजीब लगा, लेकिन मुझे इस सोच से राहत मिली कि कम से कम मेरे बड़े चचेरे भाई यहाँ हमारे साथ थे।

उस रात, बिस्तर पर हम तीनों ही थे - एक तरफ मेरे चचेरे भाई, बीच में मेरा छोटा भाई और फिर मैं दाईं ओर थी। उस रात घर पर अपने से बड़े किसी अन्य व्यक्ति के होने के विचार में राहत पाकर, मुझे नींद आने लगी थी। कुछ समय बाद, मुझे अपनी गर्दन पर गर्म साँस की फुहारें महसूस होने लगीं, हाँफती, तेज़ सांसें। मुझे अपनी छाती पर किसी के हाथ के होने और साथ ही शरीर पर किसी के पैर के होने का आभास हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मुझे गले लगा रहा हो, लेकिन साथ ही ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कोई मुझे मेरे बिस्तर पर दबा रहा हो। मैं चीखना चाहती थी, मैं चिल्लाना चाहती थी, मैं भागना चाहती थी, लेकिन वास्तव में मैं केवल आँखें खोल कर अपने छत के तरफ ही देख पा रही थी और समझने की कोशिश कर रही थी कि क्या हो रहा है! क्या यह गलती से हो रहा था? क्या मैं इस पर अधिक सोच रही हूँ? मेरा चचेरा भाई जो आज रात मेरे अभिभावक की तरह लग रहा था, क्या वह वास्तव में ऐसा कर रहा होगा? मैं हर चीज पर तर्क कर रही थी, उन सभी कारणों को सोच रही थी जिससे सिद्ध हो की ये सब मेरी कल्पना में है और मेरा चचेरा भाई मेरे साथ ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता। जैसे-जैसे मैं अपने विचारों से जूझ रही थी, अचानक से मुझे लगा कि सांस लेने वाली नाक मेरी गर्दन से मेरे कानों तक और फिर वापस मेरी गर्दन तक चली गई है, और एक हाथ मेरे दोनों स्तनों के बीच रेंगने लगा। मुझे नहीं पता कि क्या हुआ, मुझे नहीं पता कि यह ताकत कहां से आई, लेकिन मैंने अपने शरीर पर से उस दुष्ट शरीर को पूरी ताकत से धकेल दिया और कमरे से बाहर भाग गई।

निम्नलिखित चर्चा बिंदुओं के लिए कहानी को यहाँ विराम दें:

- **मणिमाला के परिवार में कौन-कौन था?**
- **रात कैसी प्रतीत हो रही थी?**
- **घर में मणिमाला और उसके छोटे भाई के अलावा और कौन था?**
- **मणिमाला को डर क्यों लग रहा था? उस रात उसे किस बात ने दिलासा दिया?**
- **मणिमाला की नींद कैसे टूटी?**
- **क्या मणिमाला अनुभव का आनंद ले रही थी?**
- **वह इसे क्यों नहीं रोक पाई?**
- **क्या चचेरा भाई उसे गलती से गले लगा रहा था?** (यदि समूह कहता है कि यह एक गलती थी, तो उन्हें याद दिलाएं कि कैसे वे दोनों छोटे भाई के साथ बिस्तर के दो अलग-अलग छोर पर सो रहे थे, इसलिए चचेरा भाई उठ कर ही मणिमाला के बगल में आ सकता था)
- **क्या आपको लगता है कि चचेरे भाई ने जो किया वह गलत था?**

- **आपके हिसाब से मणिमाला क्यों यकीन नहीं कर पा रही थी की उसका चचेरा भाई जान बूझकर उसको गलत तरह से छू रहा था?**
- **क्या आपको भी ऐसे ही अनुभव हुए हैं जब आपके किसी परिचित या भरोसेमंद व्यक्ति ने आपके साथ कुछ बुरा किया हो और फिर भी आप भ्रमित हो गए हों और उस व्यक्ति को संदेह का लाभ देना चाहते हों?**

कुछ गिरते बर्तनों की आवाज से मैं इस अँधेरे से बाहर निकली। मैं रसोई की ओर दौड़ी और देखा की वहां एक बिल्ली पतीले में रखे दूध को पीने की कोशिश कर रही थी। मैं खुशनसीब थी कि उस रात मेरे सास-ससुर घर पर नहीं थे, नहीं तो वे मेरी लापरवाही के लिए गुस्से से मुझ पर चिल्ला रहे होते। मैंने बिल्ली को भगाया, रसोई के दरवाजे को बंद करके अपनी डायरी और कलम के पास वापस आ गई, इस उम्मीद में कि अपनी किशोरावस्था की ऐसी कुछ बातें लिख पाऊँ जो मैंने पहले कभी किसी को नहीं बताई थी। आज रात, मेरे सास-ससुर घर पर नहीं हैं, घर की सुरक्षा की सारी जिम्मेदारी मुझ पर है, लेकिन इस बात से थोड़ी खुश भी हूँ की कुछ ही देर में मेरे पति घर वापस आएंगे और वही इस घर के अभिभावक बन जायेंगे। उनके माता-पिता घर पर नहीं होंगे, इस कारण, उन्होंने वादा किया था कि आज रात हम टीवी पर अपनी पसंद की फिल्म देखेंगे।

कुछ देर बाद किसी ने दरवाजा खटखटाया, मुझे पता था की ये मेरे पति ही होंगे। मैं तो पहले से ही अपनी पसंद की फिल्म देखने के लिए उत्साहित थी, लेकिन वो मेरे संग समय बिताने के लिए आज घर जल्दी वापस आ गए, इस बात से मैं और भी खुश हो गयी! जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, वह लगभग अपने मुँह के बल गिर पड़े। उनसे शराब की बू आ रही थी और वो मुश्किल से खुद पर नियंत्रण रख पा रहे थे। उन्होंने कुछ बड़बड़ाया जो मुझे समझ में नहीं आया। मैंने घर के अंदर पहुँचने में उनकी मदद की, फिर तरोताजा होने और कपड़े बदलने में भी उनकी मदद की। मैंने उनसे आराम करने के लिए कहा और उनकी पसंदीदा मसाला चाय बनाने चली गई। मुझे उम्मीद थी कि चाय पीने के बाद वो काफी बेहतर महसूस करेंगे और फिर हम साथ में अपनी फिल्म का आनंद उठा सकेंगे। जब मैं चाय से भरा प्याला लेकर लौटी तो उन्होंने मुझे अपनी ओर खींच लिया। मैं बहुत मुश्किल से प्याला नीचे रख पाई, उसके बाद जो हुआ उसके बारे में मुझे कुछ याद नहीं है। लेकिन मुझे अंधेरी रात में जागना याद है, चाँद की किरण खिड़की से होकर मेरे बिस्तर पर धीरे से गिर रही थी, मेरे ठीक बगल में एक शरीर, मेरी गर्दन पर तेज़ सांसें ले रहा था, उसका हाथ मेरे स्तन पर और उसका पैर मेरे शरीर पर था, ऐसा दिख रहा था कि वह मुझे गले लगा रहा है लेकिन मुझे उसके शरीर के वज़न से नीचे दबाये जाने का एहसास हो रहा था। क्या वह वास्तव में ऐसा कर रहा होगा? मैं हर चीज पर तर्क कर रही थी, उन सभी कारणों को सोच रही थी जिससे सिद्ध हो की ये सब मेरी कल्पना में है और मेरे पति मेरे साथ ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते!

चर्चा के बिंदु:

- **मणिमाला अब कहाँ है?**
- **वह उत्साहित क्यों थी? रात के लिए अपने पति के साथ उसकी क्या योजना थी?**
- **क्या हुआ जब वह वास्तव में घर लौटा?**
- **कहानी यह साझा नहीं करती है कि मणिमाला के चाय लाने और उसके जागने के बीच के समय में उसके और उसके पति के बीच क्या हुआ। आपको क्या लगता है क्या हुआ होगा?**
- **क्या एक युवा लड़की के रूप में अपने चचेरे भाई के साथ मणिमाला के अनुभव और एक महिला के रूप में अपने पति के साथ उसके अनुभव के बीच कोई समानता है? दूसरे दृश्य और पहले दृश्य में आप क्या समानताएँ बता सकते हैं?**
- **क्या आपको लगता है कि पति ने जो किया वह गलत था?**
- **इस कहानी में दो दृश्य हैं और दोनों जगहों पर, मणिमाला को उसके जीवन में पुरुषों द्वारा उसका उल्लंघन किया गया था। आप में से कितने लोग इसके लिए मणिमाला को दोष देते हैं? क्यों या क्यों नहीं?**
- **क्या आपको लगता है कि एक पति अपनी पत्नी की मर्ज़ी का उल्लंघन कर सकता है?**
- इस कहानी और चर्चा में शुरू हुई बातचीत का उपयोग सहमति की अवधारणा के बारे में साझा करने के लिए करें। सहमति का अर्थ है किसी कार्य या कार्य में शामिल सभी पक्षों की अनुमति। इसलिए, यदि मणिमाला की सहमति के बिना चचेरे भाई द्वारा उसके शरीर को छूना गलत था, तो उसके पति का भी उसकी सहमति के बिना ऐसा करना गलत था। यकीनन, मणिमाला अपने पति से प्यार करती है और वह भी उससे प्यार करता है और दोनों ने अतीत में यौन संबंध बनाए होंगे, लेकिन अगर एक निश्चित समय में दो में से किसी एक व्यक्ति को भी यौन क्रिया में कोई दिलचस्पी नहीं है, और अगला व्यक्ति यह जानते हुए भी यौन क्रिया के साथ आगे बढ़ता है तो यह बलात्कार ही माना जाएगा।

अस्तित्व

- सुश्री सुष्मिता दे

चेतावनी – शारीरिक एवं यौन उत्पीड़न के प्रकरण शामिल हैं।

ऐनी फ्रैंक से प्रेरित होकर मैंने अपने जीवन में बहुत छोटी उम्र से ही डायरी लिखना शुरू कर दिया था। मेरी डायरी मेरी सबसे अच्छी दोस्त लगती, जिसके साथ मैं सब कुछ साझा कर सकती थी। हर साल कम से कम एक डायरी को खत्म करके, मैं उन्हें अपने कमरे के अलग-अलग हिस्सों में रखना पसंद करती हूं, ताकि एक दिन कभी उस कोने को साफ करते हुए मैं उनसे टकरा जाऊँ और वो दिन मेरे पिछले साल का झरोखा बन जाए, और मैं अपने अतीत के पन्नों से मिल पाऊँ।

आज ठीक ऐसा ही हुआ है! मैं अपनी किताब की अलमारी की सफाई कर रही थी, तभी मुझे कुछ साल पहले की एक डायरी मिली। अजीब बात है कि कैसे मैं इसके बारे में भूल गई थी, लेकिन इसके माध्यम से देखना कितना परिचित लग रहा था! अचानक, मेरी आँखें उनमें से एक पन्ने पे पड़ीं जिसपर एक तारीख रेखांकित थी.... १३ दिसम्बर २०१०। मैंने एक लंबी आह भरी और पिछले कुछ और पन्ने पलटे।

१ मई २०१०

प्रिय डायरी,
मेरे पास अब एक नया ट्यूशन शिक्षक है, मानस दा। मेरे माता-पिता ने उसे मुझे पढ़ाने के लिए ढूंढा है। मैं देखना चाहती हूँ की आगे चीजें कैसी होती हैं।

१५ मई २०१०

प्रिय डायरी,
मानस दा बहुत अच्छे हैं। वह मुझ पर मेहरबान हैं। जब मैं अपने टेस्ट में अच्छा करती हूं तो वह मुझे चॉकलेट देते हैं। आज जब मैं उनके सवालों का सही जवाब दे पाई, तो उन्होंने मेरे सिर को प्यार से सहलाया, मुझे यह अच्छा लगा।

१० जून २०१०

प्रिय डायरी,
मानस दा को बहुत गुस्सा भी आता है! जब वह किसी बात को लेकर परेशान होते हैं तो उनका चेहरा गुस्से से विकृत हो जाता है। वह राक्षस जैसे दीखते हैं तब। और फिर वह मुझे मारते हैं। आज वो मुझसे किसी बात को लेकर नाराज़ थे और उन्होंने मुझे बेंत की डंडी से मारा। मेरी जाँघों पर खून के थक्के बन गए हैं। यह बहुत दर्द देता है, और मुझे नहीं पता कि इस बात को किससे कहूँ, मेरे माता-पिता से तो कह ही नहीं सकती। मैंने सुना है कि वे मेरे १८ साल के होने का इंतजार कर रहे हैं ताकि वे मेरी शादी मानस दा से कर सकें!

१६ जून २०१०

प्रिय डायरी,
मैं अब तुम्हें एक दोस्त के रूप में नहीं देखती। मुझे तुम पर लिखना अच्छा नहीं लगता। मुझे बिस्तर से उठने का मन नहीं कर रहा है। मुझे सांस लेने का भी मन नहीं कर रहा है। सब कुछ एक कार्य की तरह लगता है और मैं हर चीज और हर किसी पर

बोझ जैसा महसूस करती हूं। मैं अपनी पढ़ाई में भी संघर्ष कर रही हूं और हर बार जब मैं सही उत्तर देने में असफल होती हूं तो मानस दा मुझे छूते हैं। वह मुझे उन जगहों पर छूते हैं जहाँ छूना नहीं चाहिए। मुझे घृणा महसूस होती है। मैं पीड़ा में हूँ। मैं इसे किसी के साथ साझा करना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि मेरे माता-पिता मुझे बचाएं। मैं उन्हें बताना चाहती हूं लेकिन मुझे डर लग रहा है। उन्हें मानस दा पर ज्यादा भरोसा है। अगर मैं अपना मुंह भी खोलूँगी, तो वे मुझे ही पीटेंगे। मैं खुद को कैसे बचाऊँ? मुझे लगता है कि शायद आत्महत्या ही एक रास्ता है।

२३ जून २०१०

प्रिय डायरी,
मैं एक रिश्तेदार की शादी के लिए कोलकाता में हूं। यहाँ एक लड़का है जो मुझे बहुत पसंद है। मुझे लगता है कि वह भी मुझे पसंद करता है। मैंने उसे कई बार मुझे घूरते हुए देखा है। उसका नाम सुजन है। हम पिछले कुछ दिनों से एक दूसरे को देख रहे हैं और फिर अपने फोन नंबरों का भी आदान-प्रदान किया। उसने हमेशा मुझसे बहुत सम्मान और प्यार से बात की है। मुझे उससे बात करना अच्छा लगता है। वह इस बात से वाकिफ है कि मुझे क्या पसंद है और क्या नापसंद है और सतर्क रहता है कि मुझे उसके किसी बात से ठेस न पहुंचे।

३० जून २०१०

प्रिय डायरी,
हमने फैसला कर लिया है! सुजन और मैं इस पागल दुनिया से दूर भागेंगे! हम अपने लिए एक छोटा सा घर बनाएंगे, छज्जे में पौधों के साथ छोटे-छोटे गमले रखेंगे, पालतू पक्षी रखेंगे। हम अपने घर का नाम ' ख्वाब घर ' रखेंगे । यह हमारा घर होगा। यह मेरा घर होगा। मेरा वर्तमान घर मेरा घर नहीं है, यह जेल की तरह है, मेरे लिए चैन की सांस लेना भी मुश्किल है, मेरे माता-पिता जो मुझे नहीं समझते, रिश्तेदार जो मेरी और मानस दा की शादी के बारे में बातें करते रहते हैं! मैं ये सब अब और सहन नहीं कर सकती।

२८ जुलाई, २०१०

प्रिय डायरी,
कार तैयार है। मैं सुजन के साथ अपने सपनों की जिंदगी जीने के लिए तैयार हूं। मैं तुम्हें अपनी मेज पर छोड़ दूँगी ताकि मेरे माता-पिता इसे पढ़ सकें और जान सकें कि मैंने क्या किया है।

१३ दिसंबर २०१०

प्रिय डायरी,
मुझे तुम्हारे साथ साझा किए हुए काफी समय हो गया है। मुझे नहीं लगता कि मेरे पास बोलने के लिए कुछ बचा है और जो कहने के लिए बचा है, वो मैं कहना नहीं चाहती। मेरे जीवन के पहले प्यार ने मुझे कोलकाता के एक रेड-लाइट एरिया में बेचने की कोशिश की थी। मुझे पुलिस ने बचाया और घर वापस लाए। उस दिन भी मेरे माता-पिता ने मुझे स्नेह से नहीं छुआ और ना मुझसे कहा कि सब ठीक हो जाएगा.. उन्होंने मुझे गले नहीं लगाया, मुझे शांत नहीं किया, मुझसे ये भी नहीं कहा कि मेरा बुरा समय खत्म हो गया है। लेकिन हाँ, उन्होंने अपने मन की बात कही, “तुमने इस परिवार को शर्मसार किया है! मुझे ज्यादा खुशी होती अगर तुम्हें एक मृत शरीर के रूप में वापस लाया जाता। मैं चुपचाप तुम्हारी अस्थियां गंगा में फेंक देता।" यह पहली बार था जब मैंने अपने पिता को पलट कर जवाब दिया! **"आपको मुझसे इस तरह बात करने का कोई हक़ नहीं है! जब मुझे आपकी सबसे ज्यादा जरूरत थी तब आप कहाँ थे? आप कहाँ थे जब मैंने अपने जीवन के कुछ सबसे कठिन हिस्सों को सबसे अच्छे तरीके से बताने की कोशिश की? आपने मेरे शरीर पर चोटों के निशान कैसे नहीं देखे? आपको ये कैसे नहीं दिखा की मानस दा के आने के बाद से मैं आप सब से कितना दूर हो गयी? सच तो यह है कि आपके पास मेरे लिए कभी समय ही नहीं था। आपने मुझे कभी नहीं समझा। आप बच्चे के रूप में केवल एक कठपुतली चाहते थे, कोई ऐसा व्यक्ति जो ठीक वही करता जो आप कहते, और जब आप व्यस्त होते हैं तो वह एक**

कोने में बैठ जाता। आपको एक जीते-जागते, सोचने और महसूस करने वाले इंसान से कोई वास्ता नहीं है, जिसे आपने खुद इस संसार में लाया है।

२० दिसंबर, २०१०

प्रिय डायरी,
थोड़े समय के लिए मेरे जीने की इच्छा ख़तम हो गयी थी। क्यूंकि, मैं जो कर रही हूं उसे जीना तो नहीं कहते हैं! मेरी हालत देखते हुए मुझे एक थेरेपिस्ट के पास ले जाया गया। पहले ही कुछ सत्र के काउंसलिंग से मुझे लगा की अभी भी मुझ में कहीं एक उम्मीद बाकी है। डॉक्टर से बात कर के मुझे अच्छा लगता है, ऐसा लगता है कि मेरे दिमाग की उधेड़-बुन को मेरी चिकित्सक सुलझाने में मदद करती है। ऐसा महसूस होता है जैसे कोई मुझे वास्तव में सुनता है और समझता है। थेरेपी लेना शायद मेरा सबसे अच्छा और सही निर्णय था।

चर्चा के बिंदु:

- **लेखिका डायरी क्यों लिखती है?**
- **कहानी से आप उसके माता-पिता के बारे में क्या जान पाते हैं?**
- **मानस दा कौन थे?**
- **मानस दा ने ऐसा क्या किया जिससे लेखिका उसके साथ असहज हो गई?**
- **लेखिका के माता-पिता क्यों चाहते थे कि उसकी शादी मानस दा से हो?**
- **लेखिका सुजन से कहाँ मिली? किस वजह से उसे उससे प्यार हो गया?**
- **सुजन ने उसके साथ क्या किया?**
- **जब उसे बचाया गया और घर वापस लाया गया तो लेखिका के माता-पिता की क्या प्रतिक्रिया थी? लेखिका ने इस पर कैसे प्रतिक्रिया दी?**
- **क्या आपने ऐसी ही कहानियों के बारे में सुना है जहां लोगों को प्यार में धोखा दिया गया और उनकी जान पर बन आई हो?**
- **आप कितने अन्य तरीकों से अवगत हैं कि कैसे लोगों ने अपने प्रेमी/प्रेमिका को धोखा दिया है?** (एक रिश्ते में रहते हुए दूसरे लोगों के साथ अफेयर करके धोखा देने की बात न करें)
- **हम अपने रोमांटिक पार्टनर के लिए या उनके साथ क्या करते हैं? इसमें अधिक सावधानी बरतने के लिए हम क्या कर सकते हैं?**
- **लेखिका सुजन को ज़्यादा लम्बे समय से नहीं जानती थी, फिर भी वो उसके साथ भाग गयी। इस बारे में आपका क्या ख्याल है?**
- **क्या आपको लगता है कि अगर वह अपने माता-पिता के साथ बेहतर संबंध होते तब भी वह ऐसा ही करती?**
- **हम में से कई लोग प्यार में पड़े युवा को यह कहकर दुत्कारते हैं कि वो माता-पिता के सालों के प्यार को ऐसे इंसान के प्यार के लिए भूलने को तैयार हैं जिसे वो कुछ ही दिन से जानते हैं। इस कहानी को ध्यान में रखते हुए, क्या हम ऐसा ही कह सकते हैं? क्या यह सच है कि हर माता-पिता हमेशा अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हैं? यदि किसी व्यक्ति को यह महसूस नहीं होता है कि उनके माता-पिता उनसे प्यार करते हैं, तो क्या वे दुनिया में इसकी घोषणा करेंगे या खुद इससे निपटने की कोशिश करेंगे? चूँकि हम माता-पिता और बच्चों के बीच व्यक्तिगत संबंधों को नहीं जानते हैं, क्या ऐसे टिप्पणी करना सही है?**
- **क्या थेरपिस्ट या काउन्सलर या मनोचिकित्सक की मदद लेना शर्मनाक है? आपके विचार से अगर लेखिका एक थेरपिस्ट से नहीं मिली होती जो उसे समझती थी, तो कहानी का समापन कैसा होता?**

अग्निकन्या, आग से जन्मी

- सुश्री संचारी चक्रवर्ती

****चेतावनी - वैवाहिक बलात्कार के संकेत शामिल हैं।****

महुआ

आज मैंने अपनी परीक्षा पास की और जैसे ही मुझे ऑनलाइन परिणाम मिला, मैंने सब्यसाची को मैसेज किया। सब्यसाची एमबीए (MBA) ग्रेजुएट हैं लेकिन सामाजिक कार्य के क्षेत्र के लिए उनके मन में अपार सम्मान है। उसके बाद मैंने अपनी माँ को कॉल किया; मेरी माँ वह महिला है जिन्हें मैं आदर्श मानती हूँ। हर बार जब भी मैं उन्हें देखती हूं तो मुझे लगता है कि मैं दुनिया की सबसे भाग्यशाली लड़की हूं। उन्होंने २२ साल पहले अपना खुद का एनजीओ शुरू किया था और उनके जीवन से ही मैं समझ पाती हूं कि महिला सशक्तिकरण का वास्तव में क्या अर्थ है। इससे पहले कि मैं अपना मास्टर्स इन सोशल वर्क (MSW) पूरा कर पाती, मुझे अपनी पहली नौकरी और उनके एनजीओ में उनके साथ स्वयंसेवा का अनुभव था और आपको बता दूँ, मेरे लिए यह आसान नहीं था। मुझे खुद को साबित करने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ी।

मेरे पिता एक बैंक में ब्रांच मैनेजर हैं और माँ एक एनजीओ की संस्थापक हैं। दोनों ही अपने कार्यक्षेत्र में दिग्गज हैं लेकिन बात जहाँ उनकी शादी पे आयी तो दोनों इस रिश्ते को संभाल नहीं सके।

ज्यादातर दिनों में जब मैं काम से वापस आती हूं, तो मैं अपनी माँ की गोद में अपना सिर रखना पसंद करती हूं और अपने दिन की सारी बातें उन्हें बताती हूं। मुझे लगता है कि ऐसा किये बिना मेरा दिन अधूरा रहेगा, आखिरकार, वो वह महिला है जिन्हें मैं आदर्श मानती हूं, वो वह महिला है जिन्होंने मुझे महिला सशक्तिकरण के बारे में सिखाया, वो वही है जिनके उदाहरण से मैं जीती हूं। इतने सालों में मैंने कभी अपनी माँ को खड़े होकर किसी अन्याय को होते हुए नहीं देखा। जो भी उन्हें गलत लगे, माँ उस चीज़ का विरोध करती हैं। बस जब मैं उन्हें यह सब बता रही थी, तो मुझे उनके शरीर में कंपन महसूस हो रही थी और उनका चेहरा एक पल के लिए ठंडा हो गया था। मेरी माँ ने मेरी तरफ देखा और मुस्कुराई जैसे कुछ हुआ ही नहीं और कहा, "सही कह रही हो। हर गलत चीज़ के खिलाफ आवाज़ उठाना चाहिए, आखिरकार, तुम्हारी रगों में मेरा खून बह रहा है।" मेरी माँ ने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे उत्तर की प्रतीक्षा कर रही हो, लेकिन मैं चुप रही और फिर मेरी माँ ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा, “बहुत देर हो चुकी है और तुम्हें कुछ खा लेना चाहिए। मेरे शरीर में बहुत दर्द हो रहा है और मुझे आराम करने अपने कमरे में जाना चाहिए”।

मधुरिमा -

मधुरिमा अपनी बेटी महुआ के साथ हुई बातचीत के विचारों में खोए हुए अपने कमरे में वापस चली जाती है। महुआ वह बेटी है जो उसे आदर्श मानती है, वह बेटी जिसने अपनी माँ को एक विद्रोही के रूप में देखा है, ये वह बेटी है जो अपनी माँ की तरह बनने के लिए कुछ भी कर सकती है। उसने अपने दिल में एक बुझती हुई भावना के साथ अपनी आँखें बंद कर लीं, अपने विचारों में आगे-पीछे, एक पल अपनी बेटी के बारे में और अगले पल में २४ साल पहले अपने जीवन के बारे में, एक युवा शिक्षित लड़की के रूप में, जो अपने परिवार की इकलौती संतान थी।

मधुरिमा ने अच्छी पढ़ाई की, फिर रोजगार का अच्छा मौका मिला, एक ऐसे लड़के से प्यार हो गया जो उसकी महत्वाकांक्षाओं को समझता था और शादी कर ली। शादी के बाद काम करने के उसके फैसले से उसके ससुराल वालों को कभी कोई दिक्कत नहीं हुई। वास्तव में उसके ससुराल वाले हमेशा उसकी पसंद और उसकी राय का सम्मान करते थे।

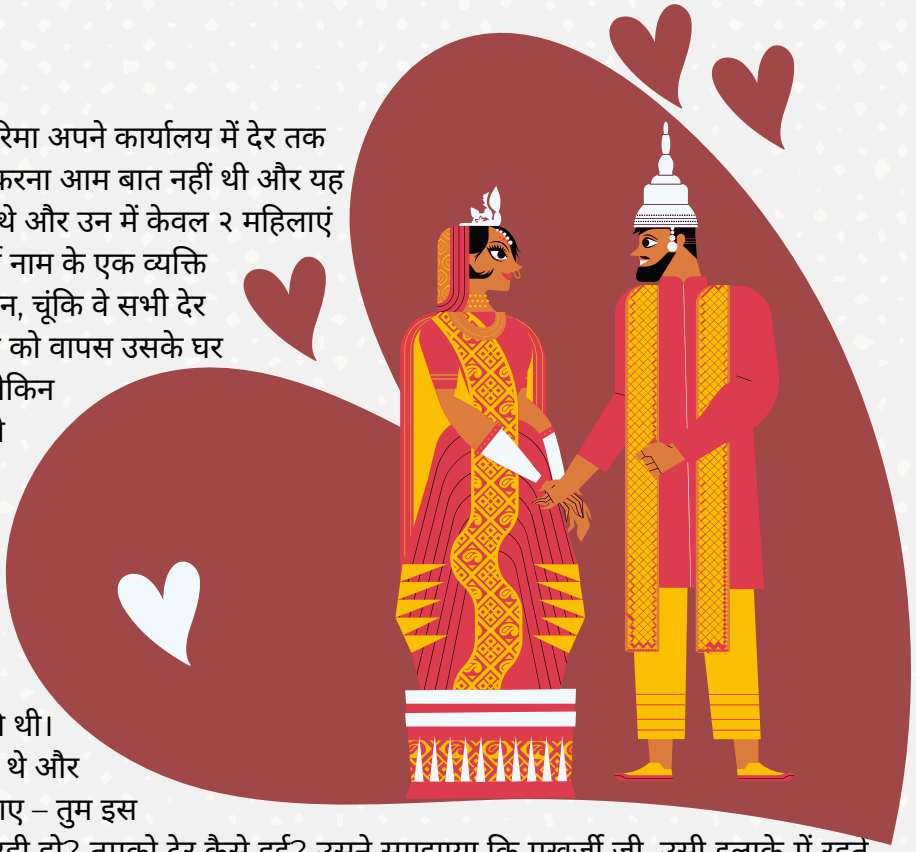

२४ साल पहले, साल के लगभग इसी समय, मधुरिमा अपने कार्यालय में देर तक काम कर रही थी। उन दिनों महिलाओं का काम करना आम बात नहीं थी और यह उनके कार्यालय से स्पष्ट था जिसमें १७ कर्मचारी थे और उन में केवल २ महिलाएं थीं। वहाँ काम करने वाले पुरुषों में मिस्टर मुखर्जी नाम के एक व्यक्ति थे। वे मधुरिमा की ही कॉलोनी में रहते थे। उस दिन, चूंकि वे सभी देर तक ऑफिस में फंसे रहे, इसलिए उन्होंने मधुरिमा को वापस उसके घर छोड़ने की बात की। मधुरिमा पहले तो झिझकीं लेकिन फिर मुखर्जी जी ने उससे कहा कि अगर वह उसे वापस नहीं छोड़ते हैं तो वह रात ९:३० बजे से पहले घर नहीं पहुँच पाएगी और एक नवविवाहित महिला के लिए इतने देर रात को घर आना शोभा नहीं देगा। ये सुन कर मधुरिमा तुरंत मान गई।

उस दिन जब वह घर पहुंची तो काफी देर हो चुकी थी। जैसी कि उम्मीद थी, सभी उसका इंतजार कर रहे थे और इससे पहले कि वह कुछ कहती, सवाल शुरू हो गए – तुम इस आदमी के स्कूटर पर क्यों बैठी हो? कहाँ से आ रही हो? तुमको देर कैसे हुई? उसने समझाया कि मुखर्जी जी उसी इलाके में रहते हैं और अगर वो नहीं होते, तो वह इस समय तक भी घर वापस नहीं आ पाती। उसके जवाबों से लग रहा था कि फिलहाल के लिए मामला सुलझ गया है, लेकिन मधुरिमा के पति ने न तो उससे कोई सवाल पूछा था और न ही उसके जवाब की परवाह की थी। वह चुपचाप कमरे में शराब के गिलास से घूंट ले रहे थे।

दो दिन बाद, मधुरिमा को फिर से देर तक काम करना पड़ा और मुखर्जी जी ने उसे वापस छोड़ने की बात की। जब वह घर पहुंची तो मन ही मन जानती थी कि आज भी सवाल होंगे, शायद पिछली बार से कहीं ज्यादा खराब। हालाँकि, जब वह घर पहुँची, तो चीजें बहुत ही शांत लग रही थीं, बिल्कुल एक बड़े, बुरे तूफान से पहले की शांति की तरह। उसके ससुर ने दरवाजा खोला और बिना मुस्कुराए वापस अपने कमरे में चले गए। उसकी सास, जो उस समय हमेशा टीवी के सामने बैठी रहती थी, वह नहीं दिख रही थी। मधुरिमा के पति ने शराब के गिलास से एक बड़ा घूंट लिया और कमरे में चला गया। आगे जो भी होने वाला था उसके डर से, वह अपने कमरे में चली गई। जैसे ही उसने अंदर कदम रखा, वह अपने पति को नहीं देख पाई, वह बाथरूम में उसकी तलाश करने गई, तभी वह हिंसक रूप से दरवाजा बंद करते हुए उसके पीछे से कमरे में आया। "तो, दूसरे मर्दों ने तुम्हें घर पर छोड़ना शुरू कर दिया है, हाँ? तुम इसे अपना घर समझती हो या वेश्यालय?" इस तरह के गुस्से से बौखलाकर मधुरिमा मुश्किल से ही बोल पा रही थीं। उसकी पति की आँखें खून सी लाल थीं, गुस्से में चेहरा विकृत था। उस रात से उसे अधिक कुछ याद नहीं है, सिवाय एक थप्पड़ के, फिर उसे बिस्तर पर फेंक दिया गया था और उसके पति ने अपनी पैन्ट की चैन खोलते हुए उसका गला कसकर पकड़ा था।

जब मधुरिमा आखिरकार बिस्तर से उठी, तो उसे नहीं पता था कि वह जीवित है या यह एक सपना था। काम से घर वापस आने के बाद से उसे कुछ भी याद नहीं था। मधुरिमा को लगा की शायद अपना मुँह धुलने के बाद उसे कुछ बेहतर लगे, लेकिन बाथरूम जाने के लिए वो जैसे ही उठी, उसने अपने पैरों के बीच में, अपनी कलाई पर औरअपनी छाती पर बहुत दर्द महसूस किया। वह स्नान करने के लिए खुद को घसीटते हुए बाथरूम तक ले गई। उसे लगा की एक बार नाहा ले तो शायद वो अपने शरीर से इस गन्दगी के एहसास को मिटा सकती है। उसे शायद नहीं पता था कि वह दिन उन अनगिनत दिनों में पहला बन जायेगा जब मधुरिमा ने अपने पति अपने मन कि गन्दगी को उसके शरीर पर उतारेगा।

उस दिन से सब कुछ बदल गया। शरीर में अत्यंत दर्द के कारण वो अपनने ऑफिस नहीं जा पायी और हाल ही में हुए घटनाओ से उसका मन टूट गया था, इसलिए ऑफिस में जानकारी देने का उसे ख्याल भी नहीं आया। मधुरिमा को नौकरी से निकाल दिया गया। मधुरिमा खुद को ज्यादातर अपने बिस्तर से बांधकर ही रहने लगी। लेकिन उसके तरह ज़िंदा दिल लड़की के लिए ये कोई जीना नहीं हुआ। उसकी तो मानो जीने कि इच्छा ही ख़तम हो गयी हो। सबसे ज़्यादा दु:ख उसे इस बात का लगा कि ये कोई अरेंज्ड मैरिज नहीं है जहाँ किसी और ने उसके लिए जीवन साथी चुना, सब कुछ देख समझकर मधुरिमा ने खुद ही अपने पति को चुना था लेकिन उसने ही उसे सबसे गंदे तरीके से धोखा दिया।

उस रात ने वास्तव में उसके पति के साथ भी उसके रिश्ते को बदल दिया। सब कुछ बहुत यांत्रिक हो गया। उनकी शादी में सहमति की भूमिका खत्म हो गई थी, इसलिए पति का जब भी मन करता खुद को उस पर थोप देता था। मधुरिमा के पास लड़ने के लिए कोई चाह ही नहीं बची थी।

अगले कुछ महीनों तक जिंदगी ऐसे ही चलती रही जब अचानक एक दिन मधुरिमा को पता चला कि वह माँ बनने वाली है। बीटा होगा या बेटी, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन इस नन्ही सी जान के आने कि खबर से उसने सोचना शुरू किया कि क्या वो अपने बच्चे को ऐसे घर में लाना चाहेगी जहाँ पिता किसी राक्षस से काम न हो और दादा-दादी भी ऐसे जो अपनी नाक के नीचे हो रहे गलत को रोकने कि कोशिश भी नहीं करते। अपने जीवन में एक नयी उम्मीद जागते हुए वह अपने माता-पिता के पास पहुंची। उन्होंने स्पष्ट रूप से उसका समर्थन करने से इनकार कर दिया और उल्टा, अपने पति को छोड़ने का ख्याल अपने मन में लाने के लिए उसे डांटा। मधुरिमा दृढ़ निश्चयी थीं। वह अपनी नौकरी वापस पाने में मदद के लिए मुखर्जी जी के पास पहुंची। मधुरिमा अपने काम में निपुण थी इसलिए नौकरी वापस मिलना उसके लिए ज़्यादा मुश्किल नहीं था। जैसे ही उसने कागजी कार्यवाही पूरी की, वह अपने ससुराल से निकलकर एक किराए के कमरे में चली गई।

ये सब आसान नहीं था। मधुरिमा के माता-पिता उसके खिलाफ थे, उसके सास-ससुर ने उसके और मुखर्जी जी के बारे में कॉलोनी में उलटी-सीधी बातें करना शुरू कर दिया था, उसका पति हंगामा करने और उसे तलाक ना देने की धमकी देने के लिए उसके कार्यालय में आता था। मधुरिमा ने फिर भी तलाक की कार्यवाही को आगे बढ़ाया और अपने पति को दूर रखने के लिए उसके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की।

मधुरिमा को यह सारी शक्ति अपनी बेटी की वजह से ही मिली। महुआ, जो अपनी माँ के उदाहरण से अपना जीवन जीती है, उसने ही अपनी माँ को वह महिला बनने के लिए प्रेरित किया, जो वह आज है।

चर्चा के बिंदु:

- **हम महुआ के बारे में क्या जानते हैं?**
- **वह अपनी माँ के उदाहरण से क्यों जीती है?**
- **मधुरिमा के कमरे में वापस जाते समय उसे किन यादों ने घेर लिया था?**
- **मधुरिमा की लव मेरिज थी या अरेंज्ड मेरिज?**
- **अगर मधुरिमा ने अपने पति को खुद चुना था, शादी से पहले कुछ समय के लिए उसे जाना समझा था, फिर भी चीजें क्यों खराब हुई?**
- **मधुरिमा के सास-ससुर शादी के बाद उसके काम करने से खुश थे, लेकिन वे नाराज कैसे होने लगे?**
- **मधुरिमा मुखर्जी जी के साथ घर क्यों लौटी थी?**
- **कहानी में जो उल्लेख किया गया है, उसके आधार पर आप मुखर्जी जी के बारे में क्या सोचते हैं? मधुरिमा को घर छोड़ने की बात करना सही था या उन्हें मधुरिमा को देर शाम अकेले घर लौटने देना चाहिए था?**
- **मधुरिमा के दूसरी बार देर से आने पर उसके पति ने क्या किया? आपको क्या लगता है कि उसे ऐसा करने की ज़रूरत क्यों थी?**
- **उस रात के बाद मधुरिमा और उसके पति का रिश्ता कैसे बदल गया?**
- **मधुरिमा का हौंसला क्यों टूटा था?**
- **ऐसा क्या होता है जिससे मधुरिमा को खुशी से जीने कि प्रेरणा वापस मिल जाती है?**
- **बलात्कार क्या है?** (जब कोई व्यक्ति अपने लिंग या लिंग की परवाह किए बिना किसी अन्य व्यक्ति के साथ यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया जाता है, तो इसे बलात्कार कहा जाता है। सहमति का अर्थ समझाने में सहायता के लिए यह वीडियो दिखाएं - https://www.youtube.com/watch?v=u7Nii5w2FaI)
- **वैवाहिक बलात्कार क्या है?** (समूह को यह समझने में मदद करें कि जब कोई व्यक्ति अपने विवाहित साथी के साथ शारीरिक रूप से अंतरंग होने से पहले सहमति नहीं लेता है, तो इसे वैवाहिक बलात्कार कहा जाता है। वैवाहिक बलात्कार को अभी तक भारतीय कानून द्वारा अपराध नहीं माना जाता है, लेकिन वास्तव में यह उतना ही बुरा है जितना कि किसी भी तरह का बलात्कार जो हमें क्रोधित करता है।)

क्या यह प्यार है?

- सुश्री रशीना खातून

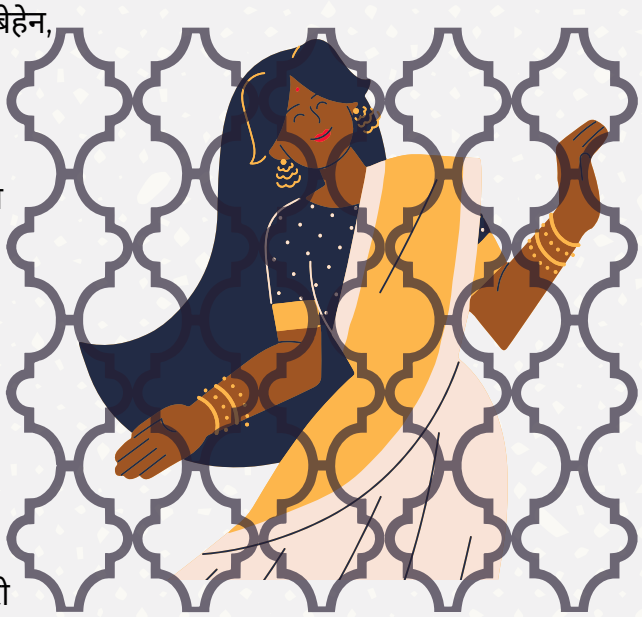

परी अपने माता-पिता की आंखों का तारा थी। चार भाइयों में इकलौती बेहेन, उसे परिवार में सभी से प्यार मिलता था। उसकी एक संरक्षित परवरिश थी। उसकी सभी जरूरतों और चाहतों का ख्याल रखा जाता। उसे बस अपनी इच्छा जाहिर करनी थी और परिवार में हर कोई उसे पूरा करने में लग जाता। छोटी परी बहुत ही सुंदर थी और उसके माता-पिता, इस बात से अवगत थे। उसे परिवार के बाहर किसी भी लड़के के साथ बातचीत करना मना था। रोज़ाना कोई एक भाई उसे एक लड़कियों के स्कूल में छोड़ने और वापस लेने के लिए अपनी बाइक पर जाता था।

एक बार, जब वह दसवीं में थी, उसके एक भाई की शादी होनी थी और घर पर बहुत काम करना था। इसके लिए कुछ मजदूरों को घर में आने दिया गया। परी पहले कभी अजनबी आदमियों से नहीं मिली थी। उसने खुद को उनमें से एक के प्रति विशेष रूप से आकर्षित पाया। वह जवान था, जीवंत था, बलवान था और उसका व्यवहार भी बहुत अच्छा था। परी ने समय-समय पर खुद को उसे घूरते हुए पाया। उस लड़के को लगा कि वह परी के ध्यान का विषय है, लेकिन वह यह भी जानता था कि यह परिवार अपनी बेटी के प्रति कितना अधिकार रखता है, इसलिए उसने परेशानी से दूर रहने का फैसला किया और पारी के साथ बात करने की भी कोशिश नहीं की।

हाई स्कूल के दौरान, परी को घर में बिना आस्तीन के कपड़े पहनने की मनाही थी। उससे बड़े और अविवाहित चचेरे भाई के परिवार में शामिल होने की स्थिति में वह अक्सर त्योहारों में शामिल होने से रोक दी जाती थी। **धीरे-धीरे, जो शुरू में उसके परिवार के प्यार की तरह लग रहा था और उसे लाड़-प्यार का एहसास करा रहा था, वह अब उसे अपने जीवन पर एक असहनीय नियंत्रण तंत्र की तरह महसूस होने लगा। उसे दुनिया की आधी आबादी के साथ बातचीत करने से रोक दिया गया था!** वह गोल गप्पे खाने के लिए बाहर जाना चाहती थी, लेकिन उसके भाई गोल गप्पे बाँध कर घर लाते थे। उसने जल्द ही महसूस किया कि वह जिन दुकानों पर खरीदारी के लिए जाती थी, उनकी वहां केवल महिला विक्रेता होती थी!

परी आज भी सबकी आंखों का तारा थी। उसके परिवार में अभी भी सभी उसकी हर इच्छा पूरी करते थे। उसे अभी भी केवल एक शब्द कहना था और उसे पूरा करने के लिए पूरा परिवार जुट जाता। लेकिन इन सबके बावजूद परी खुश नहीं थी।

जब परी ने हाई स्कूल किया, तब उसकी एक एयर होस्टेस बनने की महत्वाकांक्षा थी, लेकिन उसके परिवार ने इसका समर्थन नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने उसे एक स्थानीय लड़कियों के कॉलेज में पढ़ने के लिए मना लिया, जहाँ उसे उसका एक भाई अपनी मोटरसाइकिल पर छोड़ने और घर वापस लाया करता था।

कॉलेज के पहले वर्ष के बाद, जब वह १८ वर्ष की हुई, तो उसका परिवार उसके लिए एक युवक की तस्वीर लेकर आया, जिससे उसे एक सप्ताह के भीतर सगाई करनी थी और एक महीने के अंदर शादी। वह युवक एक सभ्य परिवार से था, अच्छी तरह से शिक्षित था, अपना व्यवसाय चलाता था और देखभाल करने वाला और स्नेही व्यक्ति भी था। उसके परिवार का मानना था कि वह उसकी रक्षा करेगा और उसकी सभी जरूरतों का वैसे ही ख्याल रखेगा जैसे कि उसके भाइयों ने अब तक किया है।

चर्चा के बिंदु:

- **परी कैसी थी?**
- **हम उसके परिवार के बारे में क्या जानते हैं?**
- **इस कहानी से हमें कैसे पता चलता है कि वह एक लाड़-प्यार की जाने वाली लड़की थी?**
- **उसके प्रति अपना प्यार दिखाने के लिए उसके परिवार ने क्या किया?**
- **इस तरह के प्यार पर आपके क्या विचार हैं?**
- **अपने आप को परी के स्थान पर रखें, आप अपने परिवार से इस तरह के प्यार को कैसे देखेंगे?**
- **आपको क्या लगता है कि परिवार को परी की रक्षा करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई?**
- **परी ने एक बार एक मजदूर के प्रति आकर्षण महसूस किया। वह उससे दूर क्यों रहा ?**
- **परी को स्थानीय गर्ल्स कॉलेज में पढ़ने के लिए क्यों कहा गया?**
- **इस दुनिया में हर आदमी से सुरक्षित रखने के बाद, परी को अचानक एक अजनबी आदमी को पति बनाने के लिए कहा जाने लगा। अपने आप को परी के स्थान पर रखें। उसके डर क्या थे? क्या आपको लगता है कि वह उत्साहित थी? क्या आपको लगता है कि यह उचित था?**
- **परी को शुरूआत में इस तरह परिवार से लाड़-प्यार मिलना पसंद था। उसे इस बात से अचानक घुटन क्यों महसूस होने लगी?**
- **हम रोमांटिक प्यार के बारे में बात करने में काफी समय बिताते हैं। एक परिवार में प्यार का क्या मतलब है?**
- **क्या प्रेम का भाव किसी को त्याग करने और देने के ही योग्य बनाता हैं या प्रेम का भाव अधिकार का भाव भी जगाता है? अपना उत्तर विस्तार में बताएँ।**
- **कैसे और कब** (पारिवारिक या गैर-रोमांटिक) **प्यार विषैला हो जाता है?**
- **ऐसी कौन सी कुछ बातें हैं जिनका ध्यान हम रख सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हमारा प्यार दूसरे व्यक्ति को एक पिंजरे की तरह न लगे?**

लव आज कल

- श्री सुरोजीत सेन

जीत और अदिति एक युवा जोड़ा हैं। वे स्कूल के दिनों से ही एक दूसरे के साथ हैं। वे एक ही स्कूल जाते थे, एक ही कॉलेज में पढ़ाई की, और अब एक ही शहर में दो अलग-अलग कंपनी में काम करते हैं। वे एक साथ ही बड़े हुए हैं। वे दोनों ऐसे हमसफ़र की तरह थे, जिन्हें देखकर दुनिया को 'राम मिलाई जोड़ी' वाली बात पर विश्वास हो जाए ...

जीत और अदिति दोनों की उम्र २५ साल थी और वे मध्यमवर्गीय परिवार से थे। उनके सपने स्वयं और अपने परिवारों के लिए भी बहुत बड़े थे, जो कि उन्हें अपनी उम्र के अन्य युवाओं की तुलना में अधिक मेहनत, होशियारी और अधिक लगन से काम करने के लिए प्रेरित करता था। वे दोनों करियर के प्रति जागरूक थे और दोस्तों और परिवार के साथ अपने निजी समय को भी महत्व देते थे। ऐसा नहीं था कि दोनों परिपूर्ण थे और वे काम और जीवन के बीच सही संतुलन बनाने में सक्षम थे, लेकिन हर बार जब उनमें से एक असंतुलित होता, तो दूसरा उसे वापस स्थिरता में ले आता। उनमें से किसी ने भी आँख बंद करके एक-दूसरे का समर्थन नहीं किया। वे समझ गए थे कि उनमें से प्रत्येक का क्या महत्व है, वे प्रश्न पूछने या ऐसे तर्क रखने में सक्षम थे जो दूसरे व्यक्ति को स्थितियों को अधिक स्पष्टता से देखने में मदद करता था।

एक दिन, दोनों एक स्थानीय चाय की दुकान पर मिले और इस बारे में बात करना शुरू कर दिया कि घर पर चीजें कैसी हैं। अदिति शादी करने के लिए काफी दबाव का सामना कर रही थी।

अदिति - "मेरे माता-पिता मेरी शादी करने के लिए मेरे पीछे पड़े हैं! वे कहते हैं कि मेरी उम्र २५ साल है, एक लड़की की शादी के लिए पहले ही बहुत देर हो चुकी है!"

जीत - "हा-हा! सच में? जब मैं अपने माता-पिता से हमारी शादी के बारे में बात करता हूँ, तो वे कहते हैं कि तुम्हारी उम्र सिर्फ २५ साल है, जो कि एक लड़के के लिए शादी करने के लिए बहुत कम उम्र है!"

अदिति - "शादी करने के लिए तुम बहुत छोटे हो और मैं बहुत बड़ी हूँ, और हम दोनों एक ही उम्र के हैं! ये कैसी दुनिया में हम रहते हैं!! मैं उन्हें यह कहकर रोक रही हूं कि मैं अभी अपने करियर में उस मुकाम पर नहीं पहुंची हूं, जहां मैं घर बसाने के बारे में सोच सकूँ। मैं शादी करने से पहले अपने माता-पिता को हमारे किराए के अपार्टमेंट से बाहर ले जाने और उनके लिए खुद का एक घर खरीदने और कम से कम अकेले एक अंतरराष्ट्रीय यात्रा करने में सक्षम होना चाहती हूं। "

जीत - "मैं जानता हूं और तुम्हारी आकांक्षाओं के लिए मैं तुमसे प्यार करता हूं। मैंने यह बात अपने माता-पिता को भी बताई है पर वे इस बात से नाराज़ हो जाते हैं कि तुम्हें इतना पैसा कमाने की आवश्यकता क्यों है! तुम पहले ही मुझसे ज्यादा कमाती हो। वे इस बात पर जोर देते हैं कि तुम अपने करियर पर ध्यान देना कम कर दो और मैं अपने करियर पर अधिक काम करूँ ताकि मैं उच्च स्थिति में रह सकूं और तुमसे अधिक पैसा कमा सकूं। जहां तक अकेले यात्रा का सवाल है, उन्हें समझ नहीं आता कि तुम मेरे बिना कहीं क्यों जाना चाहोगी?!"

अदिति - "हम्म .. मेरे माता-पिता भी ऐसा ही महसूस करते हैं, इसलिए यदि वे मुझे नहीं समझते हैं, तो मुझे इस संबंध में तुम्हारे माता-पिता से बहुत अधिक उम्मीदें नहीं हैं।"

जीत - "अरे ! इसे लेकर तुम्हें ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है। **मैं तुम्हें समझता हूँ। मेरे साथ घर बसाने से पहले मैं तुम्हारे माता-पिता के लिए घर खरीदने के इरादे को पूरी तरह से समझता हूं और उसका समर्थन करता हूं। और मैं अकेले यात्रा के साथ भी तुम पर भरोसा करता हूं, मुझे भी लगता है कि अकेले रहना और मनन करना कि 'क्या यही वह जीवन है जो तुम अपने लिए चाहती हो', बहुत महत्वपूर्ण है और मैं दिल से आशा करता हूं कि तुम्हारा उत्तर 'हां' हो ! हम इतने लंबे समय से साथ हैं, मैं ऐसा कभी नहीं चाहता की हम इस वजह से साथ रहें की हमें एक दूसरे की आदत है, बल्कि इस लिए साथ रहें क्योंकि हम वाकई में एक दूसरे के साथ रहना चाहते हैं।**"

अदिति - "तुम दुनिया के सबसे अच्छे बॉयफ्रेंड हो!"

जीत - "अरे अदिति! मुझे भी तुमसे कुछ जरूरी बात करनी थी।"

अदिति - "हाँ, कहो।"

जीत - "मैं काम पर अच्छा कर रहा हूं और हो सकता है कि मेरा पदोन्नति हो जाए। लेकिन मुझे इस पद को लेने के लिए दिल्ली जाना पड़ेगा और ये भी हो सकता है की मुझे वहां कुछ सालों तक रहना पड़े। मुझे पता है कि तुम्हारा परिवार यहां कोलकाता में है और तुम उनके आसपास रहना चाहती हो, लेकिन मेरी कंपनी में आगे बढ़ने के लिए, मुझे दिल्ली में रहने की जरूरत है और मैं तुमसे बात किए बिना ऐसा नहीं करना चाहता, क्योंकि इसका मतलब यह भी है कि अगर हम अगले कुछ वर्षों में शादी कर लेते हैं, तो मैं उस समय कोलकाता में नहीं रह पाऊँगा। "

अदिति - "हम्म .. हम हमेशा साथ रहे हैं इसलिए तुम्हारे बिना इस शहर की कल्पना करना थोड़ा मुश्किल लगता है, लेकिन तुम्हें यह पद जरूर लेना चाहिए। मैं कुछ मौकों पर तुमसे मिलने दिल्ली आ जाया करूंगी, और इसी तरह कभी-कभी तुम मुझसे मिलने कोलकाता आ सकते हो। हम ये कर सकते हैं!! और जहां तक हमारी शादी की बात है, मेरी कंपनी का एक दिल्ली कार्यालय भी है, इसलिए मैं वहां स्थानांतरित होने के लिए आवेदन कर सकती हूं। मेरे माता-पिता बूढ़े हैं, लेकिन अभी तक पूरी तरह से मुझ पर निर्भर नहीं हैं, इसलिए मैं अभी भी इस बारे में सोच सकती हूँ की मुझे कहाँ रहना है! अच्छा लगा की तुमने मुझसे इस बारे में बात की।

जीत - "बेशक मैं बात करता। तुमने भी ऐसा ही किया होता। आखिर हम जीवन साथी हैं।"

चर्चा के बिंदु:

- जीत और अदिति कौन हैं?
- वे कितने समय से साथ हैं?
- दोनों एक ही उम्र के हैं, फिर भी जब शादी करने की बात आती है तो क्या उन्हें एक ही बात सुनने को मिलती है? आपके विचार से ऐसा क्यों है?
- अदिति शादी से पहले क्या करना चाहती है?
- इस पर जीत के माता-पिता की क्या प्रतिक्रिया है? इस पर जीत की क्या प्रतिक्रिया है?
- अदिति के शादी से पहले अकेले यात्रा पर जाने के बारे में जीत का क्या कहना है?
- जीत को अपनी कमाई को लेकर घर से ज्यादा दबाव क्यों झेलना पड़ता है?
- हम उन पुरुषों के बारे में किस तरह की बातें करते हैं जो अपने साथी से कम कमाते हैं? आप इस दबाव के बारे में क्या सोचते हैं?
- आपको क्यों लगता है कि जीत अदिति के ज्यादा कमाई करने से सहज है?
- जीत को अदिति के साथ आगामी पदोन्नति पर चर्चा करने की आवश्यकता क्यों है?
- हमारे समाज में, एक अलग शहर में स्थानांतरण के संबंध में कोई भी निर्णय लेने से पहले किस लिंग को अपने साथी के बारे में सोचना जरूरी है? यह अपेक्षा दूसरे लिंग के लिए क्यों नहीं है? आपको क्या लगता है यह कैसा होना चाहिए?
- कहानी के माध्यम से हम देखते हैं कि उनका रिश्ता कितना सुरक्षित है और वे एक-दूसरे पर कितना भरोसा करते हैं और एक दूसरे का कितना सम्मान करते हैं। क्या हम अन्य जोड़ों को इसी तरह देखते हैं, जिन्हें हम जानते हैं?
- आपको क्या लगता है कि एक जोड़े के मध्य पावर डाइनैमिक्स में समाज क्या भूमिका निभाता है? क्या आपको लगता है कि इसे बदला जा सकता है? कैसे?
- हम बहुत सारी हमेशा खुश रहने वाले जोड़ों की कहानियां सुनते हैं और उसी के बारे में फिल्में देखते हैं, लेकिन लगभग सभी उन व्यावहारिक चीजों को दिखाने से चूक जाते हैं जो एक जोड़े को एक साथ खुश रहने के लिए आवश्यक होती है। आपके अनुसार, इनमें से कुछ व्यावहारिक चीजें क्या हैं जिन्हें एक जोड़े को एक साथ खुश रहने के लिए आवश्यक हैं?

प्यार अंधा बना देता है

- श्री विश्वजीत मुखर्जी

एक दिहाड़ी मजदूर पिता और सब्जी बेचने वाली माँ की बेटी, परमिता १५ साल की एक जिंदादिल लड़की थी, जिसे स्कूल जाना बहुत पसंद था। केवल पढ़ाई में ही उसकी दिलचस्पी नहीं थी, वह लंच के दौरान अपने दोस्तों के साथ खेलना भी पसंद करती थी। उसकी रोजमर्रा की उदास, सांसारिक जीवन, जहाँ रोज खाना मिलना भी एक संघर्ष था, से स्कूल में ये ८ घंटे उसके लिए राहत जैसे थे। साथ ही, उसके दोस्त आर्थिक रूप से बेहतर थे और उसे उनके माध्यम से बहुत कुछ नया सीखने को मिला। वे अक्सर उसे घर पर आमंत्रित करते थे, जहाँ वे एक साथ फिल्में देखते थे और चिप्स खाते थे।

हाल ही में परमिता के दोस्तों को उनके माता-पिता से स्मार्टफोन मिले थे। वे हर समय घर पर तस्वीरें खींचते थे और अब उन्होंने फेसबुक पर अपना अकाउंट भी बना लिया था। उन्होंने व्हाट्सएप पर वीडियो कॉल भी करना शुरू कर दिया था, जिससे वो स्कूल के बाद भी जुड़े रह सकते थे। इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के बारे में जानने के लिए परमिता बहुत उत्साहित थी और चाहती थी कि उसके पास अपने दोस्तों के साथ जुड़े रहने के लिए एक स्मार्टफोन हो। लेकिन, परमिता एक कर्तव्यनिष्ठ लड़की थी। वह जानती थी कि उसके माता-पिता के लिए रोज के खाने का इंतेज़ाम करना ही मुश्किल है, वह छात्रवृत्ति के माध्यम से पढ़ रही थी और उसके कपड़े उसकी माँ द्वारा पुरानी साड़ियों पर कलात्मक प्रयास थे। इसलिए, परमिता ने अपने माता-पिता को फोन के लिए परेशान नहीं करने का फैसला किया।

महीनों के भीतर, दुनिया को एक महामारी ने अपने कब्जे में ले लिया। सरकार ने अचानक देशव्यापी तालाबंदी की घोषणा की थी। कुछ ही घंटों में, उसके पिता की नौकरी चली गई, उसका स्कूल बंद हो गया और उसकी माँ परिवार की एकमात्र कमाने वाली बन गई। अधिकांश परिवारों ने वायरस की चपेट में आने के डर से सुपर मार्केट से सब्जियां खरीदना शुरू कर दिया था, जिससे उसकी माँ की आय भी प्रभावित हुई थी। परमिता और उसके पिता ने सब्जियों को तीन भागों में बाँटने का फैसला किया, ताकि तीनों शहर के अलग-अलग हिस्सों में बेच सकें, और घर में और पैसे ला पाएँ।

जल्द ही, परमिता को पता चला कि उसकी कक्षाएं ऑनलाइन शुरू की जाएंगी, लेकिन इसके लिए उसे एक स्मार्टफोन की जरूरत थी। उस रात, रात के खाने पर, परमिता ने अपनी आँखों में एक चमक के साथ बताया कि वह भी पढ़ाई फिर से शुरू कर सकती है, लेकिन परिवार ने फैसला किया कि स्मार्टफोन खरीदना अभी मुश्किल होगा और परमिता ने तुरंत कहा कि वह इस साल पढ़ाई छोड़ने और एक साल बाद फिर से पढ़ाई शुरू करने में भी खुश है। परमिता की माँ ने देखा था कि उनकी बेटी कितनी जिम्मेदारी से व्यवहार कर रही है, इसलिए, पिता के साथ चर्चा की, और अगले दिन उसे खुश करने के लिए एक सेकेंड हैंड स्मार्टफोन दिया। परमिता बहुत खुश थी! उसने कभी नहीं सोचा था कि उसके माता-पिता उसके लिए ऐसा कुछ करेंगे। परमिता ने इस साल क्लास टॉपर बनने और अपनी पढ़ाई को संतुलित करने के साथ-साथ घर चलाने में मदद करने का वादा किया। वह अपनी कक्षाओं को लगन से करती थी, समय पर अपना गृहकार्य जमा करती थी और फिर अपने माता-पिता की मदद के लिए अपना फोन दूर रख देती

थी। हालाँकि, स्मार्टफोन बहुत लुभावना है! दोस्तों की मदद से, एक हफ्ते के भीतर, परमिता व्हाट्सएप पर आ गयी और अगले दिन एक फेसबुक प्रोफाइल भी बना लिया था। फेसबुक की दुनिया अविश्वसनीय है! परमिता स्कूल के उन दोस्तों से भी जुड़ पाई जिन्होंने बहुत पहले स्कूल और शहर छोड़ दिया था। उसे फेसबुक पर नए दोस्त भी मिले। हालांकि वह सतर्क थी और केवल लड़कियों को ही जोड़ती थी। वह वैसे भी किसी लड़के को नहीं जानती थी और यह भी सोचती थी कि कोई लड़का उसका दोस्त नहीं बनना चाहेगा। एक और हफ्ते में, परमिता को मिथुन नाम के किसी लड़के की फ्रेंड रिक्वेस्ट आई और वह कितना हैंडसम था! उसे उसकी प्रोफाइल फोटो देख कर विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके जैसा अच्छा दिखने वाला लड़का उससे दोस्ती करना चाहेगा! ऑनलाइन दोस्ती के साथ कितनी बुरी चीजें हो सकती हैं, इस बात से अनजान, परमिता ने मिथुन से लगभग रोज़ाना बात करना शुरू कर दिया। ये बातें पहले फ़ेसबुक, फिर व्हाट्सएप, और वीडियो कॉल के माध्यम से होने लगीं। परमिता को पहली बार प्यार का अहसास हुआ। उसने अक्सर अपने सहपाठियों को उनके बॉयफ्रेंड के बारे में बात करते सुना था, लेकिन उसका कभी कोई बॉयफ्रेंड नहीं था। परमिता मिथुन के प्यार में पागल थी और ऐसा लग रहा था कि मिथुन भी उससे प्यार करता है। दोनों ने एक साथ बातें करते हुए काफी समय बिताया और परमिता के अनपढ़ माता-पिता को लगा कि उनकी बेटी पढ़ रही है।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, परमिता का पड़ोसी उसके लिए शादी का प्रस्ताव लेकर आया। लड़का एक सरकारी कर्मचारी था और उसे कोई दहेज नहीं चाहिए था। पड़ोसी परमिता से प्यार करते थे और उन्हें लगा कि वह उसके लिए सबसे उपयुक्त होगा। परमिता के माता-पिता ने १८ साल की उम्र से पहले और बिना हाई स्कूल खत्म किए, बेटी की शादी करने से इनकार कर दिया। पड़ोसियों ने उसके माता-पिता को आश्वस्त किया कि वे कितने भाग्यशाली हैं कि उन्हें ऐसा दूल्हा मिला, जो उनकी बेटी को बिना दहेज के चाहता था। उन्होंने यह भी आश्वस्त किया की लड़के का परिवार भी अच्छा है। काफी बातचीत के बाद परमिता के परिवार वाले राज़ी हो गए। हालाँकि, अभी तक किसी ने भी परमिता से बात करने की जहमत नहीं उठाई थी!

इस बारे में जानने पर, परमिता ने मिथुन को कॉल किया यह बताने के लिए कि वह उससे कितना प्यार करती है और उसके बिना जीवन जीने के बजाय मृत्यु को चुनेगी। मिथुन ने भी उससे अपने प्यार का इज़हार किया, लेकिन यह भी पूछा कि अब उसे क्या करना चाहिए? **परमिता ने बताया कि वह मिथुन के साथ भागना चाहेगी। मिथुन इसके खिलाफ लग रहा था लेकिन कॉल के अंत तक वह उसे इसके लिए मनाने में सक्षम थी।** दो दिनों के भीतर योजना बन गई। दोनों की मुलाकात एक जगह पर हुई, फिर वो शादी के लिए पास के मंदिर में चले गए। परमिता मिथुन से पहले कभी नहीं मिली थी, फिर भी उसे सब कुछ ठीक लग रहा था, मानो देवता भी उनका मिलन चाहते थे। उनकी शादी के बाद, मिथुन उसे एक दोस्त के घर ले गया क्योंकि उसके माता-पिता उनकी शादी को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। परमिता ने उसकी स्थिति को समझा और कुछ नहीं कहा। वह रात पहली बार थी जब परमिता ने किसी आदमी के साथ गुज़ारी थी। मिथुन बहुत सम्मानजनक था और उसने कहा कि वह उसे सहज होने के लिए समय देना चाहता है। परमिता को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह कितनी खुशकिस्मत है कि वह उससे मिली!

अगले कुछ हफ्तों में परमिता और मिथुन दुनिया की परवाह किए बिना वैवाहिक आनंद में रहने लगे। महीने के अंत तक मिथुन ने परमिता से कहा कि उन दोनों को दिल्ली जाना है, जहां उसे नौकरी मिल गई है। उसने कहा कि इस नौकरी को लेने से उसके परिवार को यह देखने में मदद मिलेगी कि कैसे परमिता उसे जीवन में बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है। भविष्य में उनके लिए जो कुछ भी था उसके लिए उत्साहित और आशान्वित, दोनों दिल्ली के लिए रवाना हुए।

दिल्ली में, मिथुन परमिता को एक घर में ले गया, जो उसने कहा कि उसकी बड़ी बहन का है। उन्होंने मिथुन को अपना पहला वेतन मिलने तक वहां रहने और फिर वेतन मिलने के बाद वहाँ से जाने की योजना बनाई थी। परमिता के लिए ये सब किसी सपने को जीने जैसा था। उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह कितनी भाग्यशाली थी।

दिल्ली में पहले दो दिन अच्छे रहे। तीसरे दिन मिथुन को नई जगह पर काम शुरू करना था, इसलिए उसने घर छोड़ दिया। परमिता ने उसके जाने से पहले उसे अच्छे भाग्य के लिए दही-चीनी खिलाया था। तब से, वह उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी ताकि वह उसके दिन के बारे में सब कुछ सुन सके। मिनट घंटों में बदल गए, दिन से रात हो गई, लेकिन मिथुन वापस नहीं आया। परमिता शाम ७ बजे के आसपास बाहर जाकर खुद तलाश करना चाहती थी, अगर कहीं मिथुन का एक्सीडेंट हो गया

हो, लेकिन जैसे ही वह अपने कमरे से बाहर निकली, उसे चमेली के फूल की भारी गंध आई, कामुकता भारी नज़रों वाले अजनबी आदमी देखे, जिनमें से कुछ के साथ मिथुन की बहन छेड़खानी कर रही थी, और डरी हुई लड़कियों को देखा जो दूर के दरवाजों से मृत आँखों से बाहर देख रही थीं। फिलहाल, उसने बाद में इससे निपटने का फैसला किया, अभी वह बाहर जाकर अपने पति की तलाश करना चाहती थी, लेकिन जैसे ही वह सीढ़ी पर पहुंची, एक आदमी ने उसे पीछे से पकड़ लिया। परमिता ने विरोध किया और गुहार लगाई लेकिन उस आदमी ने उसे जाने नहीं दिया। वह रोती रही और चिल्लाती रही कि उसे अपने पति को खोजने के लिए बाहर जाने दिया जाए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसके बाद वह दौड़कर मिथुन की बहन के पास गई और अपना हाल बताया। महिला यह कहकर हंस पड़ी और कहा की **वह मिथुन की बहन नहीं है और न ही मिथुन, मिथुन है। वह एक दलाल था जो शादी के बहाने लड़कियों को फँसाता फिर उन्हें वेश्यालय में बेचता था। वह उस वेश्यालय की मालकिन थी और परमिता अब उसकी हो गई थी।** परमिता को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह क्या सुन रही है। उसके जीवन का पहला प्यार उसे कैसे धोखा दे सकता है? उसके साथ ऐसा कैसे हो सकता है? वह हमेशा एक अच्छी लड़की रही है; फिर उसके साथ ऐसा क्यों हुआ? इन सभी विचारों के साथ जो उसके दिमाग में चल रहे थे, उसने अपनी आँखें बंद होती पाई, उसे उसी आदमी द्वारा एक कमरे में घसीटा जा रहा था, जिसने उसे सीढ़ियों पर पकड़ लिया था...

चर्चा के बिंदु:

- **परमिता कौन थी?**
- **उसके माता-पिता कैसे थें?**
- **उसके परिवार की आर्थिक स्थिति कैसी थी?**
- **उसे स्कूल जाना क्यों पसंद था?**
- **महामारी के कारण क्या हुआ?**
- **उसकी माँ ने उसे फ़ोन देकर सरप्राइज क्यों दिया?**
- **परमिता ने सरप्राइज़ के बदले क्या करने का फैसला किया? एक हफ्ते के अंदर वो क्यों बदल गई?**
- **परमिता और मिथुन कैसे मिले?**
- **परमिता ने मिथुन के साथ भागने का फैसला क्यों किया?**
- **कहानी के अंत तक हमें पता चलता है कि मिथुन एक दलाल था और उसने दूसरी लड़कियों के साथ भी ऐसा ही किया है। उन चीजों की सूची बनाएँ जो मिथुन, परमिता का विश्वास जीतने के लिए करता है।**
- **दिल्ली में क्या हुआ?**
- **अंत में, परमिता सोचती है कि उसके साथ ऐसी भयानक चीजें क्यों हुईं? वह हमेशा एक अच्छी लड़की रही है। ईमानदारी से सोच कर बताएँ, अगर एक लड़की एक प्यार करने वाले परिवार के बावजूद लड़के के साथ भाग जाने का फैसला करती है और हम बाद में लड़के द्वारा उसको धोखा देने के बारे में सुनते हैं, तो हमारी सामान्य प्रतिक्रिया कैसी होती है? क्या हमें लड़की के प्रति सहानुभूति होती है या फिर हमें लगता है कि वह इसी योग्य है क्योंकि उसने अपने माता-पिता को धोखा दिया? क्या आप उसे बचाने के लिए अपने सभी संसाधनों का उपयोग करते या अपने कर्मों के फल भोगने के लिए उसे छोड़ देते?**
- **यदि आप परमिता के स्थान पर होते, यह जानने के बाद कि आपके साथी ने आपको इस तरह धोखा दिया है, तो आपने अपने जीवन से, भगवान से या अपने माता-पिता से, क्या उम्मीद की होती?**
- **परमिता जैसी लड़कियों के प्रति अधिक सहानुभूति और कम निर्णायक होने के लिए हम क्या कर सकते हैं?**

प्यार प्यार होता है

- सुश्री कविता कंवर

एक ही पड़ोस में पली-बढ़ी, एक ही स्कूल में पढ़ती, एक ही बस में स्कूल जाती, एक ही फ्रेंड सर्कल और एक ही महीने और एक ही साल पैदा हुई रानी और श्रीजा अविभाज्य थे!

हालाँकि वे हमेशा एक साथ पाए जाते थे, वे दोनों अलग-अलग व्यक्तित्व के साथ बड़े हो रहे थे – श्रीजा को अपनी माँ का अंदाज बहुत अच्छा लगता था। उनकी तरह दिखने के लिए वह उन्हीं की तरह अपने बालों को लंबा रखने की कोशिश करती और बालों को एक ऊँचे जूड़े में बांध कर रखती; चाहे वह किसी भी पोशाक में हो, दुपट्टा ओढ़ती; अपनी माँ की तरह सैंडल भी पहनती थी। दूसरी ओर रानी अपने बालों को छोटा रखती और टी-शर्ट के साथ शॉर्ट्स या जींस पहनना पसंद करती थी। दोनों माँ दुर्गा के प्रबल अनुयायी थे। दुर्गा पूजा के दौरान दोनों उत्सव के लिए धन जुटाने के लिए अपनी कॉलोनी की पूजा समिति की सक्रिय रूप से मदद करतीं और उसके बाद होने वाले हर धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम में पूरे दिल से भाग लेती थीं।

जैसे-जैसे दोनों लड़कियाँ युवा और सुंदर किशोरियों में विकसित होने लगीं, उन्होंने अक्सर सुना कि कैसे उनके दोस्तों ने अपने प्यार के बारे में बात करना शुरू किया, कि कैसे जब उन्होंने अपने किसी खास को देखा तो उनके पेट में गुदगुदी हुई। उन्होंने अपने अलग और अजीब सी भावनाएँ महसूस करने के बारे में बताया जैसे जब उन्होंने किसी विशेष लड़के को देखा तो कैसे उनका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। रानी और श्रीजा को ये सारी बातचीत थोड़ी अजीब लगी। उन्होंने कभी किसी लड़के की उपस्थिति में ऐसा महसूस नहीं किया, लेकिन हाँ, इनमें से कुछ परिचित सा लग रहा था। रानी और श्रीजा दोनों ने एक-दूसरे के साथ ऐसा महसूस किया था - जब वे एक-दूसरे के साथ होते तो उनका दिल भी कभी तेज़ धड़कने लगता, दिमाग काम करना बंद कर देता और वे जानती थीं कि वे क्या कहना चाहती हैं लेकिन मुश्किल से ही कह पाती, एक-दूसरे के स्पर्श से उनके रोएँ खड़े हो जाते, और एक दूसरे का साथ पाकर वे एक दूसरे के सर्वश्रेष्ठ रूप को सामने लाते थे! हालाँकि, यह जानते हुए कि उनका लगभग हर दूसरा दोस्त लड़कों पर अपना दिल हार रहा है, उन्हें यह अजीब लगा कि वे अकेले ही थे जिन्हें एक लड़की पर प्यार आ रहा था। इस डर से कि उनके दोस्त उन पर हँसेंगे, दोनों ने इस बारे में बात करने से परहेज किया। चूंकि श्रीजा और रानी, दोनों ने इस बारे में एक-दूसरे से भी बात नहीं की थी, इसलिए उन्हें इस बात की चिंता सता रही थी कि क्या होगा अगर उनकी सबसे अच्छी दोस्त ने उनसे बात करना बंद कर दिया। ठीक इसी डर के साथ, श्रीजा और रानी दोनों अपने-अपने में रहने लगीं। दोनों लड़कियां अपने ख्यालों में खोई रहतीं, दोनों का मिलना-जुलना हमेशा के मुकाबले थोड़ा कम होने लगा था और दोस्तों के साथ खेलना भी आमतौर के मुकाबले कम हो गया था।

एक दिन, जब श्रीजा और रानी दोनों ने अपनी ट्यूशन समाप्त की और वापस घर जा रहे थे, दोनों चुपचाप वापस चलते रहे, जब तक कि रानी ने श्रीजा से पूछा “कैसी हो तुम?” श्रीजा अपने मन के विचारों, हर भ्रम और उथल-पुथल को बताने के लिए बेचैन थी, जिसका वह इन दिनों सामना कर रही थी, लेकिन रानी को खोने के डर से, उसने बातचीत के अधिकांश भाग के संक्षिप्त और सामान्य उत्तर दिए। रानी, जो खुद थोड़ा उदास महसूस कर रही थी, उसे इस बात का बुरा लगा कि अपनी उलझनों में व्यस्त, उसने श्रीजा को वो सहारा और समय नहीं दिया जिसकी उसे जरूरत हो सकती थी! अपने संघर्षों को एक तरफ रखते हुए, उसने आखिरकार श्रीजा से पूछा कि वह वास्तव में कैसी थी? शुरुआत में श्रीजा झिझकी, लेकिन आखिरकार वह फूट-फूट कर रोने लगी। रानी चिंतित हो गई और उसे अपना समय लेने के लिए कहा। धीरे-धीरे, श्रीजा ने इस बारे में बताया कि कैसे वह भ्रमित महसूस कर रही थी कि उसके सभी दोस्तों को विपरीत लिंग के लोगों पर दिल आ रहा था, लेकिन

वह रानी के लिए बिल्कुल वैसा ही महसूस कर रही थी। वह यह सब अपने दोस्तों के साथ साझा करने से डरती थी क्योंकि उसे डर था कि उसका सब मज़ाक उड़ाएंगे और शायद कोई उससे दोस्ती भी न रखना चाहें। रानी का दिल धड़क उठा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह क्या सुन रही है! वह खुशी से उछल पड़ी और श्रीजा को कसकर गले से लगा लिया और कहा, "हम दोनों एक दूसरे के लिए ही बने हैं!" रानी ने बताया कि वह भी श्रीजा के लिए बिल्कुल वैसा ही महसूस करती है। एक-दूसरे से सांत्वना और समर्थन पाकर, दोनों लड़कियाँ अपने हंसमुख स्वभाव में वापस आ गईं। जैसे-जैसे साल बीतते गए, वे दोनों अपने अलग-अलग करियर की राह पर चलने के लिए अलग-अलग शहरों में गई लेकिन उनका प्यार वैसा का वैसा ही रहा। बेशक, ऐसे लड़ाई-झगड़ों के भी दिन होते थे जब वे एक-दूसरे से बात नहीं करते थे, लेकिन कैसे भी उतार-चढ़ाव हों, जीवन का बहुत समय, प्यार और दोस्ती के बहुत वर्ष, उन्होंने एक साथ व्यतीत किया था, और वे यह भी जानते थे कि कोई और उन्हें इस तरह से प्यार नहीं कर सकता या इस प्रकार से उन्हें देख या उनका समर्थन नहीं कर सकता था जैसे वे एक-दूसरे के लिए करते हैं। जैसे ही उनके परिवारों ने अच्छे वर खोजने के इरादे से उनकी शादी के बारे में बात करना शुरू किया, उन्हें लगा कि अपने परिवारों को अपने बारे में बताने का समय अब आ गया है।

श्रीजा और रानी ने उस वर्ष दुर्गा पूजा के लिए घर आने का फैसला किया। उन्होंने दोनों परिवारों को साथ लाने के लिए रात्रिभोज की योजना बनाई और जब सभी लोग साथ बैठ चुके थे, और साथ में एक अच्छा समय बिता रहे थे, श्रीजा और रानी ने घबराते हुए बताया कि कैसे वे दोनों हमेशा से ही एक दूसरे से प्यार करते हैं, और अब जब सभी लोग उनकी शादी कराना चाहते हैं तो वो सबको ये बताना चाहतीं हैं कि वो दोनों एक दूसरे के साथ ही रहना चाहती हैं। जैसे ही यह वाक्य समाप्त हुआ, कमरे में सन्नाटा छा गया। श्रीजा और रानी को नहीं पता था कि क्या उम्मीद की जाए, उनकी आँखें फर्श से चिपकी हुई थीं, लेकिन उन्हें यह भी यकीन था कि वे गलत नहीं हैं। उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया था। उन्हें पता था कि कैसे उनके परिवार बहुत रूढ़िवादी हैं और इस घोषणा से उन्हें दुख हुआ होगा, लेकिन अपनी सच्चाई को साझा न करने से, वे अपने साथ, एक-दूसरे के साथ, अपने परिवारों के साथ और उन लोगों के साथ जिनसे उनकी शादी होती, उन सभी के साथ अन्याय करते।

उनके परिवारजन निश्चित रूप से इस तरह की घोषणा की उम्मीद नहीं कर रहे थे! उन्होंने अपनी बेटियों को उनके साथ अच्छी तरह से मेल खाने वाले दूल्हे के साथ सबसे भव्य शादी का उपहार देने के लिए अपने पूरे जीवनकाल में पैसे सँजोए थे, लेकिन यहाँ उनकी बेटियाँ उन्हें बता रहीं थीं कि कोई दूल्हा नहीं होगा। जिस दौरान हर कोई यह समझने की कोशिश कर रहा था कि क्या हुआ है, रानी के दादा उसके पास गए, अपनी बाहें खोली और कहा "तो इसका मतलब है, हमें तुम्हारी विदाई करने की ज़रूरत नहीं है?" रानी को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ! उसने उन्हें कसकर गले से लगा लिया। स्वीकृति का यह पहला कदम था जो दोनों परिवारों को उत्सव के माहौल में वापस लाने के लिए काफी था। उनकी बेटियों ने एक-दूसरे को जीवन साथी चुना था! और निश्चित रूप से, यह अजीब है, वे किसी भी समलैंगिक जोड़े के बारे में नहीं जानते थे, लेकिन वे अपनी बेटियों को जानते हैं और अगर उनकी बेटियों ने एक-दूसरे को अपने जीवन साथी के रूप में चुना है, तो परिवार को शिकायत करने के लिए कुछ भी क्यों होता!

रात के खाने के दौरान परिवार यह जानना चाहता था कि कैसे-क्या हुआ था, वे कैसे जानते थे कि वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं और उससे पहले और बाद में जो कुछ भी हुआ! रानी और श्रीजा ने वह हर बात बताई जो उन्होंने पिछले एक दशक में महसूस किया, कि कैसे वे एक साथ रहे हैं, विशेष रूप से अलग और भ्रमित महसूस करने के बारे में, लोगों की उनके बारे में धारणा

बना लेने का डर, सब कुछ! श्रीजा की माँ ने चुपचाप अपनी कुर्सी पीछे की , श्रीजा और रानी के पास गईं, उन दोनों के माथे को चूमा, फिर उन्हें धीरे से गले लगाया और कहा, "मुझे दुख है कि तुम दोनों ने हमारे साथ यह सब कुछ बताने में सुरक्षित महसूस नहीं किया। तुम दोनों अजीब नहीं हो। तुम दोनों सामान्य हो। तुम्हारा प्यार उतना ही मान्य और महत्वपूर्ण है जितना कि एक लड़की और एक लड़के के बीच।"

चर्चा के बिंदु:

- कौन हैं रानी और श्रीजा? क्या वे किसी भी अन्य लड़कियों की तरह लगते हैं जिन्हें आप जानते हों?
- बचपन में उनका रिश्ता कैसा था?
- किशोर होने पर दोनों लड़कियों को अजीब और भ्रमित क्यों महसूस हुआ? उन्होंने इसके बारे में क्या किया?
- श्रीजा और रानी ने एक दूसरे से अपने भ्रम के बारे में बात क्यों नहीं की?
- क्या हुआ जब श्रीजा और रानी ने आखिरकार एक-दूसरे से अपने दिल की बात बताई?
- श्रीजा और रानी का परिवार किससे उनकी शादी करवाना चाहता था? तब दोनों लड़कियों ने क्या किया?
- श्रीजा और रानी को अपने परिवार को अपनी सच्चाई बताकर कैसा लगा? उनके दिमाग में क्या विचार चल रहे थे?
- इस पर उनके परिवारों की क्या प्रतिक्रिया थी?
- श्रीजा और रानी के साथ क्या होता अगर उनके परिवारों ने उनके रिश्ते का विरोध किया होता?
- अगर आप श्रीजा या रानी होते और आपका परिवार चाहता था कि आप किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करें जिसके साथ आप सहज नहीं हैं तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या आप चाहेंगे की आपकी बात सुनी और समझी जाए या फिर ये की समाज को जो सही लगता है वैसा करने के लिए आपको मजबूर किया जाए?
- हमारे समाज के प्रेम और रिश्ते के विचार किस प्रकार लोगों के जीवन को कठिन बनाते हैं, उदाहरण के साथ बताएँ।

स्वर्ग में बना हुआ

-सुश्री बंदना मंडल

अनम का जन्म एक संपन्न परिवार में हुआ था, जहाँ उसे एक अच्छे स्थानीय स्कूल में भेजा गया था, लेकिन उसे आगे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया गया। उसके परिवार में लड़कियाँ अपने जीवन में करियर बनाने के लिए शिक्षित नहीं होती हैं, वे बस इतना पढ़ती हैं कि वे गिनती करने, पढ़ने और लिखने में सक्षम हो सकें। उसके परिवार ने उसे इस समझ के साथ स्नातक में एक सामान्य डिग्री हासिल करने की अनुमति दी कि उसके बाद वह पढ़ाई बंद कर देगी और जैसे ही परिवार को एक अच्छा रिश्ता मिलेगा, वह शादी कर लेगी।

अनम एक खूबसूरत युवा लड़की थी, बिल्कुल वैसी जैसे समाज स्वीकार करता है। वह पतली थी, पर दुबली नहीं थी, एक सुडौल आदमी के बगल में अच्छी दिखने के लिए पर्याप्त लंबी थी, लेकिन इतनी लंबी भी नहीं कि आदमी को असहज महसूस हो। उसके लंबे बाल और खूबसूरत गेहुंआ त्वचा थी। इस प्रकार, उसके परिवार को उसके लिए वर खोजने में बहुत समय नहीं लगा। दूल्हा सरकारी कर्मचारी था। उसके पिता भी एक सरकारी कर्मचारी थे। उनका कोलकाता शहर में एक बड़ा घर और पैतृक गांव में एक एकड़ जमीन थी। और सबसे अच्छी बात यह थी कि उन्होंने कोई दहेज नहीं मांगा! 'एक सरकारी कर्मचारी को ढूंढ़ना जो केवल एक जीवन साथी चाहता था और पैसे निकलने के लिए भूखा नहीं था', अनम के माता-पिता को लगा जैसे उनकी लोटरी लग गया हो!

पल भर में सारे इंतजाम हो गए और दो महीने के अंदर ही अनम की शादी हो गई।

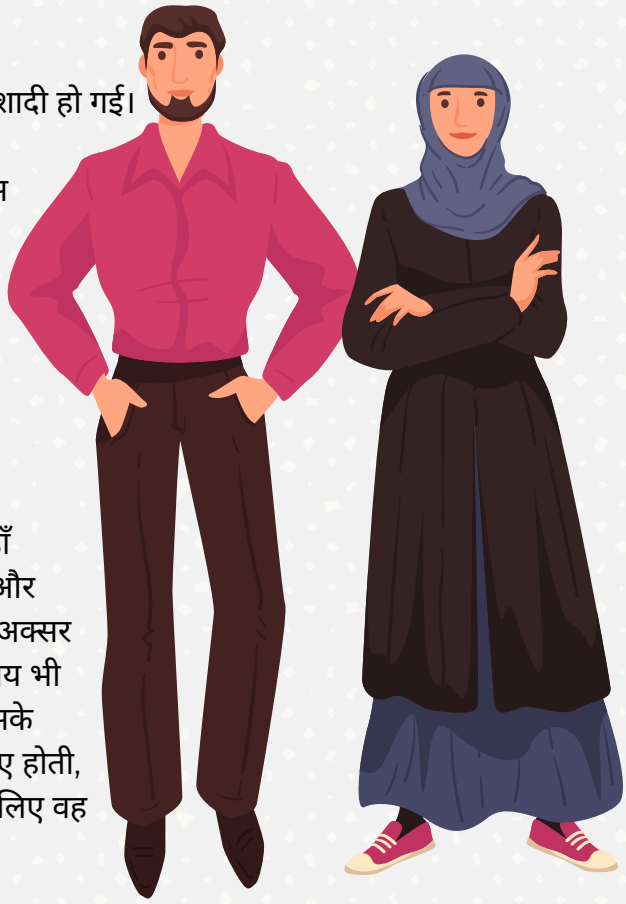

अनम की शादी-शुदा जिंदगी स्वर्ग जैसी लग रही थी। उसे अपनी सास में एक प्यारी माँ, अपने ससुर में एक प्यार करने वाला पिता मिला था और उसका पति उसका सबसे अच्छा दोस्त था जैसा पहले कभी कोई भी दोस्त नहीं रहा उसका। दुर्भाग्य से, यह आनंद वैसे ही उसके जीवन से दूर हो गया जैसे कि उसके हाथों की मेंहदी!

कुछ ही हफ़्तों में उसकी सास को उम्मीद थी कि वह घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ संभाल लेगी। खाने की आदतें भी यहाँ उसके मायके की तुलना में भिन्न थीं। मायके में, सब लोग सब कुछ खाते थे। लेकिन यहाँ उसकी सास बिना प्याज और लहसुन के शाकाहारी खाना खाती थी और उसके ससुर को मसालेदार खाना पसंद था, खासकर माँसाहारी। वह अक्सर खुद को हर दिन दो तरह का खाना बनाती हुई पाती थी। चाय का समय भी इतना आसान नहीं था। उसकी सास केवल दूध की चाय पीती थी, उसके ससुर को काली चाय पीना पसंद था और उसके पति को कॉफी चाहिए होती, और वे सभी हर शाम एक साथ चाय का समय बिताना चाहते थे, इसलिए वह हर दिन तीन अलग-अलग पेय बनाने में व्यस्त होती थी।

उसके पति हामिद के साथ भी चीजें उतनी ही खराब थीं। शुरुआत में वह उसके सबसे अच्छे दोस्त की तरह था और चाहता था कि वह हर दिन उसके साथ सब कुछ साझा करे, लेकिन अब वह जल्द ही चिड़चिड़ा हो जाता और उसे अपने परिवार के खिलाफ हमेशा शिकायत करने का आरोप लगता। उसने कार्यालय में ओवरटाइम का काम लेना शुरू कर दिया और देर से आने लगा और अक्सर काम के लिए यात्रा भी करता था। यात्रा के दौरान, घर पर उसके कॉल सामान्य जानकारी के लिए थे। वह अपनी पत्नी की तुलना में अपने माता-पिता से बात करने में अधिक समय व्यतीत करता था। अनामिका को शक होने लगा था कि शायद उसके पति का किसी और महिला के साथ चक्कर चल रहा है। उसने उसे देर रात और कभी-कभी जब वह बाथरूम में होता था तब फोन पर बात करते सुना था। उसने इस बारे में हामिद से बात करने की कोशिश की, लेकिन वह गुस्से

से चिल्लाने लगता। अनम ने अपने माता-पिता के साथ अपनी स्थिति साझा करने पर विचार किया था, लेकिन वे उसके ससुराल की बनाई पहली धारणा से इतने अंधे हो गए थे कि यह भी नहीं सोचा कि उनकी बेटी दुखी है। कई बार जब उन्हें लगा कि वह उदास लग रही है, उन्होंने उसे चीजों से उबरने के लिए और इसके बजाय अब गर्भवती होने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया।जैसे-जैसे दिन बीतते गए, चीजें और खराब होती गईं। उसका पति कभी घर पर नहीं होता था और उसके सास-ससुर लगातार उसके हर काम में नुक्स निकालते थे और उस पर और काम का बोझ डालते थे। इन सारी बातों ने भी पड़ोसियों और अन्य रिश्तेदारों को उसे गर्भवती होने के लिए परेशान करने से नहीं रोका। बहुत जल्द, उसके ससुराल वाले भी उसे एक बच्चे के लिए तंग करने में शामिल हो गए। हताशा में अनम ने उन्हें पलट कर जवाब देते हुए कहा, “आपका बेटा कभी घर नहीं आता और आपको पता है। मैं अकेले बच्चा कैसे पैदा कर सकती हूँ?” अचंभित होकर, उसके माता-पिता ने और अधिक घृणा और क्रोध के साथ जवाब दिया कि, "यदि तुम एक अच्छी पत्नी होती, तो तुम्हें पता होता कि अपने पति को अपने पास वापस कैसे लाया जाता है।" उस रात पहली बार अनम को हामिद ने पीटा था। वह अपने माता-पिता के साथ उसके दुर्व्यवहार के कारण गुस्सा था।

तीन साल बीत गए, ज्यादा कुछ नहीं बदला था। अनम अपने ससुराल वालों से बहुत कम उम्मीद करती रही और दुनिया उसे एक बच्चे के लिए तंग करती रही। कोई यह विश्वास नहीं करना चाहता था कि यह अब परिवार नियोजन के बारे में नहीं रहा। उन्हें लगता था कि अनम के साथ कुछ गड़बड़ है, इसलिए अलग-अलग रिश्तेदार उसे परीक्षण और आशीर्वाद लेने के लिए विभिन्न स्त्री रोग विशेषज्ञों और पुजारियों के पास ले जाने लगे। पुजारियों का कोई भी आशीर्वाद काम नहीं आया। टेस्ट के बाद टेस्ट होते रहे और अनम को कहा गया कि वह बांझ हैं। अनम इन परीक्षणों में से एक को खुद पढ़ना चाहती थी जिससे वह जान सके कि उसमें क्या लिखा गया था, लेकिन हामिद और उसके माता-पिता के पास हमेशा कोई न कोई बहाना होता उसे रिपोर्ट न दिखाने के लिए। अनम को लगा कि कुछ तो गड़बड़ है। एक बार, उसने अपनी माँ को कोलकाता बुलाया और फिर उनके साथ स्त्री रोग विशेषज्ञ के पास गई। उसने अपने ससुराल वालों को बताया कि वह अपनी माँ को पास के मस्जिद में ले जा रही है और घर से निकल गई। वह अपने प्रजनन परीक्षण के लिए डॉक्टर के पास गई। रिपोर्ट के बारे में सूचित करने के लिए डॉक्टर को अनम की माँ का फोन नंबर दिया गया था। अगले दिन उसे पता चला कि उसकी रिपोर्ट अच्छी है और वह एक बच्चे को जन्म देने के लिए सक्षम है। अनम को तुरंत समझ आ गया कि उसके ससुराल वालों ने उसे कभी रिपोर्ट क्यों नहीं दिखाई और यह भी कि केवल उसका परीक्षण क्यों किया जा रहा था और हामिद का नहीं। एक बार जब उन्होंने उसकी बात सुनी और हामिद का परीक्षण कराया, तो उसके ससुराल वालों ने कहा कि हामिद की रिपोर्ट पाज़िटिव थी और अनम की नेगेटिव।

अनम ने एक योजना सोचा जो उसे इस स्थिति से बाहर निकलने में मदद करेगी और उसके माता-पिता को भी दिखाएगी कि हामिद और उसका परिवार कैसा था। उसने अपने माता-पिता को उसे वापस घर ले जाने के लिए आमंत्रित किया। उस शाम हामिद, उसके माता-पिता और अनम के माता-पिता सभी एक साथ चाय के लिए बैठे। अनम गायब थी। थोड़ी देर बाद, अनम दौड़कर कमरे में आती है और खुशखबरी सुनाती है कि वह गर्भवती है। उसके माता-पिता खुशी से उछल पड़े लेकिन हामिद के माता-पिता का मुँह उतर गया और हामिद विशेष रूप से उग्र था। अनम अपनी खुशी बाँटने के लिए हामिद के पास गई, लेकिन उसने अपनी कॉफी का प्याला फेंक दिया और गुस्से में पूछा "किसका बच्चा है?"

अनम ने सबके सामने उसे गले से लगा लिया और कहा, “और किसका?”

हामिद ने उसे धक्का दिया और गैर मर्द के साथ सम्बन्ध का आरोप लगाते हुए सबके सामने थप्पड़ मार दिया। अनम रोती रही और विनती करती रही कि यह सब झूठ है और वह वास्तव में उसके प्रति वफादार रही है। कुछ देर तक ऐसा ही चलता रहा जहाँ हामिद सच बोलने के लिए अनम को बहलाता-फुसलाता रहा और अनम कहती रही कि यह उसका बच्चा है। गुस्से में हामिद ने अनम को सोफे पर धकेल दिया और चिल्लाया कि "यह मेरा बच्चा नहीं हो सकता क्योंकि मैं बांझ हूं।"

कमरे में सन्नाटा छा गया। हामिद के माता-पिता का सिर शर्म से झुक गया था और अनम के माता-पिता यह नहीं समझ पा रहे थे कि क्या हो रहा है। अनम वहीं खड़ी रही, उसके गालों पर आंसू बह रहे थे। बरसों के भद्दी टिप्पणियाँ, डॉक्टर के चक्कर, पुजारियों का आशीर्वाद और ससुराल वालों के अपमानजनक ताने उसके दिमाग में दौड़ते रहे। आज, वह आखिरकार खुद को

और अपने माता-पिता को साबित कर पाई कि यह वास्तव में हामिद की गलती थी। हामिद उसके पास गया और सच्चाई के लिए उसे फिर से हिलाया। अनम ने सख्ती से कहा, "मैं प्रेग्नेंट नहीं हूं। मैं चाहती थी कि तुम सच बोलो।" हामिद का चेहरा लाल पड़ गया था। उस रात अनम अपने माता-पिता के साथ चली गई। हालांकि, उसकी उम्मीद के विपरीत, उसके माता-पिता ने उसे लंबे समय तक सांत्वना नहीं दी। केवल दो दिनों में उन्होंने उससे पूछा कि उसने अपने पति के साथ वापस जाने और चीजों को सुलझाने की क्या योजना बनाई है। उन्होंने कहा कि जोड़ियाँ स्वर्ग में बनती हैं और शादियाँ जीवन भर चलने के लिए होती हैं। तलाक कोई विकल्प नहीं था, उसे अपने असली परिवार में वापस जाने की जरूरत थी। अनम ने अपनी पूरी ज़िन्दगी दूसरों के हिसाब से जी थी। अब बहुत हो गया। उसने पलट कर कहा कि **"जोड़ियाँ आसमान में बनती है। सही कहा आप लोगों ने। ऊपर वाले ने मेरे आत्मा कि जोड़ी मेरे शरीर के साथ बना कर भेजा है और अब मैं इस जोड़ी को सलामत रखने का वडा करती हूँ।"** बस मुझे यहाँ कुछ और हफ्तों के लिए रहने दें, मैं अपने लिए पैसे कमाने और अपनी शर्तों पर खुद से जीने के तरीके ढूँढूँगी।" उसके माता-पिता ने उसे लोगों और जरूरतों और समाज के बारे में बहुत-सी बातें समझाने की कोशिश की, लेकिन एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति के रास्ते में आखिर कौन आ सकता है?

चर्चा के बिंदु:

- **अनम कौन थी?**
- **अनम के परिवार को हामिद और उसका परिवार क्यों पसंद आया?**
- **जब अनम और हामिद की नई-नई शादी थी तो हालात कैसे थे?**
- **उनकी शादी के हफ्तों के भीतर चीजें कैसे बदल गईं?**
- **उनकी शादी में क्या गलत था?**
- **अनम अपने माता-पिता को अपने हालात के बारे में क्यों नहीं बता सकी?**
- **सिर्फ अनम का ही टेस्ट क्यों किया जा रहा था, हामिद का क्यों नहीं?**
- **हमारे देश में, जब एक दंपत्ति बच्चा पैदा नहीं कर सकता, तो दोनों में से किसे दोष दिया जाता है? पुरुषों को दोष क्यों नहीं दिया जाता या उन्हें परीक्षण के लिए उपस्थित होने के लिए मजबूर क्यों नहीं किया जाता है?**
- **अनम ने अपनी सच्चाई दिखने के लिए क्या योजना बनायीं और उसका क्या परिणाम रहा?**
- **अब, कहानी के अंत में, हामिद के परिवार द्वारा दहेज न लेने के बारे में आप क्या सोचते हैं?**
- **क्या आपने अपने आस-पड़ोस में ऐसी ही कहानियाँ सुनी या देखी हैं? उनकी कहानी का अंत कैसे हुआ?**
- **जब अनम के माता-पिता ने उसके ससुराल वालों का सच जान लिया, तब भी वे उसे वापस भेजने कि ज़िद्द क्यों कर रहे थे?**
- **भारत में हम अविवाहित या तलाकशुदा महिलाओं को किस नज़र से देखते हैं? क्या आप इससे सहमत हैं?**
- **अनम किस जोड़ी को स्वर्ग में बना हुआ कहती है और वह इसके साथ क्या करना चाहती है?**
- **अंत में अनम के निश्चय के बारे में आप क्या महसूस करते हैं?**
- **अगर आप अनम की जगह होते तो क्या करते?**

मिष्टू- बालिका विद्यालय का लड़का...

- सुश्री सुसोमा दास

मुखर्जी परिवार की तीन बेटियों में मिष्टू सबसे छोटी थी। मिस्टर एंड मिसेज मुखर्जी हमेशा एक बेटे की कामना करते थे। उन्होंने शुरू में एक ही बच्चे की योजना बनाई थी, लेकिन एक बेटे की चाहत के कारण उन्हें दो और बच्चे हो गए। एक बड़े परिवार के वित्तीय प्रभावों के बारे में सोचते हुए, दंपति ने और बच्चे पैदा करने की कोशिश नहीं करने का फैसला किया, बल्कि अपनी सबसे छोटी बेटी को ही अपने बेटे के रूप में पाला।

शुरू से ही मिष्टू को कार और बंदूक जैसे खिलौने दिए जाते थे, जबकि उसकी बहनों को खेलने के लिए गुड़िया उपहार में दी जाती थीं। जहाँ उसकी बहनों को नृत्य और संगीत कला प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता था, वहीं मिष्टू को स्थानीय कराटे और फुटबॉल क्लब में खेलने के लिए भेजा गया। उसके माता-पिता उसके बाल छोटे रखते थे और लगभग हमेशा उसके लिए लड़कों वाले कपड़े खरीदते थे। दूसरी ओर उसकी बहनों को लम्बे बाल रखने और रंगीन स्कर्ट और टॉप पहनने की अनुमति थी, जैसी उन्हें पसंद थी। मिष्टू को अपने माता-पिता से मिलने वाला विशेष ध्यान पसंद था, लेकिन वह हमेशा, अपनी माँ की तरह बिंदी लगाने के अवसरों की तलाश में रहती थी या अपनी बहनों के साथ गुड़िया खेलने के लिए, क्योंकि उसने लड़कियों को ऐसा करते देखा था और मिष्टू को पता था कि वह एक लड़की है। वह फ़ुटबॉल खेलना भी पसंद करती थी, लेकिन उसने महसूस किया कि वह उन लड़कों की तुलना में (जिनके साथ वह फ़ुटबॉल खेलती थी), अपनी बहनों की तरह अधिक थी। एक दिन, जब उसके माता-पिता किसी काम से बाहर गए थे, तो मिष्टू ने अपनी बहनों से कहा कि वे उसे एक सुंदर छोटी लड़की की तरह अपने कपड़े पहनाएं, जिस में झुमके, बिंदी और लड़की के जूते हों। जब उसकी बहन उसे तैयार कर रहीं थीं, उसके माता-पिता घर पहुंच गए। वो पूर्णरूप से भूल चुके थे की मिष्टू भी उनकी बेटी थी, उसके माता-पिता तीनों बच्चों पर चिल्लाए, विशेष रूप से दोनों बड़ी बहनों पर जो अपने भाई को लड़कियों की तरह तैयार कर रहीं थीं! उसके माता-पिता इस बात से भयभीत थे जैसे कि उनका सबसे बुरा डर सच हो गया था, कि उनका बेटा वास्तव में उनकी बेटी थी! इस घटना ने मिष्टू को भी डरा दिया था, लेकिन अब वह जानती थी कि वह एक लड़का है और उसे यह सोचना भी नहीं चाहिए की वो अपनी बहनों की तरह है!

मिष्टू और उसकी बहनों को एक ही स्कूल में भेजा गया था। यह चौथी कक्षा तक सहशिक्षा स्कूल था और उसके बाद सिर्फ लड़कियों का स्कूल था। स्कूल में पहले पाँच साल ठीक थे। मिष्टू के जैसे, कई अन्य लड़कियों के बाल छोटे थे, हालांकि उनके कारण सभी अलग थे - कुछ के छोटे बाल थे क्योंकि इसे प्रबंधित करना आसान था, कुछ के बाल खराब स्वास्थ्य के कारण और कुछ अन्य के छोटे बाल थे क्योंकि उनके माता-पिता को डर था कि उनकी बेटी के बालों में जूँ आ जाएगी। मिष्टू के बाल छोटे थे क्योंकि उसके माता-पिता ने उसे एक लड़के के रूप में पाला था और उनके शहर के लड़कों के बाल छोटे थे। जूनियर स्कूल में, सभी के पास समान स्कूल ड्रेस थी, लड़कियों और लड़कों के लिए अलग-अलग नहीं थी। साथ ही, जूनियर स्कूल में, सभी बच्चों के लिए एक ही शौचालयथा, इसलिए मिष्टू के लिए कुछ भी अलग नहीं था। समस्या तब शुरू हुई जब मिष्टू पाँचवीं कक्षा में पहुंची और उसने सीनियर स्कूल में कदम रखा।

पाँचवीं कक्षा के बाद लड़कियों को स्कूल जाने के लिए सलवार कमीज पहननी पड़ती थी, जिसे पहनने में मिष्टू की शुरू में दिलचस्पी थी, लेकिन उसके माता-पिता ने उसे हमेशा इनसे दूर रखा था। चूंकि वह शहर का सबसे अच्छा स्कूल था, इसलिए

उसके माता-पिता ने उसकी चिंताओं को खारिज कर दिया और उसे वहाँ पढ़ाई जारी रखने के लिए मजबूर किया। सलवार कमीज में स्कूल जाना मिष्टू के लिए एक बड़ा संघर्ष था और उसे अभी भी बचपन में एक लड़की की तरह कपड़े पहनने का दर्दनाक अनुभव महसूस होता था। मिष्टू दुखी थी। स्कूल में उसके कपड़ों के कारण उसकी बेचैनी स्पष्ट दिखती थी; जहाँ अन्य लड़कियाँ हर बार उसे देखते ही "जैंट्स" कहकर चिढ़ाती थी। खैर, उस स्कूल की सभी लड़कियाँ उतनी बुरी नहीं थीं, उनमें से कुछ ने तो मिष्टू के प्रति प्यार और आकर्षण भी महसूस किया क्योंकि एक बालिका विद्यालय में वह एक अकेला लड़का प्रतीत होता था जिसके करीब वो हो सकती थीं। उन्होंने उसे अपना बहुत समय दिया और उपहारों से भी नहलाया, लेकिन इससे भी मिष्टू असहज हो गई, क्योंकि वह जानती थी कि वह एक लड़का नहीं है। इस स्कूल में बिताया प्रत्येक दिन उसे अंधकार की तरफ धकेल रहा था क्योंकि वह इस उलझन में रहती थी कि वह कौन है? वह बहुत छोटी उम्र से जानती थी कि वह अपनी बहनों की तरह खेलना और कपड़े पहनना पसंद करती थी, लेकिन उसके माता-पिता ने उसे हमेशा लड़कों वाले काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। लड़कों की तरह उसे संबोधित किया जाता था और उसी तरह व्यवहार किया जाता था, लेकिन यहाँ वह एक लड़कियों के स्कूल में थी, जिसका मतलब था कि वह एक लड़की थी! कुछ लड़कियों ने उसे लड़का समझ के चिढ़ाया और कुछ ने उसे लड़का समझ के प्यार किया, लेकिन मिष्टू को पता था कि वह वास्तव में एक लड़की थी।

मिष्टू ने अपने माता-पिता से बात करने की कोशिश की, लेकिन वे उसे समझ नहीं पाए। जिस दौरान वे उसे लड़कियों के एक स्कूल में भेजना जारी रख रहे थे, उस समय भी वे मिष्टु को अपने बेटे के रूप में संबोधित करते थे और मिष्टू को पहले से कहीं ज्यादा अकेलापन और गलत समझे जाना महसूस होता रहा। इस दौरान मिष्टू की मुलाकात संजना से हुई, जो उन सभी लोगों में सबसे दयालु थी, जिन्हें मिष्टू जानती थी। संजना उसी कक्षा में पढ़ती थी जिस में मिष्टू थी। उसने अक्सर लंच ब्रेक के दौरान मिष्टू को कक्षा में अकेले बैठे देखा था और यह भी देखा था कि स्कूल में अन्य लड़कियों द्वारा उसे कैसे छेड़ा जाता है। हालाँकि, यह सुनिश्चित नहीं था कि वह किस प्रकार मदद कर सकती है, इसलिए संजना कभी भी मिष्टू के पास नहीं पहुंची थी। लेकिन, आज स्कूल में हद पार हो गई- कुछ लड़कियाँ उस शौचालय में घुस गईं जिसका इस्तेमाल मिष्टू कर रही थी, यह जांचने के लिए कि मिष्टू लड़की थी या लड़का! मिष्टू बहुत शर्मिंदा महसूस कर रही थी और रो रही थी। जब स्कूल खत्म हुआ, मिष्टू कमरे से बाहर निकलने वाली आखिरी लड़की थी और संजना भी उसके साथ इंतजार कर रही थी, सिर्फ अपनी पूरी कक्षा की ओर से माफी माँगने के लिए। इसका मिष्टू पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसके गालों पर चुपचाप आंसू बह रहे थे। संजना ने आज अपने दोस्त को अकेला नहीं छोड़ने और उसके साथ उसके घर तक चलने का फैसला किया। यह उनकी दोस्ती की शुरुआत थी।

अगले कुछ महीनों के भीतर मिष्टू ने संजना के साथ अपनी वास्तविकता साझा करने की कोशिश की कि कैसे वह एक लड़की थी और हमेशा से ही लड़की थ। उसके माता-पिता ने हमेशा उसे लड़के के तरह पाला पोसा लेकिन अचानक से एक लड़कियों के स्कूल में दाल दिया। वो न तो खुल कर लड़के के तरह रहना चाहती है और न ही उसे कोई पूरी तरीके से लड़की के तरह रहने देता है। **संजना ने यह सब समानुभूतिपूर्वक सुना और आखिर में सिर्फ यह कहा कि मिष्टू वास्तव में वही है जो वह महसूस करती है, विश्वास करती है और किस तरह से खुद को आईने में देखती है और कोई भी ये चीज उससे दूर नहीं ले सकता है। ऐसा नहीं था कि स्कूल की अन्य लड़कियों ने उसे धमकाना बंद कर दिया था और ऐसा भी नहीं था कि मिष्टू उस अपमान को भूल गई थी जिसका उसने उस दिन सामना किया था, लेकिन सिर्फ एक दोस्त का होना जो उसे उसी कि तरह देखता और सुनता हो, उससे मिष्टू को अपने होने का एहसास होता है।**

चर्चा के बिंदु:

- **मिष्टू कौन थी?**
- **उसे बेटे की तरह क्यों पाला गया?**
- **क्या हुआ जब एक दिन उसके माता-पिता घर से चले गए और वह अपनी बहन के साथ अकेली थी? इस घटना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा?**
- **मिष्टू शुरू से ही इसी स्कूल में पढ़ती थी। जूनियर स्कूल में उसे तंग क्यों नहीं किया गया?**
- **सीनियर स्कूल में कदम रखने के बाद मिष्टू को कैसा लगा? आपको क्या लगता है कि ऐसा क्यों हुआ?**
- **स्कूल में ऐसा क्या हुआ जिससे मिष्टू अपमानित महसूस कर रही थी?**
- **संजना मिष्टू के साथ अच्छी क्यों थी?**
- **संजना मिष्टू की मुश्किलें दूर नहीं कर पाई, फिर भी वह मिष्टू के लिए मददगार कैसे साबित हुई?**
- **मिष्टू एक महिला थी जो स्वयं को लड़की के रूप में ही देखती थी। उसे अभी भी जेंट्स क्यों कहा जाता था?**
- **किसी व्यक्ति पर परवरिश और सामजिक अनुकूलन का कितना प्रभाव पड़ता है? इसका उत्तर इस आधार पर दें कि मिष्टू का पालन-पोषण कैसे हुआ, उसकी बहनों की परवरिश कैसे हुई। यदि मिष्टू को गुड़िया के साथ खेलने की अनुमति दी जाती और अपनी बहेनो के तरह नृत्य या संगीत का प्रशिक्षण दिया जाता तो क्या वह अब भी भिन्न होती या अपनी बहनों जैसी ही होती?**(इस पर बातचीत के माध्यम से समझाएँ कि कैसे मिष्टू को खुद की पहचान को लेकर कोई उलझन नही थी, बल्कि यह उसके माता-पिता द्वारा उसे मजबूर किया गया था। मिष्टू एक ट्रांसजेंडर नहीं थी। उसकी पहचान में संघर्ष इस वजह से था कि उसके माता-पिता ने उसे हमेशा कैसे एक लड़के की तरह तैयार किया और उसे एक लड़के के रूप में संबोधित किया और उसे अपने बेटे के रूप में भी माना, जिसे उसकी बहनों की तुलना में अधिक स्वतंत्रता दी गई थी। अगर उसके माता-पिता ने उसे अपनी दो अन्य बहनों की तरह ही पाला होता, तो उसकी पहचान में यह संघर्ष नहीं उठता।)

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स के बारे में -

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स, बाल विवाह को समाप्त करने और लड़कियों को उनकी क्षमता को पूरा करने में सक्षम बनाने के लिए प्रतिबद्ध १०० से अधिक देशों के १५०० से अधिक नागरिक समाज संगठनों की वैश्विक साझेदारी है।

सदस्य पूरे अफ्रीका, एशिया, मध्य पूर्व, यूरोप और अमेरिका में स्थित हैं। हम सभी ऐसा विश्वास रखते हैं कि प्रत्येक लड़की को वह जीवन जीने का अधिकार है जिसे वह चुनती है और बाल विवाह को समाप्त करके, हम सभी के लिए एक सुरक्षित, स्वस्थ और अधिक समृद्ध भविष्य प्राप्त कर सकते हैं।

एक साथ मजबूत होकर, गर्ल्स नॉट ब्राइड्स सदस्य बाल विवाह को वैश्विक ध्यान में लाते हैं, इस बात की समझ बनाते हैं कि बाल विवाह को समाप्त करने के लिए क्या करना होगा, और उन कानूनों, नीतियों और कार्यक्रमों की मांग करते हैं जो लाखों लड़कियों के जीवन में बदलाव ला सकेंगे।

प्रोजेक्ट खेल के बारे में -

प्रोजेक्ट खेल, लखनऊ, भारत में स्थित एक अनूठी गैर-लाभकारी पहल है जो बच्चों को सशक्त बनाने की दिशा में काम करती है, और अधिक समान और समावेशी समाज का मार्ग प्रशस्त करती है। हम बच्चों को सूचित और लिंग-संवेदनशील नागरि, उनके समुदायों में नेता, सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्षम इंसान और भविष्य में उनके अवसरों के दायरे को व्यापक बनाने के लिए 21 वीं सदी के जीवन कौशल प्रदान करते हैं।

खेल की शक्ति का उपयोग करते हुए, हम सुरक्षित खेल स्थान बनाते हैं और खेल, कहानी, शिल्प, बालगीत और खेलों के माध्यम से समग्र, संवादात्मक और अनुभवात्मक सीखने के तरीकों को लागू करते हैं।

कहानीकार:
राजस्थान -
सुश्री मनोज कंवर, सुश्री जमना चौहान, सुश्री कविता धवलेशा, सुश्री कामिनी कुमारी, श्री हेमंत शर्मा, सुश्री नीलम गाँधी, सुश्री अनीता सेन, श्री मुनव्वर अब्दुल्ला, श्री दीपक शर्मा

झारखंड -
सुश्री मंजू कुमारी, सुश्री पूजा कुमारी, सुश्री सुषमा कुमारी, सुश्री जिया नाज़, श्री प्रदीप कुमार कोल, सुश्री किरण कुमारी

उत्तर प्रदेश -
सुश्री प्रीति, सुश्री प्रतिभा सिंह, सुश्री काजल, श्री मनजीत कन्नौजिया, मोहम्मद फ़राज़, सुश्री श्वेता खरवार, सुश्री रजनी सिंह, सुश्री अर्चना,सुश्री संजना चक्रवर्ती, श्री विक्रम नामदेव

पश्चिम बंगाल -
श्री सोमनाथ दास, श्री बिल्टू ढिबर, सुश्री सुष्मिता डे, सुश्री संचारी चक्रवर्ती, सुश्री रशीना खातून, श्री सुरोजीत सेन, श्री बिस्वजीत मुखर्जी, सुश्री कविता कंवर, सुश्री बंदना मंडल, सुश्री सुसोमा दास

कहानी चयन, संपादन और ई-बुक डिजाइन -
सुश्री अंगना प्रसाद